मध्यकालीन भारत का इतिहास

- अध्ययन की सुविधा के लिए मध्यकालीन भारत के इतिहास को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। जैसे–

मध्यकालीन भारत
(712 – 1707)

दिल्ली सल्तनत के पूर्व	दिल्ली सल्तनत	मुगल साम्राज्य
(702 – 1206)	(1206 – 1526)	(1526 – 1707)

- 712 AD में मुहम्मद–बिन–कासीम ने भारत (सिन्ध) पर आक्रमण किया, जिसके साथ मध्यकालीन भारत की शुरूआत हुई।
- भारत में राजनीतिक सत्ता को स्थापित करने का श्रेय **तुर्कों** को दिया गया है।
- **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत के साथ–साथ गुलाम वंश की स्थापना की थी।
- 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध के बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित करके लोदी वंश के साथ–साथ दिल्ली सल्तनत का भी अन्त कर दिया और मुगल वंश को स्थापित किया।

साहित्यिक स्रोत

- मध्यकालीन भारत की जानकारी के लिए साहित्यिक स्रोत एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसे दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–
- **सल्तनतकालीन ग्रंथ–**इसके अंतर्गत दिल्ली सल्तनत काल के पूर्व का काल और सल्तनत काल से संबंधित ग्रंथों को शामिल किया जाता है, जो निम्नलिखित है–

ग्रंथ का नाम	लेखक का नाम
चचनामा	मु. अली–बिन–अबु–बक्र–कुफी
किताब–उल–यामिनी	उत्बी
तारिख–ए–सुबुक्तगीत	बैहाकी
शाहनामा	फिरदौसी
किताब–एल–हिन्द	अलबरूनी
ताज–उल–मासिर	हसन निजामी
तबकात–ए–नासिरी	मिन्हाज–एस–सिराज
रेहला	इब्नबतूता
तारिख–ए–फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी
फतवाँ–ए–जहाँदारी	जियाउद्दीन बरनी
फतूहात–ए–फिरोजशाही	फिरोज तुगलक
तारिख–ए–मुबारकशाही	याहिया–बिन–अहमद–सरहिन्दी

- **मुगलकालीन ग्रंथ–**मुगलकाल के बारे में सम्पूर्ण जानकारी के लिए कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों का नाम निम्नलिखित है

गंथ का नाम	लेखक का ना
तुजुक–ए–बाबरी / बाबरनामा	बाबर
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
अकबरनामा	अबुल–फजल
मुन्तखब–उल–तवारिख	बदायूँनी
तुजुक–ए–जहाँगिरी	जहाँगीर
शाहजहाँनामा	इनायत खाँ
पादशाहनामा	हामीद लाहौरी
आलमगीरनामा	कासिम सिराजी
मुन्तखब–एल–लुबाब	खफी खाँ
मासिर–ए–आलमगिरी	साकी मुस्तैद खाँ
मज्म–उल–बहरीन	दाराशिकोह

- **चचनामा–**इस ग्रंथ से स्पष्ट होता है कि मध्यकाल में सबसे पहले अरबवासियों ने सिन्ध (भारत) पर आक्रमण किया था।
- **712ई.** में मुहम्मद–बिन–कासिम ने भारत–सिंध पर आक्रमण किया जिसका एक मात्र स्रोत चचनामा है, जिसको **फतहनामा** भी कहा जाता

है।

- **किताब–एल–यामिनी**–गजनी वंश को यामिनी वंश भी कहा गया है। इस पुस्तक से यामिनी वंश के साथ–साथ महमूद गजनी के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस ग्रंथ के लेखक **उत्बी** महमूद गजनी के दरबारी इतिहासकार थे।
- **तारीक–ए–सुबुक्तगीन**–इस पुस्तक से भी गजनी वंश और महमूद गजनी के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस पुस्तक के लेखक बैहाकी दरबारी कवि के पद पर या राज कवि के पद पर आसीन थे।
- प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान लेनपूल ने बैहाकी को **''पूर्वीपेप्स''** कहा है।
- **शहनामा**–इस पुस्तक से भी गजनी वंश और महमूद गजनी के भारत पर आक्रमण करने के बारे में जानकारी मिलती है।
- **किताब–एल–हिन्द**–इस पुस्तक को **तहकीक–ए–हिन्द** के नाम से भी हमलोग जानते हैं। इस पुस्तक के लेखक अलबरूनी के बचपन का नाम अबुरिहान था, जो अफगानिस्तान के ख्वारिज्म नामक स्थान के रहने वाले थे।
- **अलबरूनी** महमूद गजनी के साथ भारत आये थे।
- यह पुस्तक 11वीं शताब्दी में लिखा गया है।

  मध्यकाल में विदेशी पुस्तकों में यह सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, कला एवं संस्कृति विज्ञान एवं तकनीक, भारतीय पर्व एवं त्यौहार, अधंविश्वास के साथ–साथ दैनिक जीवन से संबंधित सभी बातों का विस्तारपूर्व उल्लेख किया गया है।
- अलबरूनी प्रथम मुस्लिम था, जिसने **भागवत गीता** और **पुराण** का अध्ययन किया था।
- अलबरूनी के अनुसार भारत में जाति का निर्धारण माँ की जाति से किया जाता था।
- किताब–उल–हिन्द का अंग्रेजी भाषा के अनुवाद, ई. सी. सचाऊ ने ''अलबरूनी का भारत'' नाम से किया।
- **ताज–उल–मासिर**–इस पुस्तक से गुलाम वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- **तबकात–ए–नासिरी**–गुलाम वंश के राजकुमार नासिरूद्दीन महमूद के समय में उन्हीं को समर्पित करते हुए लिख गया अर्थात् इससे गुलाम वंश के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- **रेहला / किताब–उल–रेहला :**
- इस पुस्तक के लेखक **इब्नबतूता अफ्रीका / मोरक्को / मौरिस** के यात्री थे।
- इब्नबतूता तुगलक वंश के शासक **मुहम्मद–बिन–तुगलक** के समय भारत आये थे।

  मु.–बिन–तुगलक ने इनको दिल्ली का काजी (न्यायाधीश) नियुक्त किया और अपना राजदूत बनाकर चीन भी भेजा था।
- **तारिख–ए–फिरोजशाही और फतवाँ ए जहाँदारी**–जियाउद्दीन बरनी ने इस पुस्तक की रचना जेल में रहते हुए की थी। इससे तुगलक वंश के बारे में विशेष कर फिरोज तुगलक के बारे में और संक्षिप्त रूप में खिलजी वंश के बारे में भी जानकारी मिलती है। कैदखाने से मुक्त होने के लिए फिरोज तुगलक के प्रशंसा के रूप में इसको लिखा गया।
- फिरोज शाह तुगलक ने जियाउद्दीन बरनी को कुछ समय के लिए जेल में डल दिया था।
- **फतूहात–ए–फिरोजशाही**–दिल्ली सल्तनत का एक मात्र सुल्तान फिरोज तुगलक ने अपनी आत्मकथा को इस ग्रंथ के रूप में लिखा है।
- **तारिख–ए–मुबारकशाही**–सैय्यद वंश के बारे में जानकारी के लिए यह एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है, जो सैय्यद वंश के शासक मुबारक शाह को समर्पित है।
- **अमीर खुसरो**–इनका जन्म उत्तर प्रदेश के ऐटा जिला के पटियाली गाँव में हुआ था। यह साहित्यकार के साथ–साथ चिश्ती संप्रदाय से भी संबंधित थे।
- इनको **हिन्द का तोता,** (तूतियेहिन्द) या हुदहुद पक्षी (बुलबुल) कहा गया है।
- अमिर खुसरो प्रसिद्ध चिश्ती संत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे।
- अमीर खुसरो ने दिल्ली सल्तनत के आठ सुल्तानों का कार्यकाल देखा था।
- अमीर–खुसरो प्रथम ऐसे मुस्लिम विद्वान थे, जिन्होंने अपनी पुस्तकों में हिन्दी मुहावरों का प्रयोग किया था।
- इनको **सितार** और **तबला** का जनक भी माना जाता है।

  यह सबसे अधिक समय तक अलाउद्दीन–खिलजी के दरबार में थे। इनकी महत्वपूर्ण पुस्तक निमनिलिखित है– तुगलकनामा, खजाइन–एल–फुतूह, नूहसीपेहर, आशिका, लैला–मजनू, सीरी–फरहाद आदि।

मुगलकालीन ग्रंथ

- दिल्ली सल्तनत के समान ही मुगलकाल में भी ग्रंथ की रचना की गयी। दिल्ली सल्तनत के समान ही मुगलकाल में राजकीय भाषा फारसी (पार्शियन) था, लेकिन कुछ ग्रंथ तुर्की भाषा में भी लिखा गया। जैसे–
- **बाबरनामा / तुजुक–ए–बाबरी**–यह बाबर की **आत्मकथा** है। इसमें कश्मीर के बारे में उल्लेख नहीं किया गया है। इसमें मुगल वंश की स्थापना और बाबर की उपलब्धियों का वर्णन है।

- बाबर की **मातृ–भाषा तुर्की** था, इसलिए बाबर ने इस ग्रंथ का **फारसी भाषा** में अनुवाद किया।
- एस. बेवरीज ने बाबरनामा का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया है।
- **हुमायूँनामा**–यह दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में बाबर के बारे में और दूसरे भाग में हुमायूँ के बारे में उल्लेख किया गया है।
- **अकबरनामा**–इस पुस्तक के लेखक **अबुल–फजल** अकबर के नौरत्नों में शामिल थे। यह पुस्तक तीन भागों में विभाजित है, जिसमें तीसरा और अंतिम भाग को **आईन–ए–अकबरी** कहा गया है। अबुल–फलज ने अकबर की तुलना अग्नि, जल, वायु और भूमि से किया है।
- **मुन्तखब–उल–तवारिख**–यह अकबर के समय लिखा गया ग्रंथ है। इस ग्रंथ में बदायूँनी ने अकबर की धार्मिक नीतियों का आलोचना किया है।
- **तुजुक–ए–जहाँगिरी**–यह **जहाँगीर की आत्मकथा है,** जिसमें इनके उपलब्धियों के साथ–साथ चित्रकला के विकास के बारे में उल्लेख किया गया है।
- चित्रकला के क्षेत्र में **जहाँगीर के काल को स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- **बाबर और जहाँगीर** दो मुगल बादशाहों ने अपनी अत्मकथा लिखा है।
- चित्रकला के क्षेत्र में **जहाँगीर के काल को स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- **बाबर और जहाँगीर** दो मुगल बादशाहों ने अपनी आत्मकथा लिखा है।
- **शाहजहाँनामा**–इस पुस्तक से शाहजहाँ के उपलब्धियों के साथ–साथ मुगलकालीन स्वर्णकाल के बारे में भी जानकारी प्राप्त होता है।
- **पादशाहनामा**–यह पुस्तक शाहजहाँ के काल में लिखा गया है, और उनके उपलब्धियों का वर्णन इसमें किया गया है।
- **आलमगीरनामा** – औरंगजेब ने आलमगीर की उपाधि धारण किया था अर्थात् यह पुस्तक औरंगजेब से संबंधित है।
- **मुल्तखब–उल–लुबाब**–यह पुस्तक औरंगजेब के समय में लिखा गया, मराठा और मुगलों के संघर्ष के बारे में विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।
- इस पुस्तक में खफी–खाँ ने शिवाजी को **'शैतान का चतुर बेटा'** कहा है।
- **मासिर–ए–आलमगिरी**–यह पुस्तक भी औरंगजेब के समय लिखा गया, जिसमें मुगलकाल के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक कला एवं संस्कृति के साथ–साथ सभी महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया गया है। केवल इस पुस्तक को पढ़ने से मुगलकाल के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाता है।
- **सर यदुनाथ सरकार** ने इस पुस्तक को मुगलराज का **गजेटियर** (राजपत्र) कहा है।
- **मज्म–उल–बहरीन**–इसका शाब्दिक अर्थ दो महासागरों का मिलन होता है। अर्थात् हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति का मिलन। यह भी औरंगजेब समय लिखा गया।
- **दाराशिकोह**– मुगल वंश के **अकबर** पढ़े लिखे नहीं थे, ठीक इसके विपरीत **दाराशिकोह** सबसे अधिक शिक्षित, योग्य और विद्वान व्यक्ति थे। इन्होंने 52 उपनिषदों को फारसी भाषामें 'सिर्र–ए–अकबर' के नाम से अनुवाद कराया था।

इस प्रकार उपर्युक्त पुस्तकों से हमलोगों को मध्यकालीन भारत के इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाती है।

इस्लाम धर्म का उदय और भारत आगमन

मध्यकाल में भारत में इस्लाम धर्म के अनुयायियों ने शासन किया और इस धर्म का उदय सउदी–अरब में हुआ तथा 712 ई. मं इसका प्रवेश भारत में भी हो गया।

इस्लाम का शाब्दिक अर्थ पवित्र होता है। इस धम्र का जन्म रेगिस्तान क्षेत्र में हुआ था। इसलिए इस्लाम धर्म को रेगिस्तान का धर्म भी कहा जाता है। इस धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद (पैगम्बर) साहब साहब का जन्म सऊदी अरब के मक्का में 570 ई. में हुआ था। जन्म के कुछ समय पहले पिता अब्दल्ला की मृत्यु हो गई। जन्म के 6 साल के बाद माँ अमीना बेगम की भी मृत्यु हो गई। तब इनका लालन–पालन चाचा अबुतालिब ने किया। यह बचपन में भेड़ चराने का कार्य करते थे। लेकिन चिंतनशील भी हो जाया करते थे। **610 ई.** में इनको मक्का की पहाड़ी पर **हीरा नामक गुफा** में ईश्वर के दूत **हीरा नामक गुफा** में ईश्वर के दूत **जिब्राईल** ने संदेश दिया अर्थात् पैगम्बर साहब को ज्ञान की प्राप्ति हुई और इस्लाम धर्म का उदय हुआ।

ज्ञान प्राप्ति के बाद पैगम्बर साहब ने मूर्तिपूजा और अंधविश्वास का सबसे अधिक विरोध किया। लेकिन इनके रिश्तेदार जो कुरेश कुल के थे, मूर्तिपूजा के माध्यम से काबा मे अपनी जीविका चलाते थे। इन लोगों ने पैगम्बर साहब को जान से मारने का प्रयास किया, तब यह मक्का से मदीना प्रस्थान कर गये।

- **622 ई.** में मक्का से मदीना प्रस्थान करने के उपलक्ष्य में **हिजरी संवत्** प्रारंभ हुआ।

अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करते हुए **632 ई.** में पैगम्बर साहब की मृत्यु मदीना में हो गया और वहीं पर उनको दफनाया गया।

पैगम्बर साहब ने पाँच प्रकार का नियम स्थापित किया था। जैसे–

1. रमजान के महीने में रोजा रखना।

2. प्रतिदिन कलमा का पाठ करना।
3. अपनी आय का 10 प्रतिशत जकात (धार्मिक कर) के रूप में दान करना।
4. अपने जीवनकाल में कम से कम एक बार हज की यात्रा करना।
5. प्रतिदिन पाँच बार नमाज अदा करना।

पैगम्बर साहब की मृत्यु के बाद **खलीफा (धर्मगुरू)** इस्लाम धर्म का नेतृत्व करने वाले हो गए, जिसमें अबुबक्र और शेख इस्माईल सबसे प्रसिद्ध खलीफा थे।

- **अबुबक्र प्रथम** खलीफा थे।
- अंतीम खलीफा अब्दुल मजीद द्वितीय थे।

कालांतर में इस्लाम धर्म दो भागों में विभाजित हुआ। जैसे–

- **शिया**–पैगम्बर साहब के दामाद हजरत अली के अनुयायी शिया कहलाते हैं। सरल शब्दों में आधुनिक विचारधारा को माननेवाले इसमें शामिल है।
- **सुन्नी** – जो पैगम्बर साहब के अनुयायी हैं, उनको सुन्नी कहा जाता है अर्थात् यह प्राचीन विचारधारा को मानने वाले हैं।

प्रमुख पर्व एवं त्यौहार :

- **ईद–उल–फितर**–यह इस्लाम धर्म का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है। रमजान के महीना के समाप्ति और ईद का चाँ दिखाई देने के दूसरे रोज यह त्यौहार मनाया जाता है। सरल शब्दों में ज्ञान प्राप्ति के उपलक्ष्य में इसकों मनाया जाता है।
- **ईद–उल–मिलाद–उल–नबी**–पैगम्बर साहब के जन्म दिवस के रूप में यह मनाया जाता है।
- **ईद–उल–जोहा/कुर्बानी**–शेख इस्माईल की स्मृति में बकरे की कुर्बानी देकर यह मनाया जाता है।
- **मुहर्रम**–पैगम्बर साहब के दामाद हजरत अली और उनकी पुत्री फातीमा बीबी की पुत्र हुसैन अली और उनके अनुयायियों की हत्या **करबला** के मैदान में कर दिया गया। इसलिए शोक दिवस के रूप में त्यौहार मनाया जाता है।, और इसमें **तजिया** निकाला जाता है।
- **शबे–बरात**–यह केवल भारतीय मुसलमान अपने कर्म फल के रूप में मानते हैं।

पवित्र ग्रंथ :

- **कुरान/कुरान–ए–शरीफ**–ईश्वर के दूत जिब्राइल ने इस ग्रंथ को पैगम्बर साहब को दिया था। यह इस्लाम धम्र का सबसे पवित्र ग्रंथ है।
- **हदीश**–इसमें पैगम्बर साहब के जीवन चरित्र का उल्लेख किया गया है। कुरान के बाद इसका स्थान है।
- **इजमा**–उलेमा लोगों के द्वारा लिखा गया ग्रंथ इजमा कहलाता है।

इस प्रकार इस्लाम धर्म का उदय साउदी अरब में हुआ और धीरे–धीरे इसका प्रचार–प्रसार अन्य देशों में होने लगा। इसी क्रम में यह धर्म भारत में भी प्रवेश कर गया।

भारत पर अरब आक्रमण

- मध्यकाल में भातर पर सर्वप्रथम अरबों ने आक्रमण किया, लेकिन इन लोगों ने राजनीतिक सत्ता को स्थापित नहीं किया। इनसे संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को हमलोग शामिल कर सकते हैं। जैसे–
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार 636-+637 ई. में सर्वप्रथम अरबवासियों ने बंबई के समीप थाणे पर असफल आक्रमण किया था। इसके बाद 711 ई. बुदैला और उबेदुल्ला के नेतृत्व में सिंध पर आक्रमण किया गया, जो सफल नहीं रहा तब खलीफा अलीज्जाज ने मुहम्मद–बिन–कासिम के नेतृत्व में आक्रमण करने का आदेश जारी किया।
- **मुहम्मद–बिन–कासीम** के नेतृत्व में **सिंध पर 712 ई.** में सफल आक्रमण किया गया।
- **अथियान**–मुहम्मद–बिन–कासिम के नेतृत्व में सैन्य अभियान किया गया और सभी अभियान सफल रहा, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **देवल (712)** – मुहम्मद–बिन–कासिम ने सबसे पहले सिंध के किनारे स्थित इस क्षेत्र को विजित कर लिया।
- **देवल** एक प्रसिद्ध बन्दरगाह नगर था।
- **निरून (712)**–यहाँ पर बौद्ध भिक्षु रहते थे, जिनको दाहिर सताने का कार्य करता था। यहाँ के बौद्ध भिक्षिओं ने दाहिर के खिलाफ मुहम्मद–बिन–कासिम ने पराजित कर दिया।
- **सेहवान (712)**–यह निरून के समीप था। यहाँ के शासक को भी मुहम्मद–बिन–कासिम ने पराजित कर दिया।
- **रावर का युद्ध (712)**–यह युद्ध सिंध के शासक दाहिर और मुहम्मद–बिन–कासिम के बीच हुआ, जिसमें दाहिर वीरगति को प्राप्त हुए।
- **ब्राह्मणवाद (712)**–मुहम्मद–बिन–कासिम ने इस क्षेत्र के साथ–साथ सिंध की राजधानी अरोरा को भी जीत लिया।
- **मुल्तान (713)**–वासपसी के क्रम में इस क्षेत्र को भी जीत लिया गया। यहाँ से इतना अधिक सोने का भण्डार मिला कि मुल्तान को इतिहास में स्वर्ण नगरी कहा गया है।

- **अरब आक्रमण का प्रभाव–**मुहम्मद–बिन–कासिम के आक्रमण के फलस्वरूप अरबी संस्कृति को भारतीयों ने और कुछ भारतीय संस्कृति को अरबवासियों ने अपनाया। जैसे–

  मुहम्मद–बिन–कासिम के आक्रमण का भारत पर राजनीतिक प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता है, क्योंकि इसने राजनीतिक सत्ता को स्थापित नहीं किया।
- अरबवासियों ने भारत की अंक पद्धति को अपनाया, जिसको यह लोग 'हिन्दसा' कहते हैं, और इसका प्रचार–प्रसार यूरोप में किया।
- सर्वप्रथम अरबवासियों (मुस्लिमों) ने भारतीयों को हिन्दू कहकर संबोधित किया था और इस देश को हिन्दुस्तान कहा था।
- अरब आक्रमण के फलस्वरूप भारत में पर्दा प्रथा का तेज गति से विकास हुआ। इसके साथ ही जजिया, जकात और खराज (भू–राजस्व) नामक कर के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।
- **मुहम्मद–बिन–कासिम** ने भारत में सर्वप्रथम **'जजिया'** कर को लगया था।
- **फिरोज शाह तुगलक** एक मात्र सुल्तान है, जिसने ब्राह्मणों से भी जजिया कर वसूल किया।
- मुगल बादशाह **अकबर ने 1564 ई.** में जजिया कर को समाप्त कर दिया।
- एकमात्र मुगल बादशाह **औरंगजेब ने अंग्रेजों** से भी जजिया कर वसूल किया।
- **औरंगजेब ने 1679 ई.** में जजिया कर को पुनः लगा दिया था।

  इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि भारत पर सर्वप्रथम अरब आक्रमण हुआ और इसके बाद तुर्कों ने आक्रमण किया तथा राजनीतिक सत्ता को स्थापित कर दिया।

तुर्कों का आक्रमण

- भारत पर अरब आक्रमण के बाद तुर्क लोगों ने आक्रमण किया। इस आक्रमण को हमलोग दो भागों में बाँटकर अध्ययन कर सकते हैं। जैसे– गजनी वंश, और गौर वंश।
- **गजनी वंश–** इस वंश का नाम स्थान के नाम पर रखा गया है। गजनी अफगानिस्तान में अवस्थित है। इस समय अफगानिसतान में तुर्क सरदारों के नेतृत्व में विभिन्न कबीला पर नियंत्रण करने के लिए संघर्ष होता था और इसी संघर्ष के क्रम में अल्पतगीन नामक व्यक्ति ने गजनी में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की, लेकिन सत्ता का सुख नहीं उठा पाया, क्योंकि सुबुक्तगीन नामक व्यक्ति ने इसकी हत्या करके गजनी वंश को स्थापित कर दिया। 998 ई. में इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र महमूद गजनी गद्दी पर आया।

महमूद गजनी (998 – 1030) :

- यह गजनी वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसके उपलब्धियों को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है–
- **प्रारंभिक जीवन–**महमूद गजनी का जन्म 971 ई. में हुआ था। अपने पिता के मृत्यु के बाद यह 998 में गजनी का शासन बना। इस अवसर पर बगदाद के खलीफा अल–कादिर–बिल्लाह ने इसको सुल्तान कहकर संबोधित किया। यह पहला व्यक्ति है, जिसको सुल्तान कहा गया। खलीफा ने इसको यामिन–उद–दौला और यामिन–उल–बिल्लाह की उपाधी से सम्मानित किया। महमूद गजनी ने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं प्रत्येक वर्ष भारत पर आक्रमण करूँगा। इसको जाबुली का राजकुमार भी कहा जाता है।
- महमूद गजनी को **बुतशिकन/मूर्तिभंजक** कहा गया है।
- सर हेनरी इलियट के अनुसार इसने 1000 ई. से लेकर 1027 ई. तक 17 बार आक्रमण किया।

अभियान :

- महमूद गजनवी ने मुख्य रूप से **धन–प्राप्ति** के लिए भारत पर आक्रमण किया था।
- महमूद गजनवी को इतिहास में **लूटेरा** कहा गया है।
- महमूद गजनवी ने आक्रमण के समय **जिहाद (धर्म युद्ध)** का नारा दिया था।

  इसके सैन्य अभियान को निम्नलिखित रूपों में हमलोग देख सकते हैं–
- **सीमावर्ती राज्य (1000)–** महमूद गजनी ने सबसे पहले अपने पड़ोसी राज्य को जीतकर अपनी सैन्य शक्ति और आर्थिक शक्ति को मजबूत कर लिया।
- **हिन्दूशाही राज्य (1001) –** महमूद गजनी यहाँ के शासक जयपाल को दण्डित करने के लिए यह अभियान किया और सफल रहा ।
- जयपाल एकमात्र शासक है, जो पराजित होने पर आत्मदाह कर लिया।
- **सुल्तान (1008)**–धन संपत्ति प्राप्त करने के लिए यह अभियान किया गया। यहाँ का शासक फतेह–दाऊद पराजित हुआ।
- **नगरकोट (1008)**–महमूद गजनी ने यहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को तोड़कर उसके अवशेष को गजनी ले जाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक दिया।
- यहाँ से महमूद गजनी की एक चाँदी का मकान भी मिला था।
- **वैहिन्द का युद्ध (1008 – 1009)**–यह युद्ध महमूद गजनी और जयपाल के पुत्र आनंदपाल के बीच हुआ, जिसमं गजनी विजयी हुआ।

- हिन्दूशाही राज्य की राजधानी का नाम **वैहिन्द या उदभांडपुर** था।
- **सोमनाथ पर आक्रमण (1025 – 1026)**–यह गुजरात के काठियावाड़ प्रांत में स्थित है, जिसकी राजधानी अन्हिलवाड़ थी। यहाँ का शासक चालुक्य–सोलंकी वंश का भीम–I / भीमदेव–I था, जो महमूद गजनी के डर से भाग गया।
- सबसे अधिक धन संपत्ति महमूद गजनी को इसी अभियान से प्राप्त हुआ।
- सोमनाथ का मंदिर **भगवान शिव** को समर्पित है।
- **जाटों के विरूद्ध अभियान (1027)** – अपने–जाने के क्रम में महमूद गजनी और उसकी सेना को जाट लोग परेशान करते थे, परिणामस्वरू अपना अंतिम अभियान जाटों के विरूद्ध किया और कत्लेहआम कराया।

  1030 ई. में इसकी मृत्यु हुई। राजधानी गजनी में इसको दफनाया गया। यह भारत में राजनीतिक सत्ता को स्थापित नहीं कर सका।

विधि तथ्य :

- इसने अपनी राजधानी गजनी में एक विशाल मस्जिद और मदरसा का निर्माण कराया।
- इसने सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान देते हुए नेवार नदी पर एक बाँध का निर्माण कराया जिसको 'बाँध ए सुल्तान' कहा गया है।
- महमूद गजनी के साथ ही प्रसिद्ध विद्वान **अलबरूनी** भारत आये थे।
- सोमनाथ को 'प्रभास' या 'प्रभासपाटन' भी कहा जाता है।
- **गौर वंश** – यह वंश क्षेत्र के नाम पर जाना जाता है। अफगानिस्तान के हेरात और गजनी के बीच गौर का प्रदेश स्थित था और इसी क्षेत्र में जिन लोगों ने राजनीतिक सत्ता को स्थापित किया, उसी को इतिहास में गौर वंश कहा गया है।
- **मेघदूतम्**–मेघदूतम् नामक ग्रंथ में वर्षा ऋतु के साथ–साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।

  अलाउद्दीन नामक व्यक्ति ने इस क्षेत्र में गौर वंश को स्थापित किया, जिसका प्रबल शत्रु गजनी राज्य था। अलाउद्दीन ने गजनी पर आक्रमण करके उसको जला दिया।
- गजनी के सफल अभियान पर अलाउद्दीन ने **विश्वदाहक / जहाँसोज** की उपाधि धारण की ।

मुहम्मद गौरी (1173 – 1206) :

- इतिहास में इसे विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। जैसे–**मुहम्मद– बिन–साम / शिहाबुद्दीन / मोईजुद्दीन।** लेकिन मुहम्मद गौरी के नाम से यह अधिक प्रसिद्ध हुआ और 1173 ई. में गद्दी पर आया।
- **सैन्य अभियान**– गद्दी पर आने के साथ इसने अपने आस–पास के क्ष्ज्ञेत्र को विजित किया और साम्राज्य विस्तार के क्रम में सैन्य अभियान किया, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **मुल्तान (1175)** – मुहम्मद गौरी ने सर्वप्रथम सोने की नगरी मुल्तान को विजित कर लिया और आर्थिक रूप से मजबूत हो गया।
- **गुजरात (1178)** – यहाँ के शासक भीम–II जो चालुक्य सोलंकी वंश के शासक थे, अपने माँ नायिका देवी के साथ मिलकर मुहम्मद गौरी को **माउंट आबू** के समीप पराजित कर दिया।
- भारत में मुहम्मद गौर को सर्वप्रथम **भीम–II या मूलराज–II** ने पराजित किया था।
- **पेशावर, लाहौर (1179–86)** – मुहम्मद गौरी ने इसको भी जीत लिया। इस प्रकार भारत आने का मार्ग पूर्ण रूप से खुल गया।
- **गजनी (1192)** – इस समय गजनी का शासक खुसरो था, जो पराजित हुआ और मुहम्मद गौरी ने गजनी को अपनी राजधानी बना लिया।
- **तराईन का प्रथम युद्ध (1191)** – तराईन वर्तमान में हरियाणा में स्थित है।
- इस युद्ध में **पृथ्वीराज चौहान** मुहम्मद गौरी को पराजित किया।

  भारत में यह मुहम्मद गौरी की दूसरी पराजय था।

  पृथ्वीराज अजमेर को विजित करके भारत का शासक बनना चाहते थे। इन्होंने कन्नौज की राजकुमारी संयोगिता का अपहरण करके वैवाहिक संबंध स्थापित किया था। परिणामस्वरूप जयचन्द और इनके बीच मधुर संबंध नहीं था।
- **तराईन का द्वितीय युद्ध (1192)** – इस युद्ध में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया। हरियाणा में सुरसति के समीप इसकी हत्या कर दी गयी।

  चन्दबरदायी के अनुसार पृथ्वीराज चौहान को गजनी ले जाकर उसकी हत्या की। मिन्हाज–उस–सिराज के अनुसार पृथ्वीराज चौहान को सीधे नरक भेज दिया गया।
- **चन्दावर का युद्ध (1194)** – इस युद्ध में कन्नौज के गहड़वाल वंश वाले क्षेत्र में रहते थे। इनके विरूद्ध मुहम्मद गौरी का अंतिम सफल अभियान हुआ।

  वापसी के क्रम में सिंधु नदी के किनारे दमयक नामक स्थान पर खोक्खरों ने मुहम्मद गौरी की हत्या कर दी, तब मुहम्मद गौरी के गुलाम ऐबक ने 1206 में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।

विविध तथ्य :

- मुहम्मद गौरी के साथ प्रसिद्ध चिश्ती संत **मोईनुद्दीन चिश्ती** भारत आये थे।
- मुहम्मद गौरी ने **लक्ष्मी की आकृति वाला सिक्का** भारत था, जिसको देहलीवाल कहा गया है। इसपर अरबी शब्द अंकित है।

दिल्ली सल्तनत (1206 – 1526 AD)

- दिल्ली की स्थापना **तोमर वंश के शासक अनंगपाल** ने किया था। दिल्ली को कुव्वत–एल–इस्लाम या योगिनीपुर या दिल्ली के नाम से भी हमलोग जातने तैं। महाभारत में इसको इन्द्रप्रस्थ कहा गया है। सल्तनत का शाब्दिक अर्थ साम्राज्य होता है। इस समय दिल्ली को केन्द्र बनाकर शासन किया गया और शासक को सुल्तान कहा गया। इसलिए दिल्ली सल्तनत नाम पड़ गया। इसके अन्तर्गत पांच वंशों ने शासन व्यवस्था को संचालित किया था, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

गुलाम वंश (1206 - 1290 AD)

- दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत यह पहला वंश था, जिसको गुलाम या दास वंश कहा जाता है। इन गुलामों की खरीद–बिक्री किया जाता था। यह लोग अपनी योग्यता के बल पर सुल्तान बन जाते थे। आधुनिक अनुसंधान के अनुसार अब इस वंश को 'ममलूक' वंश भी कहा जाता है।

  ममलूक एक अरबी शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है–वैसा गुलाम जिससे सैन्य कार्य संपन्न कराया जाए। घरेलू कार्य नहीं कराया जाए। वर्तमान में इन लागों को प्रारंभिक तुर्क सुल्तान भी कहा जाता है। अध्ययन की सुविधा के लिए गुलाम वंश को हमलोग तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। जैसे–

गुलाम वंश

कुत्बी राजवंश	शम्शी राजवंश	बलबनी राजवंश
(1206-1210)	(1210-1265)	(1265-1290)
कुतुबुद्दीन ऐबक	इल्तुमिश	बलबन

- **कुत्बी राजवंश–**इस वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया था, जिसके अंतर्गत दो शासक हुए। जैसे–
  कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210), आरामशाह (1210)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 - 1210) :

- यह मुहम्मद गौरी का गुलाम था।
- इसने **दिल्ली सल्तनत और गुलाम वंश** की स्थापना की थी।

  मुहम्मद गौरी के मृत्यु के बाद लाहौर के तुर्क सरदारों ने इसे आमंत्रित किया। इसने **लाहौर** में अपना राज्याभिषेक संपन्न कराया। इसने लाहौर को राजधानी बनाकर शासन किया। इसने कोई उपाधि धारण नहीं की। बल्कि मुहम्मद गौरी के द्वारा प्रदान किया गया **सिपहसलार** और **मलिक** के पद से संतुष्ट रहा।

  इसने अपने स्थिति को मजबूत करने के लिए वैवाहिक संबंधों का सहारा लिया। जैसे–गजनी के शासक एल्दौज की पुत्री से अपना विवाह, अपनी बहन का विवाह सिंध के शासक नासिरूद्दीन कुबाचा के साथ और अपनी पुत्री का विवाह बदायूँ के प्रांतपति इल्तुमिश के साथ किया। इसे संपूर्ण कुरान याद था, इसलिए **कुरानखाँ** कहा गया है। यह दान–पुण्य में रूचि रखता था, इसलिए **लाखबक्स** (लाखों दान करने वाला) भी कहा गया है। मिन्हाज–उस–सिराज ने इसको **हातिम–II** कहा है।
- **स्थापत्य कला–**ऐबक ने स्थापत्य कला के क्षेत्र कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। जैसे–
- **कुव्वत–उल–इस्लाम–**यह एक **मस्जिद** है, जिसका निर्माण ऐबक ने **दिल्ली** में कराया। सर जॉन–मार्शल के अनुसार 27 जैन मंदिरों को तोड़कर इसे बनाया गया।
- **ढाई दिन का झोपड़ा –** यह भी **मस्जिद** है, जिसका निर्माण ऐबक ने **अजमेर** में कराया। इसका भी निर्माण मठ को तोड़कर किया गया।
- **कुतुबमीनार–**यह **दिल्ली** में स्थित है अजान करने के लिए इसका निर्माण कराया गया। प्रसिद्ध सूफी संत शेख–ख्वाजा कुतुबुद्दीन–बख्तियार–काकी की स्मृति में इसको बनाया गया।
- **ऐबक** ने इसका निर्माण कार्य प्रारंभ कराया और **इल्तुमिश** ने इसको पूरा किया। प्रारंभ में यह चार मंजिल तक बनने वाला था, लेकिन 7 मंजिल के रूप में तैयार हुआ, जिसकी ऊँचाई 71.4 मी. है। कालांतर में 3 मंजिल क्षतिग्रस्त भी हो गया।
- कुतुबमीनार में मरम्मर का कार्य **फिरोजशाह–तुगलक** और **सिकंदर–लोदी** ने कराया था।

  1210 ई. में **चौगान (पोलो)** नामक खेल खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गई। तब उसका पुत्र को आमंत्रित किया। इल्तुमिश ने आरामशाह का वध किया और गद्दी पर आसीन हो गया।
- **शम्शी राजवंश (1210 – 1236) –** यह कुतुबुद्दीन ऐबक का गुलाम था अर्थात् गुलाम का गुलामों का गुलाम था। तुर्को की 64 जातियों में से यह **इल्बारी** तुर्क जाति का था।

- यह दिल्ली सल्तनत और गुलाम वंश का **वास्तविक संस्थापक** था।

  इसने गजनी के शासक एल्दौज को 1215 ई. में तराईन के मैदान में पराजित कर दिया। इसने नासिरूद्दीन कुबाचा के विरूद्ध भी अभियान किया। परिणामस्वरूप कुबाचा ने सिंधु नदी में डूबकर आत्म हत्या कर लिया। इल्तुमिश ने मलिक जानी को अपना प्रथम सूबेदार नियुक्त किया था।

  ख्वारिज्म के शासक जलाउद्दीन मंगबरनी का पीछा करते हुए मंगोल नेता चंगेज खाँ सिंध के क्षेत्र तक आ गया था। लेकिन मंगबरनी के वापस होते ही चंगेज खाँ भी वापस हो गया।

  मंगोल मध्य एशिया के रहने वाले थे, जिसमें **चंगेज खाँ** और **कुबलई खाँ** दो विश्व प्रसिद्ध मंगोल नेता थे।
- चंगेज खाँ को **ईश्वरीय अभिशाप** कहा गया है।
- **चंगेज खाँ** ने **इल्तुमिश** के समय सिंध के क्षेत्र तक आक्रमण किया था।

  1229 ई. में बगदाद के खलीफा अलमुन्तसिर–बिल्लाह ने इल्तुमिश को छत्र (राजकीय चिन्ह) और खिलअत (राजकीय पोषाक) प्रदान किया और स्वतंत्र शासक मान लिया।
- इस प्रकार इल्तुमिश दिल्ली सल्तनत का **प्रथम स्वतंत्र और वैधानिक सुल्तान था।**

  इल्तुमिश ने प्रांरभ में कुत्बी (ऐबक के समर्थक) और मोईजी (गौरी के समर्थक) को समाप्त करने के लिए अपने 40 विश्वासपात्र गुलाम सरदारों का एक संगठन बनाया।
- इस संगठन को **तुर्कान–ए–चिहालगानी/चारगान/चालीसा** कहा गया है।

  इल्तुमिश गद्दी पर आने के साथ प्रशासन के क्षेत्र में तथा स्थापत्य कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य को संपन्न किया। जैसे–यह प्रथम सुल्तान था, जिसने इक्ता व्यवस्था को लागू किया।
- यह प्रथम सुल्तान था, जिसने शुद्ध अरबी सिक्के को जारी किया।

  इसने चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल नामक सिक्का को जारी किया था। इस पर खलीफा अलमुन्तसिर–बिल्लाह का नाम भी अंकित कराया।

  1 Vdk = 48 जीतल

  इसने बदायूँ में जामा–मस्जिद और हौज–ए–शम्शी का निर्माण कराया। इल्तुमिश जब सुल्तान बना उस समय यह बदायूँ का इक्तादर था।
- राजस्थान के नागौर नामक स्थान पर इसने अतारिकन नामक विशाल दरवाजा का निर्माण कराया, जिससे प्रेरित होकर मुगल बादशाह अकबर ने फतेहपुर–सीकरी में बुलंद दरवाजा बनाया इल्तुमिश ने अजमेर में मोईनुद्दीन चिश्ती की मकबरा भी बनवाया। इसने अपने पुत्र महमूद के लिए दिल्ली में भी मकबरा बनवाया। जिसे सुल्तान गढ़ी का मकबरा कहा जाता है।
- भारत में मकबरा का जन्मदाता इल्तुमिश को माना जाता है।

  अपने अंतिम समय में इल्तुमिश ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
- **रूक्नुद्दीन फिरोजशाह (1236)** – इल्तुमिश ने रजिया सुल्तान को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। लेकिन दिल्ली के तर्क सरदारों ने रजिया के भाई का समर्थन कर दिया परिणामतः यह गद्दी पर आया। सम्पूर्ण अधिकार इसकी माँ शाहतुर्कान के हाथों में केन्द्रित हो गयी। यह एक अत्याचारी महिला थी। जब यह लोग दिल्ली से सेना के साथ बाहर निकले रजिया सुल्तान लाल वस्त्र पहनकर दिल्ली के जनता के सामने उपस्थित हुई। जनता ने सहयोग कर दिया। रूक्निुद्दीन फिरोजशाह और उनकी की हत्या कर दी गयी। इस प्रकार रजिया को गद्दी प्राप्त हुई।
- मध्यकाल में लाल वस्त्र न्याय का प्रतीक होता था।
- **रजिया सुल्तान (1236 – 1240) :** यह दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाली प्रथम महिला थी।

  रजिया ने प्रदा प्रथा का त्याग किया और कुलाह (लंबा टोपी) और कुबा (लंबा कोट) पहनकर राज दरबार में आने लगी। इस समय अबसीनिया (इथोपिया) का निवासी याकूत खाँ आमीर–ए–आखूर (अश्वशाला का प्रधान) के पद पर था। याकूत खाँ रजिया सुल्तान का प्रेमी भी था, जो प्रशासन में सबसे अधिक हस्तक्षेप करता था। कैथल के समीप अल्तुनिया और रजिया की हत्या कर दी गयी। कुछ विद्वानों के अनुसार रजिया का महिला होना असफलता का कारण माना गया है। अधिकांश विद्वानों के अनुसार रजिया के असफलता का कारण तुर्म सरदारों की महत्वाकांक्षा था।
- **बहराम शाह (1240 – 1242) :** बहराम शाह एतगिन के सहयोग से गद्दी पर आया इसलिए संपूर्ण अधिकार एतगीन के पास सुरक्षित हो गया।
- बहरामशाह ने एक नया पद नाइब–ए–ममलिकात/मुमालिक का सृजन किया। इस पद को पानेवाला प्रथम व्यक्ति एत्गीन था।
- **अलाउद्दीन मसूदशाह (1242 – 1246)** – इसके समय में तुर्कान–ए–चिलाहगामी के सदस्य बलबन का उदय हो रहा था, जिसने नासिरूद्दीन महमूदशाह के साथ मिलकर इस सुल्तान की हत्या कर दिया।
- **नासिरूद्दीन महमूद शाह (1246 – 1265)**– यह शम्सी वंश का अंतिम शासक था। सुल्तान ने बलबन को उलूग खाँ की उपाधि दिया और छत्र भी प्रदान किया। मंगोल नेता 'हलाकू' ने इसके समय आक्रमण किया था, जिसको बलबन ने असफल कर दिया।

- इस सुल्तान के बारे में यह कहा जाता है कि **यह एकमात्र सुल्तान था,** जो टोपी सीकर अपना जीवन चला रहा था। इसकी मृत्यु के बाद बलबन को सुल्तान बनाया गया।

बलबनी राजवंश (1265–1290) :

- इस वंश की स्थापना बलबन ने किया था, इसलिए यह नाम पड़ गया, जिसके शासक निम्नलिखित है–
- **बलबन (1256 – 1286)** – यह इल्तुमिश का गुलाम और इल्बारी तुर्क था। इसके बचपन का नाम **बहाउद्दीन** था। यह ग्यासुद्दीन बलबन के नाम से गद्दी पर आधा था। इसके बारे में कहा गया है कि यक एक छोटे से पद से उठकर सुल्तान के पद पर पहुँच गया।
- यह **तुर्कान–ए–चिहालगानी** का सदस्य था। इस संगठन को इसने समाप्त कर दिया।

  इसके समय में एक मात्र विद्रोह बंगाल में हुआ। बंगाल के इक्तादार तुगरिल खाँ ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। तब मुकद्दीर ने अभियान किया और सफल हुआ। खुश होकर बलबन ने मुकद्दीन को तुगरिलकुश की उपाधि से सम्मानित किया। बलबन ने स्वयं को उच्च कुल से जोड़ने के लिए अपने को **अफरासियाब का वंशज** बताया।
- बलबन ने अपने को **नियामते–खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि)** और **जिल्ल–ए–ईलाही** (ईश्वर की छाया) के साथ जोड़ लिया। इसका प्रसिद्ध कथन–''मैं निम्न कुल के व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरी आँखे क्रोध से जल उठती है और मेरा हाथ तलवार के समीप पहुँच जाता है।''

  बलबन भय का माहौल कायम करने के लिए तलवारधारी सुरक्षा कर्मियों से घिरा रहता था। इसने अपने राजदरबार में **हँसने पर भी प्रतिबंध** लगा दिया था।
- बलबन ने सैन्य व्यवस्था में सुधार करते हुए **'दीवान–ए–अर्ज' (सैन्य विभाग)** का गठन किया था।
- इसने **फारसी परम्परा** (ईरानी परम्परा) पर आधारित **नौरोज प्रथा** को शुरू किया।
- इसने ईरानी परम्परा पर अपने राजदरबार को सजाया था।
- इसने ईरानी परम्परा पर आधारित **सिजदा** (घुटने के बल बैठकर अभिवादन करना) और **पाबोस** (पेट के बल लेटकर सुल्तान के पैरों को चुमना) की शुरूआत की थी।
- इसने **लौह एवं रक्त''** की नीति के अन्तर्गत आक्रमण करने के पश्चात् पुरूषों का कत्लेआम किया जाता था। महिलाएँ तथा बच्चों को कैद कर लिया जाता था।

  इसने स्थापत्य कला के क्षेत्र में दिल्ली में स्वयं का मकबरा और लाल महल का निर्माण कराया।
- इस्लामिक शैली पर आधारित भारत में पहला मकबरा **बलबन का मकबरा** है।

  बलबन ने अपने बड़े पुत्र **कैखुसरो** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।
- **कैकुबाद और क्यूमर्श (1287–1290)** – दिल्ली के सरदारों ने कैखुसरो के बदले कैकुबाद को सुल्तान बना दिया। लेकिन कुछ ही समय में यह लकवाग्रस्त हो गए तब 3 वर्ष का छोटे बालक क्यूमर्श को सुल्तान बनाया गया। जलालुद्दीन फिरोज खिलजी नामक व्यक्ति ने कैकुबाद को यमुना में फेंक दिया और क्युमर्श का वध कर दिया। इस प्रकार गुलाम वंश का अंत हुआ और खिलजी वंश स्थापित हुआ।

खिलजी वंश (1290–1320)

- गुलाम वंश के बाद दिल्ली की गद्दी पर खिलजी वंश स्थापित हुआ। इतिहास में खिलजी वंश की स्थापना को खिलजी क्रांति की संज्ञा दिया गया है, क्योंकि यहाँ पर पहली बार महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई पड़ता हे। जैसे–

(1) पहली बार खिलजी वंश के शासकों ने धर्म और राजनीति को अलग किया और खलीफा और उलेमा की बातों को मानने से इंकार कर दिया।

(2) पहली बार इस वंश के शासकों ने अपने क्षेत्र का विस्तार सुदूर दक्षिण भारत तक किया।

(3) इस वंश के शासकों ने दैवीय अधिकार सिद्धांत को गलत साबित कर दिया और यह स्पष्ट कि निम्न कुल में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी अपने योग्यता के बल पर सुल्तान बन सकता है।

अफगानिस्तान की नदी **हेलमन्द** के किनारे के क्षेत्र को खिलजी कहा गया है और जो लोग इस क्षेत्र में निवासी किये उनको भी खिलजी कहा गया है और जो लोग इस क्षेत्र में निवास किये उनको भी खिलजी कहा गया। जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के पूर्वज इसी क्षेत्र के निवासी थे, इसलिए इसने जिस वंश को स्थापित किया वह इतिहास में खिलजी वंश कहलाया, जिसके महत्वपूर्ण शासक निम्नलिखित हैं–

- **जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290–1296)**–यह खिलजी वंश का संस्थापक था। इसने गुलाम वंश के अंतिम शासक क्यूमर्श का वध करके गद्दी को प्राप्त किया था। इसे इतिहास में उदारवादी और विश्वासी शासक माना गया है। अधिक विश्वास करने के कारण इसकी हत्या भी कर दिया गया। इसने दिल्ली के समीप कैकुबाद द्वारा निर्मित किलाखोरी के महल में अपना राज्याभिषेक संपन्न कराया। इसके समय में बंगाल के प्रांतपति मलिक छज्जू ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया तब अलाउद्दीन खिलजी ने इसके विद्रोह को कुचल दिया। खुश होकर सुल्तान ने अपने भतीजे अलाउद्दीन खिलजी को इलाहाबाद के समीप कड़ामानिकपुर का इक्तादार बना दिया।

इस सुल्तान के समय में मंगोल ने नेता उलगू ने आक्रमण किया लेकिन वह अपने चार हजार समर्थकों के साथ इस्लाम धर्म को स्वीकार करते हुए भारत में रहने का निश्चय किया। सुल्तान ने पुत्री का विवाह भी उलगू के साथ कर दिया और इन लोगों को रहने के लिए दिल्ली के समीप यमुना के किनारे मुगलपुर नामक शहर बसाया गया। यही मंगोल लोग इतिहास में **नवीन मुसलमान** कहलाये।

देवगिरी के सफल अभियान से वापस आकर अलाउद्दीन खिलजी कड़ामानिकपुर में सुल्तान को आमंत्रित किया। गले मिलने के क्रम में अलाउद्दीन खिलजी को सुल्तान घोषित किया गया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 – 1316) :

- यह खिलजी वंश के साथ–साथ दिल्ली सल्तनत का सबसे योग्य शासक था। इसने उलगू के साथ–साथ 4000 नवीन मुसलमानों की हत्या कर दी। इसके बचपन का नाम अली और गुरशास्प था। इसने बलबन द्वारा निर्मित लाल महल में राज्यभिषेक के तुरंत बाद **एक नवीन धर्म चलाने** और **विश्व विजय** करने की अपनी सोच को दिल्ली के कोतवाल आलाउमुल्क के समझाने पर त्याग दिया।
- **बरनी का कथन–**''जब जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के कटे हुए सर से खून टपक रहा था उसी वक्त अलाउद्दीन खिलजी को सुल्तान घोषित किया जा रहा था।''
- अलाउद्दीन खिलजी ने **सिकन्दर सानी** या सिकंदर–II की उपाधि धारण की थी।

इसने खलीफा और उलेमा की बात मानने से इन्कार कद दिया, जिसको राजत्व सिद्धांत कहते हैं। इसका प्रसिद्ध कथन–''मैं शरियत (इस्लामिक कानून) के अनुसार कार्य करना नहीं जानता हूँ, मेरे दिल और दिमाग में जो बात आती है, वही करता हूँ।''

इसने गद्दी पर आने के साथ सर्वप्रथम गृहनीति या आंतरिक नीति में सुधार के लिए चार राजकीय अध्यादेश जारी किये, जो पूर्ण रूप से सफल रहा। जैसे–

(1) मादक पदार्थ की बिक्री और सेवन पर पूर्ण प्रतिबंध।
(2) सार्वजनिक समारोह, मिलन और विवाह आदि पर प्रतिबंध।
(3) आमिर या सामंत या धार्मिक कार्यों के लिए दी गई भूमि को छीनकर खालसा भूमि में परिवर्तन कर दिया।
(4) उपर्युक्त तीनों पर नजर रखने के लिए **बरीद (गुप्तचर)** की नियुक्ति की गयी।

- **सैन्य अभियान–**आंतरिक नीति के बाद इसने सैन्य अभियान किया जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

राज्य	वर्ष	राजा (शासक)
गुजरात	(1298)	राजा करण
रणथम्भौर	(1301)	हम्मीरदेव
मेवाड़	(1303)	राणा रतन सिंह
मालवा	(1305)	महलक देव
जालौर	(1305)	कान्हन देव
देवगिरि	(1307–1308)	रामचन्द्र देव
तेलंगाना	(1309–1310)	प्रतापरूद्र देव
होयसल	(1310–1311)	वीरबल्लाल–III
पाण्ड्य राज्य	(1311)	वीर पाण्ड्य

- **गुजरात–**नुसरत खाँ के नेतृत्व में यह अभियान किया गया। समुद्र तक अपनी पहुँच बनाने के लिए यह अभियान किया गया था, जो सफल रहा। इसी अभियान में नुसरत खाँ ने मलिक काफूर को एक हजार दीनार में खरीदकर दिल्ली भेज दिया। कालांतर में मलिक काफूर अलाउद्दीन खिलजी के सबसे विश्वासपात्र व्यक्ति बन गये।
- **गुजरात** अभियान में **मलिक काफूर** को खरीदा गया है।
- मलिक काफूर को **हजार दिनारी** कहा गया है।
- **रणथम्भौर–**यहाँ के शासक वीरगति को प्राप्त हुए और महारानी ने अपने सगे संबंधियों के साथ जौहर व्रत का पालन किया।
- **मेवाड़–**राजपूताना क्षेत्र का यह सबसे शक्तिशाली राज्य था। यहाँ के शासक राणा रतन सिंह थे, जिनकी पत्नी का नाम पद्मिनी था। इतिहासकारों के अनुसार किया था। राणा रतन सिंह के वीरगति प्राप्त होने के बाद पदमिनी ने जौररव्रत का पालन कर लिया।
- इस अभियान में **अमीर खुसरो** युद्ध भूमि में मौजूद थे।

अलाउद्दीन खिलजी ने मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ का नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया और अपने पुत्र खिज्रखाँ को वहाँ का अधिकारी नियुक्त कर लिया।

- **मालवा–**यहा के शासक भी वीरगति को प्राप्त हुए और अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा पर नियंत्रण कर लिया।
- **जालौर–**इस अभियान के सफलता के बाद उत्तर भारत के अभियान का कार्य पूरा हो गया।
- **दक्षिण भारत के साथ अभियान–**उत्तर भारत के विजय के बाद दक्षिण भारत का अभियान किया गया। इस अभियान का श्रेय **मलिक काफूर** को दिया गया। इस अभियान का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य **धन प्राप्त** करना थसा। दक्षिण भारत के राज्य को दिल्ली सल्तनत में नहीं मिलाया गया। केवल इन राज्यों को वसूल किया गया, जिसमें प्रमुख राज्य निम्नलिखित है–

- **देवगिरी**–इस राज्य के शासन ने राजा करण को सरंक्षण दिया था परिणामस्वरूप अभियान किया गया। रास्ते में ही राजा करण की हत्या करके उनकी पुत्री देवल देवी को दिल्ली भेजा गया जहाँ पर खिज्र खाँ ने विवाह कर लिया। रामचन्द्र देव को भी दिल्ली भेजा गया जहाँ सुल्तान ने इनको अपना मित्र बना लिया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने यादव वंश के शासक **रामचन्द्र देव** को **रायरायन** की उपाधि से सम्मानित किया।
- **तेलंगना**–यहाँ के शासक प्रताप रूद्र देव ने जंजीर से बँधे हुए अपनी सोने की मूर्ति मलिक काफूर के पास आत्मसमर्पण भाव में भेज दिया।
- प्रतापरूद्र देव ने **गोलकुंडा खान** से प्राप्त **कोहिनूर हीरा** मलिक काफूर को दिया जिसको अलाउद्दीन खिलजी के पास भेज दिया गया।
- **होयसल**–यह राज्य कर्नाटक में स्थित था। यहाँ पर काकतीय वंश का शासन था। यहाँ के शासक को सोने का मुकुट और 10 लाख टंका देकर सम्मानित किया गया।
- इस राज्य की राजधानी का नाम द्वारसमुद्र / हालेबीड था।
- **पाण्ड्य**–यह तमिलनाडु मे स्थित था। गद्दी के लिए वीर पाण्ड्य और सुन्तद पाण्ड्य के बीच संघर्ष हुआ। मलिक काफूर ने सुन्दर पाण्ड्य का पक्ष लिया और वीर पाण्ड्य पराजित हो गया।
- दक्षिण भारत में सबसे अधिक धन संपत्ति इसी राज्य से मिली थी।

इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान पूर्ण रूप से सफल रहा।

- **स्थापत्य कला**–इस क्षेत्र में भी अलाउद्दीन खिलजी ने कार्य संपन्न किया था, जैसे–
- इसने दिल्ली मे **अलाई दरवाजा** का निर्माण करवाया था, जो कुतुबमीनार का दरवाजा था।
- इसने मंगोल नेता तरगी के आक्रमण से बचने के लिए दिल्ली के समीप सीरी का किला बनवाया और इसे अपनी राजधानी बना लिया।
- इसने जमात खाँ का मस्जिद, हौज–ए–खास और **हजार सितून (खम्भा) का महल** का निर्माण भी कराया। जमात खाँ का मस्जिद पूर्ण रूप से इस्लामिक पद्धति पर आधारित भारत का पहला मस्जिद है। इसने कुतुबमीनार से दोगुना ऊँची मीनार बनवाने के बारे में सोचा था, जो पूरा नहीं हुआ।

विविध तथ्य :

- अलाउद्दीन खिलजी ने सर्वप्रथम **स्थाई सेना** का गठन किया था।
- यह पहला सुल्तान था, जिसने सैनिकों को **नगद वेतन** दिया।
- यह प्रथम सुल्तान था, जिसने सेना के **वंशानुगत पद को समाप्त** करके योग्यता के आधार पर भर्ती किया।
- यह पहला शासक था, जिसने सेना में **दाग एवं हुलिया** व्यवस्था को लागू किया।
- यह पहला शासक था, जिसने 50 % कर वसूल किया।
- इसने दो नया कर **मकान कर** (घरी कर) और **चराइ कर** को लागू किया था।
- अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी को **विश्व का सुल्तान, जनता का चरवाहा** कहकर संबोधित किया है।
- मंगोल आक्रमण के समय सेनापति जफर खाँ की मृत्यु हो गई थी।
- **शिहाबुद्दीन उमर (1316)** –अलाउद्दीन खिलजी ने मलिक काफूर के बातों में आकर अपने छोटे पुत्र शिहाबुद्दीन उमर को उत्तराधिकारी घोषित किया गया। लेकिन संपूर्ण प्रशासन पर मलिक काफूर ने नियंत्रण कर लिया। केवल 35 दिनों के बाद इन दोनों की हत्या कर दी गयी और मुबारक खिलजी को गद्दी पर बैठाया गया।
- **मुबारक खिलजी (1316–1320) – "क्षमा करो और भूल जाओ"** इसकी नीति थी।
- इसने **स्वयं को खलीफा** घोषित कर दिया था।

यह प्रशासनिक कार्य में कम और भोगविलास से संबंधित कार्यों में अधिक रूची रखता था। बरनी के अनुसार यह राज्य दरबार में नग्न होकर दौड़ लगाया करता था और महिलाओं का वस्त्र धारण करके राजदरबार में आता था।

- **नासिरूद्दीन खुसरो शाह (1320)**–इसने **स्वयं को पैगम्बर का सेनापति** घोषित किया। गाजी मलिक नामक सरदार ने इसकी हत्या की। इस प्रकार खिलजी वंश का अंत हुआ और तुगलक वंश स्थापित हुआ।

तुगलक वंश (1320–1413)

- खिलजी वंश के बाद दिल्ली की गद्दी पर तुगलक वंश स्थापित हुआ। इस वंश के शासक तुर्कों के **करौना जाति** से संबंधित थे। महत्वपूर्ण शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–

- **ग्यासुद्दीन तुगलक (1320–1325)** – यह तुगलक वंश कस संस्थापक था। इसका मूल नाम गाजी मलिक था, जो ग्यासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर आया था। इसके व्यक्तित्व में ''रस्म–ए–मियान'' **(सख्ती, नरमी और संयम)** का समिश्रण था।
- इसने कर को घटाकर **1/10 या 1/11** भाग कर दिया।
- यह प्रथम सुल्तान था, जिसने सिंचाई के लिए **नहरों का निर्माण** करवाया।
- इसके समय में मंगोलों ने **29 बार** आक्रमण किया था और सभी को विफल कर दिया गया।

यह प्रथम सुल्तान था जिसने 'गाजी' और ''काफिरों का घातक'' की उपाधि धारण की थी। इसने दिल्ली के समीप **तुगलकाबाद** नामक नये नगर का निर्माण कराया, जिसको **56 कोट** का दूर्ग कहा गया है।

- प्रसिद्ध चिस्ती संत निजामुद्दीन औलिया के साथ इसका संबंध अच्छा नहीं था।
- सुल्तान को इंगित करते हुए **निजामुद्दीन औलिया** का कथन–**''दिल्ली अभी दूर है'' (हूनज दिल्ली दूरस्थ)।**

बंगाल अभियान से वापस लौटते समय दिल्ली के समीप अफगानपुर में लकड़ी के महल गिर जाने के कारण इसकी मृत्यु हो गई। जूना खाँ के निर्देश पर अहमद अयाज ने इस महल का निर्माण किया था। इसकी मृत्यु पर बरनी का कथन–''आसमान से अचानक बिजली गिरी और सुल्तान ढ़ेर हो गया।''

- इब्नबतूता का कथन–''सुल्तान का हत्यारा स्वयं उसका पुत्र जूना खाँ था।''

मुहम्मद–बिन–तुगलक (1325 – 1351) :

- ग्यासुद्दहीन तुगलक के बाद इनके पुत्र **जुना खाँ** मुहम्मद–बिन–तुगलक के नाम से गद्दी पर आया। दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों में यह **सबसे शिक्षित, योग्य** और **विद्वान** व्यक्ति था। फिर भी इसकी सभी योजना असफल हो गयी । यह **भूगोल, दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, नक्षत्रविज्ञान** और **ज्योतिष शास्त्र** के क्षेत्र में सभी सुल्तानों में प्रमुख था।
- प्रसिद्ध विद्वान **एलिफिन्स्टन** महोदय ने **मुहम्मद–बिन–तुगलक** को **पागल** सुल्तान कहा है।

इसको **आदर्शवादी अभागा, रक्त पिपासु, विरोधाभासों का समिश्रण, धनवानों का राजकुमार और अभाग्यशाली सुल्तान** भी कहा गया है। इसके योजनाओं को हमलोग निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं–

- **दो–अरब क्षेत्र में कर वृद्धि (1326–1327)**–इसने दोआब क्षेत्र में 50 प्रतिशत कर को लागू कर दिया। लेकिन इस क्षेत्र में अकाल पड़ गया। जब अधिकारियों ने जबरदस्ती कर वसूल करने का प्रयास किया तब इन लोगों ने विद्रोह कर दिया। सुल्तान ने इस आदेश को वापस ले लिया और किसानों के राहत के लिए एक विभाग की स्थापना की।
- इसने अमीर–ए–कोही (कृषि विभाग) को स्थापित किया था।
- **राजधानी परिवर्तन (1326 – 1327)** – यह सुल्तान का सबसे विवादास्पद कार्य था।
- इसने दिल्ली से **देवगिरी** राजधानी परिवर्तन किया और इसका नाम **दौलताबाद** रख दिया।

कुछ विद्वानों के अनुसार इसने दिल्ली के हिन्दुओं को दंडित करने के लिए राजधानी परिवर्तन किया था। अन्य विद्वानों के अनुसार मंगोल आक्रमण से बचने के लिए राजधानी परिवर्तन किया था।

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (1329) – इसने जब सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन को लागू किया तब टंका और जीतल का मूल्य एक समान हो गया, जिससे अर्थव्यवस्था में गड़बड़ी उत्पन्न हो गयी और नकली सिक्का अधिक संख्या में बाजार में आ गया। फरिस्ता के अनुसार पीतल का और बरनी के अनुसार तांबा का सिक्का जारी किया गया था। इसके पूर्व चीन के शासक **कुबलई खाँ** और फारस के शासक **गाईखाटू** ने सफलता पूर्वक सांकेतिक मुद्रा को चलाया था लेकिन इसकी योजना असफल हो गयी। इसने नकली सिक्का के बदले असली सिक्का देने की घोषणा की। परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से हानि उठाना पड़ी और जिनको नहीं मिला उन लोगों ने विद्रोह कर दिया।

- **कराचिल और खुरासन अभियान (1335)** – कराचिल के लिए इसने 10 हजार सैनिकों को भेजा लेकिन बरनी के अनुसार केवल 10 और इब्नबतूता के अनुसार केवल 3 सैनिक ही जीवित वापस आ सके। इसी प्रकार खुरासान अभियान के लिए 3 लाख 70 हजार सैनिको को नियुक्त किया और एक साल का अग्रिम वेतन भी दे दिया, जिससे राजकोष रिक्त हो गया। दूसरी तरफ यहाँ के शासक अबु सइद से मित्रवत संबंध कायम हो जाने पर आक्रमण नहीं किया गया और जब सेना को भंग किया गया तब इन लोगों ने विद्रोहियों का साथ दिया।

इस प्रकार इसकी सभी योजना असफल हो गई। जिसमें इसके भ्रष्ट अधिकारी भी दोषी थे। समय ने भी साथ नहीं दिया और सुल्तान होने के कारण यह भी दोष मुक्त नहीं थे।

विविध तथ्य :

- इसने दिल्ली में **जाँहपनाह नगर** का निर्माण कराया था।
- इसने दिल्ली के समीप **स्वर्गदुआरी** नामक शिविर का निर्माण कराया और राजधानी बनाया।
- यह एकमात्र सुल्तान है जो **होली** के त्योहारों में शामिल होता था।
- इसी के समय में **मोरक्को** का यात्री **इब्नबतूता** भारत आया था।
- इसी के समय में **हरिहर एवं बुक्का** ने स्वतंत्र विजयनगर राज्य की स्थापना **1336** में की।

- इसी के समय में हसनगंगू ने **1347** में स्वतंत्र विजयनगर राज्य की स्थापना **1336** में की।
- इसने रतन नामक हिन्दू को उच्च पद पर नियुक्त किया था।
- इसी के समय में तुगलक वंश के साथ–साथ दिल्ली सल्तनत की विघटन की प्रक्रिया शुरू हो गयी।
- सिंध जाने के क्रम में **थठ्ठा** के समीप गोंडाल नामक जगह पर इसकी मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु पर **बदायूँनी** का कथन–**''राजा को अपनी प्रजा से और प्रजा को अपनी राजा से मुक्ति मिल गयी।''**

फिरोजशाह तुगलक (1351–1388) :

- तुगलक वंश का यह सबसे महत्वपूर्ण शासक था। हेनरी **इलियट** ने इसको **दिल्ली सल्तनत का अकबर** कहा है, लेकिन यह कट्टर सुल्तान के रूप में अपने को स्थापित किया। अपने भाई मुहम्मद–बिन–तुगलक की मृत्यु के बाद थठ्ठा के समीप अपना राज्याभिषेक करवाया और दिल्ली पहुँचकर इसने विधिवत रूप से राज्यभिषेक संपन्न करवाया।
- यह दिल्ली सल्तनत का एकमात्र सुल्तान था जिसका राज्यभिषेक **दो बार** हुआ था।

इसने सभी क्षेत्रों में कार्य संपन्न किया जैसे–

- **कृषि**–इसने कृषि क्षेत्र में सुधार किया और **24 प्रकार** के कर को समाप्त करते हुए केवल चार कर रहने दिया। जैसे–**खराज, जजिया, जकात, खुम्स।** इसने सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया और नहरों का निर्माण कराया।
- दिल्ली सल्तनत में **सबसे अधिक नहरों** का निर्माण इसी ने कराया था।
- इसने दिल्ली के समीप **1200 फलों का बाग** लगाया परिणामस्वरूप दिल्ली में फलों के मूल्य में बहुत कमी आ गयी।
- इसने **हक–ए–शर्ब** या **उश्र** नामक सिंचाई कर को लागू किया।
- **शिक्षा एवं साहित्य** – यह शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में रूचि रखना था। इसने अपनी आत्मकथा **फतूहात–ए–फिरोजशाह** की रचना की। इसके **राज्य** दरबार में रहने वाले बरनी ने **तारिख–ए–फिरोजशाही** और **फतवा–ए–जहाँदारी** की रचना की। इसके आदेश पर ज्वालामुखी मंदिर से लुटे गए 1300 संस्कृत ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद अप्पाउद्दीन नामक विद्वान ने दलायते फिरोजशाही के नाम से किया। औषधि शास्त्र पर आधारित **सीरत–ए–फिरोजशाही** की रचना भी इसके आदेश पर हुआ।
- **मुद्रा, व्यवस्था**–इसने व्यापारिक लेन–देन को और सरल बनाने के लिए **'अद्धा एवं बिख'** नामक छोटा–छोटा सिक्का को जारी किया था।
- **सार्वजनिक कार्य**–इसने सबसे महत्वपूर्ण कार्य इसी क्षेत्र में किया। जैसे–
- इसने दिल्ली में एक सरकारी अस्पताल का निर्माण कराया, जिसको **दार–उल–सफा** कहा गया।
- इसने अनाथ मुस्लिम लड़की और बच्चों के लिए **दीवान–ए–खैरात** नामक विभाग की स्थापना की।
- यह प्रथम सुल्तान था, जिसने सरकारी धन उपलब्ध कराकर लोगों को **हज की यात्रा** पर भेजा।

इन सभी पर निगरानी रखने के लिए इसने एक सार्वजनिक विभाग की स्थापना भी की। दिल्ली सल्तनत के दूर–दराज क्षेत्रों में छोटे–छोटे अस्पताल, पीने के लिए कुआँ और पढ़ने के लए मदरसा का निर्माण कराया था।

- **दास प्रथा**–यह दासों का सबसे बड़ा शौकीन था। इसके पास एक लाख 80 हजार दास थे। इसकी देखभाल के लिए **दीवान–ए–बंदगान** नामक विभाग को स्थापित किया।
- **स्थापत्य कला**–इसने 300 नए नगरों का निर्माण कराया। इसमें **जौनपुर, फिरोजाबाद, फतेहाबाद और हिसार** आदि महत्वपूर्ण है। जौनपुर का निर्माण अपने भाई जूना खाँ की स्मृति में कराया था। इसका पसंदीदा नगर **फिरोजाबाद** था। इसने दिल्ली में **फिरोजशाह कोटला** का निर्माण भी कराया और **कुतुबमीनार** का पूनर्निर्माण भी कराया। इसने अशोक के दो स्तंभलेख **मेरठ और टोपरा** (हरियाणा) से लेकर फिरोजशाह कोटला दूर्ग में स्थापित किया।
- **सैन्य व्यवस्था**–इसके समय में सैन्य व्यवस्था कमजोर हुआ, क्योंकि इसने विभिन्न प्रकार का गलत निर्णय लिया। जैसे–
- इसने सैनिकों के पद को पुनः **वंशानुगत** बना दिया।
- इसने नगत वेतन के बदले पुनः **भूमि देने** की व्यवस्था को लागू कर दिया।
- इसने अलाउद्दीन खिलजी द्वारा ली गई सभी भूमि को पुनः वापस कर दिया।

इसने भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा दिया, क्योंकि इसने एक सैनिक को रिश्वत देने के लिए **टंका** अपने पास से दिया था।

- **धार्मिक नीति**–यह धर्म के मामले में कट्टर था। इसने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर को तोड़ दिया था। जिस प्रकार ग्यासुद्दीन तुगलक ने सिद्दीमौला नामक ब्राह्मण को जीवित जला दिया। उसी प्रकार इसने भी अपने धर्म की व्याख्या करने पर एक ब्राह्मण को जला दिया था।
- यह एकमात्र सुल्तान है, जिसने **ब्राह्मणों** से भी **जजिया** कर वसूल किया।

ग्यासुद्दीन तुगलक–II (1388 - 1394)

- फिरोजशाह तुगलक के बाद ग्यासुद्दीन तुगलक–II शासक बना। इसके बाद अबुबक्र गद्दी पर आया और इसके बाद क्रमानुसार, नासिरूद्दीन मुहम्मद शाह, हुमायूँ (अलाउद्दीन सिकन्दरशाह) और इसके बाद नासिरूद्दीन महमूद शाह आया।

नासिरूद्दीन महमूद शाह (1394 – 1413) :

- यह तुगलक वंश का **अंतिम** शासक था।
- इसके समय में मंगोल नेता **तैमूरलंग ने 1398** में भारत पर आक्रमण किया और तुगलक वंश का अंत हुआ।
- इसके समय में जौनपुर में स्वतंत्र **शर्की** वंश की स्थापना हुई।

इसकी मृत्यु के बाद गद्दी प्राप्त करने के लिए दौलत खाँ लोदी और खिज्र खाँ में संघर्ष हुआ। इसमें खिज्र खाँ विजयी हुआ और इसने सैय्यद वंश को स्थापित कर दिया।

सैय्यद वंश (1414 – 1450)

- इस वंश के बारे में जानकारी के लिए एक मात्र स्रोत तारिख–ए–मुबारकशाही है। प्रमुख शासकों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **खिज्र खाँ (1414–1421)**–यह सैय्यद वंश का संस्थापक था।
- इसने रैतर–ए–आला की उपाधी धारण की थी।

इसके शासक ने दौलत खाँ लोदी को पराजित किया था और तैमूरलंग के पुत्र शहरूप के प्रति वफादारी निभाते हुए नियमित रूप से उसको कर भेजता था।

- **मुबारक शाह (1421 – 1434)**–यह प्रथम शासक था, जिसने शाह की उपाधि धारण की और अपने नाम का सिक्का जारी किया। इसने खोक्खर को पराजित कर दिया, जिसका नेता जसरथ था।
- इसके राज्य दरबार में **याहिया–बिन–अहमद सरहिन्दी रहते थे, जिन्होंने तारिख–ए–मुबारकशाही की रचना की थी।**

इसने मुबारकाबाद नामक नये नगर का निर्माण कराकर उसका निरीक्षण कर रहा था। तब इसके वजीर सरवर–उल–मुल्क ने इसकी हत्या करा दी।

- **मुहम्मद शाह (1434–1445)**–यह सरवर–उल–मुल्क के सहयोग से गद्दी पर आया, लेकिन इसने कमाल–उल–मुल्क को वजीर बना दिया और सरवर–उल–मुल्क की हत्या करा दी।

इसके समय में मालवा के शासक महमूद खिलजी ने दिल्ली की तरफ अभियान किया तब सुल्तान ने बहलोल–लोदी की सहायता के लिए बुलाया। परिणामस्वरूप मालवा का शासक वापस लौट गया। खुश होकर सुल्तान ने बहलोल लोदी को खान–ए–खाना (यार वफादार) की उपाधि प्रदान की और उसे अपना पुत्र (फर्जन्द) कहकर संबोधित किया।

- **अलाउद्दीन आलमशाह (1445 – 1450)**–यह सैय्यद वंश का अंतिम शासक था। वजीर हामिद खाँ से अनबन होने के कारण सुल्तान दिल्ली से बदायूँ गया और वहीं पर 1476 में इसकी मृत्यु हुई।

दिल्ली की गद्दी खाली होने पर हामीद खाँ ने बहलोल लोदी को आमंत्रित किया। दिल्ली पहुँचकर बहलोल लोदी ने हामीद खाँ की हत्या की। सैय्यद वंश का अंत और लोदी वंश स्थापित हुआ।

लोदी वंश (1451 – 1526)

- दिल्ली की गद्दी पर पहली बार तुर्कों को चुनौती देते हुए अफगानियों ने अपनी सत्ता को स्थापित किया। यह लोग अफगानिस्तान के गिलजाई कबीला के सबसे महत्वपूर्ण शाखा शाहुखेल से संबंधित थे। इसके प्रमुख शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–

बहलोल लोदी (1451 – 1589) :

- यह लोदी वंश का संस्थापक था। यह वंश दिल्ली सल्तनत का अंतिम वंश था। इसके दरबारी कवि दाऊदी ने इसको उदार प्रवृत्ति का सुल्तान कहा है। दाऊदी के अनुसार यह अपने सरदारों को ''मकसद–ए–अली'' कहकर संबोधित करता था और उनके खड़े रहने पर स्वयं भी खड़ा रहता था और उनके बैठने के पश्चात् राज्य सिंहासन के बगल में नीचे बैठकर राजकीय कार्य को संपन्न करता था।
- यह दिल्ली की गद्दी पर अफगानी सत्ता को स्थापित करने वाला प्रथम सुल्तान था।

इसने जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया, जो इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। जौनपुर का **पूर्व का सिराज** कहा गया है **जहाँ पर शर्की वंश के शासकों ने अटाला देवी** के मस्जिद का निर्माण कराया था। इसने ग्वालियर के शासक मानसिंह को पराजित करके 80 लाख टंका वसूल किया था।

- **सिकंदर लोदी (1489 – 1517)** – यह लोदी वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने गद्दी पर आने के साथ भूमि की पैमाइश के लिए गज–ए–सिकन्दरी नामक पैमाना को जारी किया, जो 30 इंच का होता था। यह पैमाना मुगलकाल में भी चला।

यह सुल्तान 'गुलरूखी' नामक से फारसी भाषा में कविताओं की रचना करता था। इसके समय में लज्जत–ए–सिकन्दरी, तिब्बी–ए–सिकन्दरी नाम से फारसी भाषा मं ग्रंथ लिखा गया। मियाँ भुआ नामक विद्वान ने फरंहगे–सिकन्दरी ग्रंथ की रचना की थी। यह फिरोजशाह तुगलक के समान कट्टर सुल्तान था। इसने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर के मूर्ति को तोड़कर मांस तौलने के लिए कसाइयों को दे दिया।

इसने स्थापत्य कला के क्षेत्र में अपने पिता बहलोल लोदी का मकबरा बनवाया और इसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने इसका मकबरा बनवाया। इसलिए प्रसिद्ध विद्वान पर्सीब्राउन ने लोदी वंश के काल को **मकबरों का काल** कहा है।

- इसने 1504 में यमुना के किनारे आगरा शहर को स्थापित किया और 1506 में इसको राजधानी बना लिया।
- **इब्राहिम लोदी (1517 – 1526)**–यह दिल्ली सल्तनत का और लोदी वंश का अंतिम शासक था। यह लोदी, फारमूली, नुहानी/लोहानी लोगों का समर्थन से गद्दी पर आया था, लेकिन अब इन्हीं लोगों को दबाने का कार्य शुरू किया जो पतन का कारण बना। मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने 1517 – 1518 में दिल्ली के समीप घटोली के युद्ध में इसको पराजित कर दिया था।

आलम खाँ लोदी और दिलावर खाँ लोदी ने भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। कुछ विद्वानों के अनुसार राणा सांगा ने भी आमंत्रित किया था। परिणामस्वरूप 1526 में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ। इस प्रकार लोदी वंश के साथ–साथ दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ और मुगल वंश स्थापित हुआ।

दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

- इस प्रशासन में अरबी और फारसी परंपराओं का सम्मिश्रण दिखलाई पड़ता है। अध्ययन की सुविधा के लिए हमलोगों इसको दो भागों विभाजित कर सकते हैं जैसे–

दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन प्रांतीय प्रशासन

- **खलीफा**–दिल्ली सल्तनत के प्रशासन में खलीफा का प्रथम स्थान था। अधिकांश वंश के शासकों ने खलीफा के आदेशानुसार कार्य किया, लेकिन खिलजी वंश के शासकों ने इनकी बात मानने से इंकार कर दिया।
- **सुल्तान**–खलीफा के बाद इनका स्थान था। यह व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के सर्वोच्च अधिकारी थे, तथा अंतिम निर्णय लेने का अधिकार भी इनके पास सुरक्षित था।
- **अमीर**–सुल्तान के बाद यह लोग सबसे शक्तिशाली थे, लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने इनकी भूमि को छीनकर खालसा भूमि में परिवर्तित करके शक्तिहीन बना दिया।
- **मंत्रिपरिषद्**–सुल्तान को सहायता देने के लिए मजलिस–ए–खलवत (मंत्रिपरिषद्) का गठन किया गया था। इसकी बैठक मजलिस–ए–खास में होती थी। कुछ प्रमुख अधिकारी एवं विभाग का वर्णन निम्नलिखित है–
- **दीवान–ए–अर्ज**–यह सैन्य विभाग था, जिसकी स्थापना बलबन ने की और इसका अधिकारी 'आरिज–ए–मुमालिक' कहलाता था।
- **सद्र–उस–सुदूर**–यह केवल धार्मिक मामलों से संबंधित न्याय करने वाला अधिकार था।
- **दीवान–ए–ईंशा**–यह गृह विभाग था, अर्थात राजकीय पत्र व्यवहार को देखनेवाला सचिवालय के समान विभाग था, जिसका मुख्य अधिकारी दबीर–ए–मुमालिक था।
- **दीवान–ए–रसातल**–यह विदेशी विभाग था। विदशों से पत्र व्यवहार करना और विदेशी यात्रियों की देखभाल करने वाला विभाग।
- **दीवान–ए–वकूफ**–इसकी स्थापना जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने किया था, जो बकाये धन की वसूली करता था।
- **काजी–उल–कजात**–यह मुख्य न्यायाधीश था। इसकी सहायता काजी, मुफ्ती और सईद नामक अधिकारी करते थे। सद्र–उस–सुदूर और काजी–उल–कजात नामक पद पर एक ही व्यक्ति धारण करता था।
- **सैन्य प्रशासन**–दिल्ली सल्तनत के विस्तार में सैन्य प्रशासन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस समय पैदल सेना को पायक कहा गया। इल्तुमिश ने केन्द्रीय स्तर पर जो सेना नियुक्त किया था उसको 'हश्म–ए–अतरफ' कहा गया है। अलाउद्दीन खिलजी ने 4 लाख 75 हजार स्थाई सेना को नियुक्त किया था, जिसको 'खाशखेल' कहा गया। अंगरक्षकों को जहाँदार और इसके प्रधान को 'सर–ए–जहाँदार' कहा गया है।

इस समय अश्वरोही सेना सबसे मजबूत आधार था, जो चंगेज खाँ की दशमलव प्रणाली पर आधारित था। जैसे–

10 अश्वरोही	=	1 सर–ए–खेल
10 सर–ए–खेल	=	1 सिपहसालार
10 सिपहलसालार	=	1 अमीर
10 अमीर	=	1 मलिक
10 मलिक	=	1 खान

इस समय दुर्ग की दीवार को या विशाल दरवाजा को तोड़ने के लिए **मांगलिक** या **अर्राद** और **चर्ख** का प्रयोग किया जाता था, जो बड़े–बड़े पत्थर को फेंकने वाला हथियार था।

- **राजस्व प्रशासन** – यह प्रशासन का आर्थिक आधार था।

प्रमुख कर :

- **खराज**–भू–राजस्व को खराज कहा गया है। यह आय का सबसे प्रमुख स्रोत था। उपज का 1/3 लिया जाता था। लेकिन अल्लाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद–बिन–तुगलक ने 50 % इसको वसूल किया था।
- **जजिया**–कुछ विद्वानों के अनुसार यह गैर मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था। अन्य विद्वानों के अनुसार जान–माल की सुरक्षा

के बदले यह कर लिया जाता था। संपन्न व्यक्ति से 40 टंका, मध्यम वर्ग से 20 टंका और निम्न श्रेणी के लोगों से 10 टंका प्रतिवर्ष लिया जाता था।

- **जकात/सदका–**यह धार्मिक कर था, जो केवल मुस्लिमों से लिया जाता था और उन्हीं पर खर्च भी किया जाता था। यह आय का 2.5% लिया जाता था।
- **खुम्स–**आक्रमण के समय लुटे गए धन संपत्ति को, खम्स कहा गया है। शरियत के अनुसार 80 % सैनिकों को दिया जाता था और 20 % सुल्तान रखता था, लेकिन अलाउद्दीन खिलजी ने इस विषय को उलट दिया।

भूमि का विभाजन :

- **खालसा भूमि–**राजकीय भूमि को खालसा भूमि कहा गया। इसकी आमदनी शत प्रतिशत राज घराने पर खर्च की जाती थी।
- **सामंतों की भूमि–**साल में एक बार सामंत लोग कर के साथ राजदरबार में हाजिर होते थे।
- **जागिर भूमि–**वेतन के बदले दिया जाने वाला भूमि।
- **इनाम/वक्फ भूमि–**धार्मिक कार्य के लिए दिया गया कर मुक्त भूमि।

न्याय एवं दण्ड व्यवस्था :

- यह कठोर था, क्योंकि मृत्युदंड, अंगभंग, देश निर्वासन और आर्थिक रूप से भी दण्डित किया जाता था। शरियत के अनुसार सभी सुल्तानों का यह कर्तव्य था कि दारूल–हर्ब (काफिरों का देश) को दारूल–इस्लाम (इस्लाम का देश) में परिवर्तित करना। इस समय 4 स्रोतों के आधार पर न्यायायिक फैसला लिया जाता था जैसे–कुरान, हदीश, इजमा, कयास (तर्क–वितर्क के आधार पर)।

प्रांतीय प्रशासन :

- प्रशासन की सुविधा के लिए सल्तनत को विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया गया था। जैसे–

प्रशासनिक इकाई	अधिकारी
सल्तनत (सम्राज्य)	सुल्तान
इक्ता (प्रांत)	इक्तादार, नायब, वलि
शक (जिला)	शिकदार
परगना (अनुमण्डल)	आमील
सदी (100 गाँवों का समूह)	आमीर–ए–सदा

- **बाजार नियंत्रण व्यवस्था :**

बाजार नियंत्रण व्यवस्था को अलाउद्दीन खिलजी ने लागू किया था। अधिकांश विद्वानों के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी अपने सैनिकों को कम वेतन देकर दैनिक जीवन से संबंधित सभी आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराना चाहता था। इसने बदायूँ के समीप एक बहुत बड़े बाजार की स्थापना किया, जिसको सराय–ए–अदल (धर्म का स्थान) कहा गया है। यहाँ पर सभी आवश्यक वस्तुओं के साथ पशु–पक्षी और गुलामों की भी बिक्री किया जाता था। और सभी के मूल्य निर्धारित कर दिये गये थे। जैसे–साढ़े सात जीतल में एक मन गेहूँ, पाँच जीतल में एक मन चावल, पाँच जीतल में एक मन दाल। (1 मन = 15 सेर होता था)

व्यापारी लोग दीवान–ए–रियासत में अपना पंजीकरण कराते थे जिसकी स्थापना अलाउद्दीन खिलजी ने किया था। बाजार नियंत्रण व्यवस्था पर निगरानी रखने के लिए कुछ प्रमुख अधिकारियों की नियुक्ति भी किया गया था। जैसे–

दीवान–ए–रियासत
शहना–ए–मण्डी
बरीद
मुन्हियान

अलाउद्दीन खिलजी ने पुलिस विभाग की भी स्थापना की थी, जिसको दीवान–ए–रियायत कहा गया है। इसने भ्रष्टाचार को रोकने के लिए यह आदेश जारी किया था कि कोई भी व्यापारी अगर कम तौल देता है तो उसके शरीर से उतना ही मांस काट लिया जाए। यह जब तक जीवित रहे बाजार नियंत्रण प्रणाली सफल रहा। इनके मृत्यु के साथ ही यह समाप्त हो गया, क्योंकि यह अर्थशास्त्र के नियमों पर आधारित नहीं था।

सूफी आंदोलन

- मध्यकाल में हिन्दू धर्म के लोगों ने जिस प्रकार भक्ति आंदोलन को चलाया उसी प्रकार समाज और धर्म के क्षेत्र में सुधार के लिए इस्लाम

धर्म के सुधारकों ने जो आंदोलन चलाया,ख उसे सूफी आंदोलन कहा गया। सूफी शब्द के जन्म के बारे में विभिन्न मत दिया गया है। जैसे–

- **सफा–**इसका शाब्दिक अर्थ पवित्र होता है अर्थात् जिन संतों ने पवित्रमय जीवन व्यतीत करते हुए अपने मतों का प्रचार–प्रसार किया उनको सूफी कहा गया।
- **सूफ–**इसका शाब्दिक अर्थ ऊन होता है। पैगम्बर साहब के बाद जिन संतों ने ऊनी वस्त्र पहनकर अपने मतों का प्रचार–प्रसार किया वे सूफी कहलाए।
- **सोफिया–**यह ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है। अर्थात् जो संत सम्पूर्ण रूप से ज्ञान परिमार्जित होकर अपने मतों का प्रचार–प्रसार किये वह सूफी कहलाए।
- **अन्य मत–**इसके अनुसार पैगम्बर साहब के द्वारा मक्का की पहाड़ी पर निर्मित मस्जिद के सामने ईश्वर की अराधना में अपना जीवन समर्पित करने वाले और अपने मतों का प्रचार–प्रसार करने वाले संत सूफी कहलाए।

इस समय 12 प्रकार के सूफी सम्प्रदाय या सिलसिला प्रचलन में थे, जिसमें चिश्ती और सुहरवर्दी सबसे अधिक लोकप्रिय हो गये।

यह लोग समाँ और रक्श (नृतय और संगीत) के माध्यम से अपने मतों का प्रचार–प्रसार करते थे। प्रारंभिक संतों में रबिया और मंसूर हल्लाज का नाम लिया जाता है। मंसूर हल्लाज प्रथम सूफी संत थे, जिन्होंने सर्वप्रथम अपने को अनहलक (नास्तिक) घोषित कर दिया। परिणामस्वरूप इनको फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

- सूफी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग बसरा के निवासी जाहिज ने किया था।

कुछ प्रमुख शब्दावली :

शब्दावली	अर्थ
पीर	गुरू
मुरीद	शिष्ट
वलि	उत्तराधिकारी
खानकाह	मठ/आश्रम/दरगाह

कुछ प्रमुख सिलसिला / सम्प्रदाय :

सम्प्रदाय का नाम	संस्थापक
चिश्ती सम्प्रदाय	मोईनुद्दीन चिश्ती
सुहरवर्दी सम्प्रदाय	शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी
कादिरी सम्प्रदाय	अब्दुल कादिज जिलानी
सतारी सम्प्रदाय	अब्दुल्ला सतारी
फिरदौसी सम्प्रदाय	शेख बदरूद्दीन समरकंदी
नक्शबंदी सम्प्रदाय	उबेदुल्लाह
रौशनियाँ सम्प्रदाय	बयाजिद
ऋषि सम्प्रदाय	बाबा नुरूद्दीन

- **चिश्ती सम्प्रदाय –** यह सबसे लोकप्रिय संप्रदाय था। इस संप्रदाय के लोग धन–संपत्ति और किसी भी प्रकार के पद को ग्रहण नहीं करते थे। कुछ प्रमुख संत निम्नलिखित हैं–
- **मोईनुद्दीन चिश्ती–**यह चिश्ती संप्रदाय के प्रवर्तक थे। इसने अजमेर को अपना केन्द्र बनाया।
- मोईनुद्दीन चिश्ती मुहम्मद गौरी के साथ भारत आये थे।

इनके मकबरे का निर्माण अजमेर में इल्तुमिश के द्वारा संपन्न कराया गया था।

- **शेख–ख्वाजा–कुतुबुद्दीन–बख्तियार–काकी–**यह मोईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे। इन्हीं की स्मृति में कुतुबमिनार का निर्माण कराया गया। इनको शेख–उल–इस्लाम का पद दिया गया, लेकिन इन्होंने इन्कार कर दिया।
- **शेख–ख्वाजा–फरीदुद्दीन–गंज–शंकर/बाबा फरीद–**यह काकी के शिष्य थे। इन्होंने पंजाब को अपना कर्मस्थली बनाया। यह प्रथम संत थे जिन्होंने पंजाबी भाषा में उपदेश दिया इसलिए इसे पंजाब का संत कहा गया है। इनकाा उपदेश आदि–ग्रंथ में शामिल है।
- **निजामुद्दीन औलिया–**यह बाबा फरीद के शिष्य थे यह सबसे लोकप्रिय चिश्ती संत थे।
- इनका संबंध ग्यासुद्दीन तुगलक से मधुर नहीं था, जबकि मुहम्मद–बिन–तुगलक के साथ इसका संबंध बहुत अच्छा था।

यह प्रथम सूफी संत हैं, जिन्होंने इस संप्रदाय में योग क्रिया को अपनाया। जैसे–प्रणायम, अनुलोम–विलोम आदि, इसलिए इसको यौगिक बाबा भी कहा गया है।

- मुहम्मबद–बिन–तुगलक ने दिल्ली में इनका मकबरा बनवाया था।

इन्होंने अपनी कार्यस्थली भी दिल्ली को बनाया और इनके बहुत सारे प्रिय शिष्य थे। इन्होंने ग्यासुद्दीन तुगलक के संदर्भ में कहा था, ''दिल्ली अभी दूर है'' (हूनज दिल्ली दूरस्थ)।

- निजामुद्दीन औलिया के शिष्य शेख बुरहानुद्दीन गरीब ने इस आंदोलन को उत्तर भारत से दक्षिण भारत में ले जाकर प्रचार–प्रसार किया।
- नासिरूद्दीन महमूद को चिराग–ए–दिल्ली तथा मु. गेसुदराज को बंदानवाज कहा गया है।
- **सुहरवर्दी संप्रदाय–**चिश्ती संप्रदाय के बाद यह दूसरा सबसे लोकप्रिय सम्प्रदाय था। इस संप्रदाय के लोग धन–संपत्ति के साथ पद भी ग्रहण करते थे। इनका मुख्य केन्द्र सिंध और मुल्तान था। इसको लोकप्रिय बनाने का कार्य बहाउद्दीन जकारिया ने किया था। इन्होंने शेख–उल–इस्लाम का पद ग्रहण कर लिया। हामीदुद्दीन नागौरी भी इसी संप्रदाय के संत थे।
- **सतारी संप्रदाय–**शेख–अब्दुल्ला सतारी ने इसकी स्थापना की। बिहार इसका मुख्य केन्द्र था।
- **कादिरी संप्रदाय–**इसकी स्थापना अब्दुल कादिर जिलानी ने किया था। भरत में इसको लोकप्रिय बनाने का कार्य मुहम्मद गौस ने किया था। मुगल राजकुमार दारा–शिकोह भी इसी संप्रदाय के थे, जिनको गुरू का नाम मियाँमीर था।
- **फिरदौसी संप्रदाय–**शेख सरफुद्दीन–याहिया मनेरी इस संप्रदाय के सबसे लोकप्रिय संत थे।
- इसका मुख्य केन्द्र बिहार था।
- **नक्शबंदी संप्रदाय–**इसके प्रवर्तक उबेदुल्ला थे। इस संप्रदाय के लोक नक्शा बनाकर चित्र को तैयार करते थे, इसलिए नक्शबंदी नाम पड़ गया। भारत में इसको लोकप्रिय बनाने का काम बाकी–बिल्लाह ने किया था। इसी संप्रदाय के शेख–अहमद–सरहिन्दी भी थे, जिनको मुजतिद (धर्म सुधारक) कहा गया है।
- इन्होंने अकबर की धार्मिक नीतियों की आलोचना की थी। इसलिए जहाँगीर ने इनको कैदखाने में डाल दिया।
- **रौशनिया संप्रदाय–**इसके प्रवर्तक शेख बयाजिद थे। समाज और धर्म के क्षेत्र में सुधार करना इसका मुख्य उद्देश्य था।
- **ऋषि संप्रदाय–**यह कश्मीर के क्षेत्र में लोकप्रिय था। आज भी दरगाह सुरक्षित रूप में अवस्थित है।

इस प्रकार सूफी आंदोलन ने समाज और धर्म के साथ–साथ भक्ति आंदोलन को भी प्रभावित किया साथ ही भक्ति आंदोलन से प्रभावित भी हुआ।

भक्ति आंदोलन

जिस प्रकार सूफी आंदोलन चलाया जा रहा था, उसी प्रकार सुनातन धम्र के लोगों ने भक्ति आंदोलन को संचालित किया। सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक कारण के साथ–साथ भक्ति मार्ग में सरलता को भी शामिल किया जाता है, जिसने इसके उदय में सहयोग किया।

भक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है ईश्वर के चरणों में अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर देना। भक्ति आंदोलन के अन्तर्गत मोक्ष प्राप्ति के तीन महत्वपूर्ण साधर है। ज्ञान, कर्म और भक्ति। इसमें भक्ति पर सबसे अधिक जोर दिया गया है। इसके स्वरूप को दो भागों में बांटा गया है। जैसे–

सगुण–जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता हो। सरल शब्दों में मूर्तिपूजा को मानने वाले सगुण कहलाये। जैसे–तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, रामदास आदि।

निर्गुण–जो संत निराकर ब्रह्म की आराधना करते थे। सरल शब्दों में जो मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करते थे, वह निर्गुण कहलाए जैसे–कबीरदास, रैदास, दादूदयाल आदि।

प्रमुख संत :

भक्ति आंदोलन को शुरू करने का श्रेय रामानुज को दिया जाता है, जिन्होंने आदि गुरू शंकराचार्य के सिद्धांत अद्वैतवाद के विरोध में भक्ति आंदोलन को प्रारंभ किया था।

आदि गुरू शंकराचार्य केरल में कलादि गाँव के रहने वाले थे। इनका सिद्धांत मायावाद के नाम से भी हमलोग जानते हैं। इन्होनं भारत में चारों दिशाओं में चार पीठ की स्थापना की थी। 12वीं शदी में तमिलनाडु के रहने वाले रामानुज ने भक्ति आंदोलन को शुरू किया। इनके 12 प्रमुख शिष्यों ने इस आंदोलन का प्रचार–प्रसार किया। कुछ प्रमुख संत और उनके द्वारा स्थापित मत/सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

शंकराचार्य	–	अद्वैतवाद
रामानुज	–	विशिष्टाद्वैतवाद
निम्बार्क	–	द्वैताद्वैतवाद
बल्लभाचार्य/विष्णुस्वामी	–	शुद्धाद्वैतवाद

प्रमुख संत

- **रामानंद–**यह रामानुज के शिष्य थे। यह भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से लाकर उत्तर भारत में इसका प्रचार प्रसार किया। इन्होंने राम और सीता की आराधना का संदेश दिया। इन्होंने प्रयाग की अपना कार्यस्थली बनाया। यह प्रथम संत थे जिन्होंने हिन्दी भाषा में अपना उपदेश दिया। इनके शिष्यों में कबीरदास, रैदास, दादूदयाल आदि का नाम शामिल है।
- **कबीरदास–**यह निर्गुण मत के सबसे बड़े संत थे। यह गुरूनानक देव के समान मानवतावादी कवि भी थे। यह उत्तर प्रदेश में लतरहारा के रहने वाले थे। यह ब्राह्मण माँ के पुत्र थे, लेकिन इनका पालन जुलाहा परिवार ने किया था। इसलिए इनके व्यक्तित्व पर हिंदू और

मुस्लिम दोनों धर्मों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। यह पूर्ण रूप से गृहस्थ्रा जीवन में रहकर ईश्वर की अराधना किया। इन्होंने ऊँच–नीच, जात–पात, छुआछूत, मूर्तिपूजा आदि का विरोध किया।

बीजक के साथ सबद, रमैनी और साखी से भी हमलोगों को जानकारी मिलता है। इन्होंने समाज और धर्म के क्षेत्र पर अपने कविताओं के माध्यम से सबसे अधिक प्रचार किया है, और कर्म को प्रमुख स्थान दिया। उत्तर प्रदेश के मगहर में इनकी समाधि है और सरकार के द्वारा मगहर महोत्सव मनाया जाता है।

- **रैदास**–यह रविदास के नाम से भी विख्यात है। हय मीराबाई के गुरू थे। इन्होंने निर्गुण मत का पालन करते हुए भक्ति आंदोलन में सहयोग किया। इन्होंने रायदासी संप्रदाय की स्थापना की थी।
- **दादूदयाल**–यह अहमदाबाद में भक्ति आंदोलन को संचालित किये थे। इन्होंने निपख (असंप्रदायिक) आंदोलन को प्रारंभ किया था। इनके उपदेशों का संग्रह दादूराम की वाणी है।
- **चैतन्य महाप्रभू**–यह बंगाल में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक थे। इनका मूल नाम निमाई पंडित था। इनको महाप्रभु भी कहा गया है। इन्होंन संकीर्तन प्रथा और गोसाई संघ की स्थापना की थी। इन्होंने कृष्ण की भक्ति में अपने जीवन को समर्पित किया।
- यह मीराबाई और सिकंदर लोदी के समकालीन थे।
- चैतन्य महाप्रभु को उनके अनुयायी उनको भगवान कृष्ण का अवतार मानते थे।
- **मीराबाई**–यह मेड़ता के शासक रत्नसिंह राठौर की पुत्री थी, जिनका विवाह मेवाड़ के शासक राणासंगा के पुत्र भोज राज के साथ हुआ था। अचानक पति की मृत्यु के बाद इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन कृष्ण की आराधना में लगा दिया। इनके गुरू का नाम रैदास था।
- मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु और सिकंदर लोदी की समकालीन थी।
- **तुलसीदास**–यह भगवान राम के अराधिक थे। इनके बचपन का नाम रामबोला था। इनके पिता का नाम आत्माराम और माँ का नाम हुलसीबाई था। इन्होंने रामचरिमानस नामक ग्रंथ की रचना अवधी भाषा में किया था।

  इन्होंने विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली और हनुमान चालीसा आदि की भी रचना की थी।
- **सूरदास**–यह भगवान कृष्ण के भक्त थे। इन्होंने भगवान कृष्ण के बाल लीलाओं का सबसे अच्छे ढंग से अपनी ग्रंथ सूरसागर में उल्लेख किया है।
- सूरसागर नामक गंथ ब्रजभाषा में लिखा गया है।
- **गुरूनानकदेव**–यह कबीरदास के समान मानवतावादी कवि थे। यह सिख आंदोलन के जनक भी थे, और इसके प्रथम गुरू भी थे। इनका जन्म 1469 में पाकिस्तान के लाहौर के समीप तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था, जिसको वर्तमान में नानकाना साहिब कहा जाता है। इनके पिता का नाम कालू मेहता, माँ का नाम तृप्ता, बहन का नाम नानकी और पत्नली का नाम सुलक्ष्मणी था।

  1499 ई. में बई नदी कि नारे ज्ञान प्राप्त हुआ और सिख धर्म स्थापित हुआ। इन्होंने अपने मतों का प्रचार–प्रसार संगीत के माध्यम से किया। इनका प्रिय शिष्य मर्दाना रबाब नामक वाद्ययंत्र को बजाकर इनका साथ देता था।
- इन्होंने सत्य नाम की पूजा को प्रांरभ किया था। 1539 में पंजाब के करतारपुर में इनकी मृत्यु हो गई।
- **बल्लभाचार्य**–इन्होंने पुष्टिमार्ग संप्रदाय की स्थापना की थी, और शुद्धाद्वैतवाद मत को भी स्थापित किया था।
- **शंकरदेव**–इन्होंने असम के क्षेत्र में भक्ति आंदोलन को प्रांरभी किया। इन्होंने असमिया भाषा में अपने मतों का प्रचार–प्रसार किया था। इन्होने एकशरण संप्रदाय की स्थापना भी की थी।
- इनको असम का चैतन्य कहा गया है।
- **महाराष्ट्र के संत**–महाराष्ट्र के क्षेत्र में भी भक्ति आंदोलन को चलाया गया। यहाँ पर भक्ति आंदोलन के संत दो भागों में विभाजित थे। जैसे–

  वरकरी संप्रदाय–यह कृष्ण के उपासक थे।

  धरकरी संप्रदाय–यह राम के उपासक थे।

  भक्ति आंदोलन के संतों ने महाराष्ट्र के पंढ़रपुर में स्थित भगवान बिठोवा की पूजा को अपना माध्यम बनाया था। संत ज्ञानेश्वर इस आंदोलन के महाराष्ट्र में प्रथम संत थे जिन्होंने ज्ञानेश्वरी नामक ग्रंथ की रचना की थी। यहाँ पर सबसे बड़े संत तुकाराम थे, जिनकी प्रसिद्ध शिष्या बहिनाई थी। सबसे लोकप्रिय संत समर्थ रामदास थे।
- समर्थ रामदास शिवाजी के धार्मिक गुरू थे और इनकी प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम दसबोध है।

इस प्रकार लगभग भारत के सभी क्षेत्रों में भक्ति आंदोलन को चलाया गया, जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सभी भारतीयों को निश्चित रूप से कम किया। महिलाओं की स्थिति में भी निश्चित रूप से सुधार हुआ। हिन्दू–मुस्लिम के बीच एकता स्थापित हुआ जो राष्ट्रीय आंदोलन में भी दिखाई पड़ता है। सबसे अधिक प्रभाव क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य पर पड़ा था, क्योंकि सबसे अधिक विकास इसी क्षेत्र में हुआ।

विजयनगर साम्राज्य (1336 – 1649)

- प्राचीनकाल में जिस प्रकार दक्षिण भारत में सबसे महत्वपूर्ण वंश चांल वंश था, उसी तरह मध्यकाल में विजयनगर साम्राज्य को स्थान प्राप्त है। इसके उद्‌भव के बारे में प्रमुख मत निम्नलिखित है–

  प्रसिद्ध विद्वान सिवेल ने विजयनगर साम्राज्य पर शोध करते हुए सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक ''एक विस्मृत साम्राज्य'' (ए–फॉरगेटेन एम्पायर) की रचना की है। इसके अनुसार संगम के दो पुत्र हरिहर विजयनगर की स्थापना की और इसको अपनी राजधानी बनाया।

  हरिहर एवं बुक्का के गुरू माधव विद्यारण्य की पुस्तक कालज्ञान के अनुसार मुहम्मद–बिन–तुगलक ने हरिहर एवं बुक्का को दक्षिण भारत से दिल्ली लाकर कैद कर लिया था और इस्लाम धर्म में परिवर्तित कर दिया। कालांतर में माधव विद्यारण्य ने इन दोनों भाईयों को शुद्धिकरण के माध्यम से पुनः हिन्दू धर्म में परिवर्तित किया और इन लोगों ने 1336 ई. में विजयनगर की स्थापना कर दी।
- **हरिहर एवं बुक्का ने 1336 में स्वतंत्र विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी।**
- **हम्पी विजयनगर की प्राचीन राजधानी है, जो कर्नाटक में अवस्थित है।**

  विजयनगर वर्तमान समय में कर्नाटक राज्य में अवस्थित है, जिसके अवशेष आज भी बहुत हद तक सुरक्षित है। इसके अन्तर्गत चार वंशों का अध्ययन किया जाता है जैसे–

वंश	काल	संस्थापक
संगम वंश	1336–1485	हरिहर एवं बुक्का
सालुव वंश	1485–1505	सालुव नरसिंह
तुलुव वंश	1505–1570	वीर नरसिंह
अरवीदु वंश	1570–1649	तिरूमल

- **संगम वंश (1336–1485)**–हरिहर एवं बुक्का नामक भाईयों ने अपने पिता के नाम पर इस वंश का नाम संगम रख दिया। इसके शासक निम्नलिखित हैं–
- **हरिहर (1336 – 1356)**–यह बुक्का के बड़े भाई थे, जिन्होंने तुंगभद्रा नदी के किनारे संगम वंश की या विजयगनर साम्राज्य की स्थापना की थी। इन्होंने महाराज की उपाधि धारण की थी, जिससे स्पष्ट होता है कि यह स्वतंत्र शासक नहीं थे। सामंत के रूप में शासन कर रहे थे।

  इसने पाण्ड्य राज्य के विरूद्ध सफल अभियान किया, लेकिन बहमनी के शासक अलाउद्दीन हसन बहमनशाह से पराजित हो गया।

  विजयनगर और बहमनी के बीच कृष्णा और तुंगभद्रा दोआब पर अधिकार को लेकर हमेशा संघर्ष हुआ, जिसमें अधिकांश अवसर पर बहमनी विजयी हुआ। दक्षिण भारत में क्षेत्र में कृष्णा और तुंगभद्रा का दोआब सबसे अधिक उपजाऊ वाला क्षेत्र था।
- **बुक्का (1356 – 1377)** – हरिहर के बाद यह गद्दी पर आया। इसके समय में भी बहमनी से संघर्ष हुआ। यह प्रथम शासक था, जिसने कृष्णा नदी को दोनों राज्यों की सीमा निर्धारित कर दी। यह भी सामंत के रूप में शासन किया था। इसने **देवमार्ग प्रतिष्ठापक** की उपाधि धारण की थी। इसने अपना दूत चीन भी भेजा था।
- **माधव विद्यारण्य के भाई सायण** हरिहर एवं बुक्का के दरबार में रहते थे, जो वेद के बहुत बड़े ज्ञाता थे।

  इसके समय में कुमार कंपन के नेतृत्व में मदूरा को विजित किया गया, जिसका उल्लेख कुमार कंपन की पत्नी गंगादेवी की प्रसिद्ध पुस्तक मदूराविजयम में किया गया।
- **हरिहर–II (1377–1406)**–इसकी सबसे महत्वूपर्ण उपलब्धि गोवा को जीत लेना था। यह शैव धर्म का अनुयायी था। यह भी बहमनी से पराजित हो गया।
- **देवराय–I (1406-1422)**–विजयनगर का यह पहला शासक था, जिसने सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान दिया और तुंगभद्र तथा हरिद्रा (हरिहर नदी) से नहरों का निर्माण कराया। बहमनी के शासक फिरोज सुल्तान ने इसको पराजित कर दिया। परिणामस्वरूप देवराय प्रथम ने अपनी पुत्री का विवाह फिरोज के साथ किया और बंकापुर नामक शहर दहेज में दे दिया। देवराय–I ने भी हरिहर–II के समान महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- इसके समय में इटली का यात्री **निकोलो कॉन्टी** अपनी पत्नी के साथ विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की थी और सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार रामनवमी का उल्लेख किया था।
- **देवराय**–II **(1422–1445)**–यह संगम वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने इम्माडिदेवराय (महान शासक) और गजबेटकर (हाथी का शिकार करने वाला) की उपाधि धारण की थी। इसने 'महासुधानिधि नाटक' और ब्रह्मसुत्र नामक ग्रंथ पर भाष्य की रचना की थी।
- इसके समय में फारस या ईरान का यात्री **अब्दररज्जाक** ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की थी। अब्दुरज्जाक ने 300 बन्दरगाह का उल्लेख किया है। इसके अनुसार विजयनगर दुनिया का सबसे भव्य शहर था।
- **मल्लिकार्जुन (1445–1465)**–इसे इतिहास में प्रौढ़–देवराय कहा गया है। यह उड़ीसा के गजपति शासक से पराजित हो गया।
- **विरूपाक्ष–II (1465–1485)** – यह संगम वंश का अंतिम शासक था। चन्द्रगिरि के गवर्नर सालुव नरसिंह ने इसको गद्दी से हटाकर संगम वंश का अंत किया और सालुव वंश को स्थापित कर दिया।
- **सालुव नरसिंह (1485 – 1491)** – यह सालुव वंश का संस्थापक था, जिसने संगम वंश का अंत करके सत्ता का अपहरण किया था, जिसको प्रथम बालापहार कहा गया है।

- **इम्माडि नरसिंह (1491–1505)** – अपने पिता की मृत्यु के बाद यह गद्दी पर आया, लेकिन इसके सेनापति नरसा नायक ने इसको बंदी बनाकर प्रशासन पर नियंत्रण कर लिया। 1505 ई. में नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने इम्माडि नरसिंह की हत्या कीं सालुव वंश का अंत हुआ और तुलुव वंश स्थापित हुआ। इसको इतिहास में द्वितीय बालापहार कहा गया।

तुलुव वंश (1505 – 1570) :

- विजयनगर साम्राज्य के अन्तर्गत तुलुव वंश सबसे महत्वपूर्ण वंश था, जिसके समय में विजयनगर का सबसे अधिक विकास हुआ। कुछ महत्वपूर्ण शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–
- **वीर नरसिंह (1505–1509)** – यह तुलुव वंश का संस्थापक था। यह घोड़े के व्यापार में अधिक रूचि रखता था। इसके बाद इसके भाई कृष्णदेवराय गद्दी पर आये।
- **कृष्णदेवराय (1509 – 1529)** – यह तुलुव वंश के साथ–साथ विजयनगर के सबसे महत्वपूर्ण शासक थे। इन्होंने बहमनी से अलग हो कर बने बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर, बीदर और बरार के शासकों को पराजित किया। बीदर के कब्जे में बहमनी के शासक महमूद को मुक्त कराके बहमनी की गद्दी पर बैठाया और इस उपलक्ष्य में 'यवन–राज्य–स्थापनाचार्य' की उपाधि धारण की।
- कृष्णदेव राय ने अभिनव भोज, आंध्र भोज और आंध्र पितामह की उपाधि धारण की थी।

  इनके समय में तेलगू और संस्कृत का विकास हुआ। इनका काल **तेलगू साहित्य का स्वर्णकाल** कहा गया है।
- इनके राजदरबार में तेलगू साहित्य के आठ प्रसिद्ध विद्वान रहते थे, जिनको **अष्टदिग्गज** कहा गया है।

  इन अष्ट दिग्गजों में अल्लासिनपेड्डना सबसे विख्यात थे, जिनको तेलगू साहित्य का पितामह कहा गया है। इन्होंने मनुचरित्र और स्वारोचित्तसंभव नामक ग्रंथ की रचना की थी। इन अष्ट दिग्गज में तेनालीराम भी शामिल थे, जिन्होंने पांडुरंग महात्मय नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- कृष्णदेवराय ने तेलगूभाषा में **आमुक्तमाल्यद / विस्वुवित्तीय** नामक ग्रंथ की रचना की थी।

  इन्होंने स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी कार्य किया। जैसे–कृष्णदेवरायनगरम्, हास्पेट, नागलपुर और रायगोपुरम् नामक नगरों का निर्माण कराया।
- कृष्णदेवरायन ने अपनी राजधानी विजयनगर में हजारा मंदिर और विठ्ठलस्वामी मंदिर का निर्माण कराया।

  इनके समय में सबसे अधिक सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान दिया गया। इन्होंने विधवाओं की स्थिति में सुधार के लिए विवाह कर को समाप्त कर दिया। यह शतरंज के बहुत बड़े खिलाड़ी भी थे, और इसको लोकप्रिय भी बनाया था।
- इनके समय में पुर्तगाल के यात्री बारबोसा और डोमिंगोपायस ने विजयनगर की यात्रा की थी।

  बारबोसा ने सती प्रथा का उल्लेख किया है। इसके अनुसार महिला को मदीरा पिलाकर अचेत अवस्था में पति के शव के साथ जला दिया जाता था।
- **अच्यूतराय (1529 – 1542)** – कृष्णदेवराय के बाद कमजोर शासक हुए। इसने केन्द्र और राज्य के बीच संबंध को और मजबूत करने के लिए महामण्डलेश्वर नामक अधिकारी नियुक्ति किया था।
- **सदाशिवराय (1542 – 1570)** – यह तुलुव वंश का अंतिम शासक था। इसके समय में बहमनी से टूटकर बने राज्यों ने संयुक्त सेना का गठन करके आक्रमण कर दिया। परिणामस्वरूप युद्ध हुआ।

तालीकोटा का युद्ध (1565) :

- इस युद्ध में पराजय के बाद विजयनगर का पतन हो गया।

  तालीकोटा के युद्ध को बन्नीहट्टी या राक्षसतंगड़ी का युद्ध भी कहा गया है। इस युद्ध में विजयनगर को सबसे अधिक क्षति उठाना पड़ा और सभी महत्वपूर्ण व्यक्ति वीरगति को प्राप्त हुए।
- इस युद्ध में वास्तविक सेनापति रामराय था, जबकि नाम मात्र का सेनापति सदाशिवराय था।

  इस युद्ध में पराजित होने के बाद सदाशिवराय विजयनगर से पेनुकोण्डा चला गया। 1570 में मिरूमल नामक व्यक्ति ने इसको गद्दी से हटाकर तुलुव वंश का अंत किया और अरविदु वंश को स्थापित कर दिया, जिसे इतिहास में तृतीय बालापहार कहा गया है।

अरवीदु वंश (1570 – 1649) :

- यह विजयनगर साम्राज्य का अंतिम वंश था। तिरूमल ने इसको स्थापित किया था और पेनुकोण्डा को राजधानी बनाया। श्री रंग नामक शासक ने पेनुकोण्डा से राजधानी परिवर्तित करके चन्द्रगिरि में स्थापित किया। 1612 ई. में बेंकट द्वितीय के समय मैसूर विजयनगर से स्वतंत्र हुआ और वाडियार वंश की स्थापना की गयी। इस वंश का अंतिम शासक रंग तृतीय था, जिसको शिवाजी ने हटाकर विजयनगर को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया।

विविध तथ्य :

- विजयनगर में मनोरंजन का मुख्य साधन यक्षगान, बोमलाट (छायानाटक) था।
- पुलिस प्रशासन का खर्च वेश्याओं पर लगाए खर्च से चलता था।
- विजयनगर प्रशासन के अन्तर्गत वित्त विभाग को अथवन कहा गया है।
- आयंगर और नायंकर व्यवस्था विजयनगर प्रशासन संबंधित है।

- विजयनगर साम्राज्य के अन्तर्गत मानव की खरीद–बिक्री को बेसबाग कहा गया है।
- विजयनगर साम्राज्य का सबसे प्रमुख त्यौहार रामनवमी था।

बहमनी साम्राज्य

- विजयनगर का पड़ोसी राज्य बहमनी था, जिसकी स्थापना तुगलक वंश के शासक मुहम्मद–बिन–तुगलक के समय 1347 में हुआ था। तजाउद्दीन फिरोज के समय रूसी यात्री अल्थेनियस निकितिन ने बहमनी राज्य की यात्रा की थी। कृष्णा तुंगभद्रा दोआब को लेकर बहमनी और विजयनगर में संघर्ष होता था। इस वंश के कुछ प्रमुख शासक निम्नलिखित हैं–
- **अलाउद्दीन हसन बहमनशाह (1347 – 1357)** – यह बहमनी राज्य का संस्थापक था। इसका मूल नाम हसन गंगु था। इसने बहमन शाह की उपाधी धारण की थी। इसने जो सिक्का जारी किया उस पर द्वितीय सिकन्दर शब्द अंकित है।
- इसने गुलबर्गा को राजधानी बनाकर शासन किया था।
  इसने विजयनगर के शासक हरिहर को पराजित किया, जो इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

अहमद शाह (1442 – 1436) :

- इसने गुलबर्गा के स्थान पर बीदर को राजधानी बनाया।
  यह प्रथम शासक था जिसने सिंचाई के लिए भीमा नदी पर एक विशाल बाँध का निर्माण कराया था।
- **अलाउद्दीन हुमायूँ (1458 – 1461)** – यह आम जनता के बीच लोकप्रिय नहीं था। इसलिए इसको जालिम हुमायूँ कहा गया है। इसी के समय में एक नये चरित्र महमूद गावाँ का उदय हो रहा था, जो आसगे चलकर प्रधानमंत्री बना।
- **मुहम्मद शाह–III (1463 – 1482)** – इसके समय में महमूद गवाँ ने बहमनी का सबसे अधिक विकास किया। महमूद ने गोवा पर अधिकार कर लिया जो इसकी सबसे बड़ी कामयाबी था। इसने अपनी राजधानी बीदर में एक विशाल मस्जिद, मदरसा और पुस्तकालय का निर्माण कराया था। महमूद गवाँ के पत्रों का संकलन रियाजुलईंशा कहलाता है।
  egew xok;useR;qds ckn cgeuhdkrsxfr lsiru gqvkA bl o'akdkvfUre 'kkld dyhe mYykFkk ft ldsle; cgeuh ikp jkT; esafoHkDr gksx;kA tSlsA

राज्य	वंश	संस्थापक
बीजापुर	आदिलशाही वंश	यूसुफ आदिलशाह
गोलकुण्डा	कुतुब्शाही वंश	कुली कुतुबशाह
अहमदनगर	निजामशाही वंश	मलिक अहमद
बीदर	बरीदशाही वंश	अमीर–अली–बरीद
बरार	इमादशाही वंश	फतेह उल्लाह इमाद शाह

विविध तथ्य :

- बीजापुर के अली आदिलशाह ने गोलगुंबज का निर्माण कराया था।
- मेवाड़ के राणा कुंभा ने चित्तौड़ में विजय स्तंभ या कृति स्तंभ को स्थापित किया था।
- तालीकोटा के युद्ध में बरार शामिल नहीं था।
- बरार को बीदर ने अपने में मिला लिया और बीदर को बीजापुर ने अपने राज्य में मिला लिया।
- मुगल बादशाह शाहजहाँ ने 1636 में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- मुगल बादशाह औरंगजेब ने 1686 में बीजापुर को और 1687 में गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
  इस प्रकार बहमनी पूर्ण रूप से समाप्त हो गया।

मुगल साम्राज्य (1526 – 1707)

- दिल्ली सल्तनत के बाद भारत में मुगल वंश स्थापित हुआ। इन लोगों ने सुल्तान के जगह पर पादशाह की उपाधी धारण की थी, जो आगे चलकर बादशाह शब्द में परिवर्तित हो गया। मुगल वंश के महत्वपूर्ण शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–

बाबर (1526 – 1530) :

- **प्रारंभिक जीवन**–यह मुगल वंश का संस्थापक था। बाबर का शाब्दि अर्थ शेर होता है। इसके बचपन का नाम जहीरूद्दीन था। इसका जन्म **14 फरवरी 1483** में अफगानिस्तान के फरगना में हुआ था। इसके पिता **उमरशेख मिर्जा** फरगना के शासक थे। इसकी माँ का नाम कुतलुगनिगार खान था। बाबर अपनी पिता की मृत्यु के बाद 1494 ई. में फरगना का शासक बना।
- बाबर ने 1507 ई. में मिर्जा की उपाधी त्यागकर पादशाह की उपाधी धारण कर ली।
- **बाबर चुगताई तुर्क जाति से संबंधित था।**
- 1519 ई. में बाबर ने बाजौर और भेरा को जीत लिया। विद्वानों के अनुसार इसी युद्ध में बाबर ने सर्वप्रथम तोप का प्रयोग किया था। इस

प्रकार भारत में तोप और बारूद का प्रचलन 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में शुरू हुआ था।

दीलावर खाँ लौदी और आलम खाँ लोदी बाबर को भारत पर आक्रमण करने का नियंत्रण दिया। कुछ विद्वानों के अनुसार राणा सांगा ने भी अपना दूत बाबर के पास भेजा था, परिणामस्वरूप भारत पर अभियान किया।

अभियान :

- **पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल, 1526)**–पानीपत हरियाणा में स्थित है। यह युद्ध **बाबर और इब्राहिम** लोदी के बीच हुआ था, जिसमें बाबर विजयी हुए। इस युद्ध में विजयी होने के बाद भारत में 1526 में मुगल वंश स्थापित हुआ और बाबर जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर के नाम से मुगल बादशाह बना। इस युद्ध में विजयी होने के बाद बाबर ने अपने सैनिको को उपहार स्वरूप एक–एक **सिक्का** प्रदान किया था।
- इस युद्ध में **तुलगामा युद्ध नीति/उस्मानी विधि/रूमी विधि** का प्रयोग करते हुए युद्ध को जीत लिया था।

  तुलगामा युद्ध नीति अर्थात् दो गाड़ियों के बीच ऐसी संरचना जिस पर हल्का तोप रखकर चलाया जा सके।

  इस युद्ध में बाबर के दो कुशल तोपची **उस्ताद अली** और **मुस्तफा** ने तोपखाने का नेतृत्व किया था। बाबर के अनुसार उसने अपने 12 हजार धनुर्धर के बल पर इस युद्ध को जीत लिया था।
- **खानवा का युद्ध (17 मार्च, 1527)**–खानवा उत्तर प्रदेश में स्थित है। इस युद्ध में बाबर ने मेवाड़ के शासक **राणा सांगा** को पराजित कर दिया। जबकि राणा सांगा अबतक 80 युद्ध में शामिल हुए थे और सभी युद्ध में विजय हुए थे। इस युद्ध की तुलना 1764 ई. के बक्सर के युद्ध के साथ की गयी था।
- **इस युद्ध में बाबर ने जिहाद का नारा दिया था।**
- **इस युद्ध में बाबर ने सैनिको से लिया जाने वाला तमगा कर (सीमा शुल्क) को माफ कर दिया था।**
- **इसी युद्ध में बाबर ने गाजी की उपाधि धारण किया था।**
- **चन्देरी का युद्ध (1528)**–चन्देरी मालवा प्रांत में एक छोटा सा राज्य था, और यहाँ के शासक मेदनीराय को बाबर ने पराजित कर दिया।
- **घाघरा का युद्ध (1529)**–यह युद्ध घाघरा नदी के किनारे हुआ था, जिसमें महमूद लोदी को बाबर ने पराजित कर दिया।
- यह एकमात्र युद्ध है जो **जल और स्थल** दोनों जगहों पर लड़ गया था।

  1530 ई. में बाबर की मृत्यु हुई तब इनको आगरा के आराम बाग में दफनाया गया, लेकिन बाद में इनका सबसे प्रिय नगर काबुल में ले जाकर दफना दिया गया।

विविध तथ्य :

- बाबर ने अपना उत्तराधिकारी हुमायूँ को घोषित किया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा **तुजुक–ए–बाबरी/बाबरनामा की** रचना अपनी मातृभाषा **तुर्की भाषा** में किया था।
- बाबर मसनवी और मुंबईयान पद शैली का भी जनक था।
- बाबर के दरबार में ईरान के प्रसिद्ध चित्रकार बेहजाद रहते थे, जिनको पूर्व का राफेल कहा गया है।
- बाबर ने पानीपत में काबुलीबाग, रूहेलखंउ में जामा मस्जिद, और आगरा में आरामबाग का निर्माण कराया था।
- बाबर **मदिरा और उद्यान** का सबसे बड़ा शैकीन था।
- बाबर के सेनापति मीयाँ मीर बाकी ने 1529 में अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया था।
- बाबर को जीवनी लेखकों का राजकुमार कहा गया है।

हुमायूँ (1530 – 1556)

- बाबर ने अपना उत्तराधिकारी हुमायूँ को घोषित किया था। हुमायूँ का शाब्दिक अर्थ भाग्यशाली होता है। लेकिन लेनपूल का यह कथन हुमायूँ को अभाग्यशाली साबित करता है जैसे–**"हुमायूँ जीवन पर इधर से उधर लड़खड़ाते रहा और अंत में लड़खड़ा कर गिरने से उसकी मृत्यु हो गई।"**
- **प्रारंभिक जीवन**–हुमायूँ का जन्म 1508 में काबुल में हुआ था। इनकी माँ का नाम माहमअनगा था। इनको सर्वप्रथम बदख्शाँ का सुबेदार बनाया गया। इन्होंने पानीपत के प्रथम युद्ध में भी अपनी योग्यता को साबित किया था, इसलिए पिता की मृत्यु के बाद यह नासिरूद्दीन मुहम्मद हुमायूँ के नाम से मुगल बादशाह बना।

अभियान :

- गद्दी पर आने के साथ इसने अभियान किया जैसे–
- **कालिंजर (1531 – 1532)** – यहाँ के शासक प्रताप रूद्र देव थे। हुमायूँ ने जब अभियान किया तब महमूद लोदी अपनी सेना लेकर जौनपुर की तरफ बढ़ रहा था, परिणामस्वरूप हुमायूँ ने इस अभियान को अधूरा छोड़ दिया, जो इसकी राजनीतिक भूल थी।
- **दौहरिया का युद्ध (1532)**–इस युद्ध में हुमायूँ ने अंफगानी नेता महमूद लोदी को पराजित कर दिया।
- **चुनार का घेरा (1532)**–हुमायूँ ने लगभग 6 माह तक घेरा डालने के बाद जब जीत के करीब था, तब शेरशाह से संधि कर लिया, जो इसका सबसे बड़ा राजनीतिक भूल था, क्योंकि शेरशाह के कारण ही हुमायूँ को 15 वर्षो तक भारत से बाहर रहना पड़ा।

- **गुजरात (1535 – 1536)** – समुद्र तक अपनी पहुँच बनाने के लिए यह अभियान हुआ। गुजरात शासक बहादुर शाह–III ने रूमी खाँ के नेतृत्व में एक तोपखाने का निर्माण कराया था। पूर्तगालियों ने अंततः बहादुरशाह–III की हत्या कर दी।
- **कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध (1540)**– इस युद्ध में भी शेरशाह विजयी हुए और सूर वंश स्थापित हुआ। इस युद्ध में परांजय के बाद **हुमायूँ को भातर छोड़ना पड़ा।** सिंध के क्षेत्र में अमरकोट के शासक **वीरसाल** ने हुमायूँ को संरक्षण दिया। इसी अमरकोट के दुर्ग में **अकबर का जन्म 1542 ई.** में हुआ था। अंततः हुमायूँ ईरान (फारस) के शासक शाह तहमास्प के शरण में चला गया।
- **मच्छीवारा का युद्ध (मई 1555)**–इस युद्ध में हुमायूँ ने सूर वंश की सेना को पराजित कर दिया।
- **सरहिन्द का युद्ध (जून 1555)**–इस युद्ध में मुगल सेनापति बैरम खाँ ने सूर वंश के अंतिम शासक सिकंदर शाह सूर को पराजित कर दिया। सूर वंश का अंत हुआ, मुगल वंश पुर्नस्थापित हुआ।

हुमायूँ सत्ता का सुख नहीं भोग पाया, क्योंकि पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण इसकी मृत्यु हो गई, और दिल्ली में दफनाया गया।

विविध तथ्य :

- हुमायूँ ने अपना उत्तराधिकारी अकबर को घोषित किया था।
- हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा की रचना की थी।
- हुमायूँ भूगोल, ज्योतिष शास्त्र, दर्शनशास्त्र और नक्षत्रविज्ञान का जानकार था। ज्योतिषशास्त्र पर विश्वास करते हुए इसने सप्ताह में सात रंग का कपड़ा पहनना अनिवार्य कर दिया।
- इसने दिल्ली में दीनपनाह नामक महल का निर्माण कराया और इसके अंदर शेर–ए–मंडल नामक पुस्तकालय का निर्माण कराया था, जिसके सीढ़ियों से गिरने के कारण इसकी मृत्यु हुई थी।
- मीरसैय्यद अली और अब्दुससमद ने हुमायूँ के समय मुगल चित्रकला की स्थापना की थी।
- **राणा सांगा की विधवा रानी कर्णावती ने हुमायूँ के पास राखी भेजकर सहायता का अनुरोध किया था।**
- नाजिम नामक भिश्ती ने (नाविक) ने हुमायूँ के प्राणों की रक्षा की थी। इसलिए हुमायूँ ने इसको एक दिन का मुगल बादशाह बनाया, जिसने **चमड़े का सिक्का** जारी किया।

सूर वंश (1540 – 1555)

- **शेरशाह (1540 – 1545)**–दिल्ली की गद्दी पर दूसरी बार अफगानी सत्ता को स्थापित करने का श्रेय सूर वंश के शासक शेरशाह को दिया जाता है। इनके जीवन चरित्र और उपलब्धियों के बारे में वर्णन निम्नलिखित है–
- **प्रारंभिक जीवन**–शेरशाह सूर वंश का संस्थापक था, जिसका जन्म पंजाब के होशियारपुर के बजवाड़ा नामक स्थान पर 1472 ई. में हुआ था। इसने बिहार के शासक बहार खाँ लोहानी/नुहानी के यहाँ नौकरी प्राप्त कर ली।
- शेरशाह के बचपन का नाम **फरीद खाँ** था। पिता का नाम हसन खाँ था।
- **बहार खाँ लोहानी** ने फरीद को शेर खाँ की उपाधी से सम्मानित किया।

शेरशाह ने अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए ताज खाँ की विधवा लाड मलिका से विवाह कर लिया और चुनार का दूर्ग इसे प्राप्त हो गया। इसने जब अपनी शक्ति को बढ़ाने का प्रयास किया तब मुगलों के साथ युद्ध हुआ जैसे–

- **चौसा का युद्ध (1539)** – इस युद्ध में शेरशाह ने हुमायूँ को पराजित किया और अपने नाम का सिक्का जारी किया, जिसपर देवनागरी और अरबी लिपि का प्रयोग हुआ था। युद्ध में विजयी होने के बाद यह **शेर खाँ से शेरशाह** बन गया, क्योंकि इसी युद्ध के बाद यह **शेरशाह की उपाधि** धारण कर ली।

इसी युद्ध में हुमायूँ को नाजिम नामक भिश्ती ने बचाया था।

- **कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध (1540)**–इस युद्ध में शेरशाह विजयी हुआ। दिल्ली तथा आगरा पर नियंत्रण करते हुए सूर वंश को स्थापित कर दिया।
- **शेरशाह का प्रसिद्ध कथन–**"अगर भाग्य मेरा साथ दिया और सौभाग्य मेरा मित्र रहा तो मैं मुगलों को सरलता से हिन्दुस्तान से बाहर कर दूँगा।"
- **सैन्य अभियान**–गद्दी पर आने के साथ विद्रोह को दबाने के लिए सैन्य अभियान किया गया। जैसे–
- **बंगाल (1541)**–यहाँ के सूबेदार खिज्र खाँ के विद्रोह को दबाकर नई प्रशासनिक व्यवस्थ लागू कर दी गयी।
- **मालवा (1542)**–निसार खाँ ने यहाँ के सूबेदार मल्लू खाँ को पराजित किया। शेर खाँ को मालवा को सूबेदार बना दिया।
- **रायसीन (1543)**–यह मध्य प्रदेश में है। यहाँ के शासक पुरनमल पराजित हुए। रायसीन पर शेरशाह ने धोखे से कब्जा किया था, जिसके लिए शेरशाह की आलोचना की जाती है।
- **मारवाड़ (1544)** – यहाँ के शासक महलक देव थे, जिनका अंतिम समय तक साथ जयता और कुंपा ने दिया। भाग्य ने शेरशाह को विजयी बना दिया। इस राज्य के संदर्भ में शेरशाह का कथन–**मैं मुट्ठी पर बाजरे के लिए हिन्दुस्तान का साम्राज्य खो चुका था।"**
- **कालिंजर (1545)** – यह शेरशाह का अंतिम अभियान था। यहाँ के शासक कीरत सिंह पराजित हुए। इसी अभियान में शेरशाह उक्का नामक छोटा तोप चला रहा था। दूर्ग की दीवार से वापस होकर बारूद शेरशाह के समीप विस्फोट हो गया, परिणामस्वरूप इनकी मृत्यु हो

गई, लेकिन मृत्यु के पूर्व कालिंजर को जीत लिया था।

- **स्थापत्य कला**–इसने दिल्ली में **दीन पनाह** को तोड़कर **पुराना किला** का निर्माण कराया और इस किला के अंदर **किला–ए–कुहना** नामक मस्जिद भी बनवाया।
- **इसने बिहार के सासाराम में झील के अंदर स्वयं का मकबरा बनवाया था।**

  इसने रोहतास गढ़ के दूर्ग का निर्माण कराया और दिल्ली में एक दान का लंगर भी स्थापित किया, जिसमें 500 तोला सोना प्रतिदिन दान किया जाता था।
- शेरशाह ने **1541 में पाटलिपुत्र को पना** के नाम से स्थापित किया।
- **मुद्राव्यवस्था**–इसने चाँदी का रूपया और ताँबे का दाम नामक सिक्का जारी किया जाता था। इसने सिक्कों को ढुलाई के लिए 23 टकसाल भी स्थापित किया, जिसका अधिकारी चौधरी कहलाता था।

  1 रूपया = 64 दाम
- **सार्वजनिक कार्य**– इसने सड़क, सराय, पीने के लिए प्याऊ, अस्पताल आदि का निर्माण भी कराया था, जिसमें सड़क निर्माण विख्यात है।
- इसने बांग्लादेश के सोनार गाँव से लेकर पाकिस्तान के सिंध तक सड़क का निर्माण कराया।
- **इस सड़क को सड़क–ए–आजम या GT Road या शेरशाह सूरी मार्ग कहा जाता है।**

  इसने लाहौर से मुल्तान, आगरा से चित्तौड़ और आगरा से मांडू तीन और सड़क का निर्माण कराया था।

  शेरशाह के मृत्यु के बाद अयोग्य उत्तराधिकारी हुए और बैरम खाँ ने 1555 में सरहिन्द के युद्ध में सूरवंश के अंतिम शासक **सिकंदर शाह सूर** को पराजित कर सूरवंश का अंत किया और मुगल वंश पुर्नस्थापित हुआ।
- **शेराह को अकबर का अग्रगामी या पथप्रदर्शक कहा गया है।**
- शेरशाह निर्माता नहीं सुधारक के रूप में प्रसिद्ध है।
- शेरशाह के व्यक्तित्व में शेर और लोमड़ी का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- शेरशाह के समय स्थानीय स्तर पर **आबवाब** नामक कर लगया जाता था।
- **कबुलियत** एवं **पट्टा** शेरशाह की देन है।
- शेरशाह ने जरीबाना और मुहासिलाना नामक कर लगाया था।
- शेरशाह ने **''हजरत–ए–आला''** की उपाधि धारण की थी।
- मलिक मु. जायसी ने पद्मावत ग्रंथ लिखा। ''बारहमासा'' पद्मावत का एक भाग है।

अकबर महान (1556 – 1605)

- मुगल बादशाह के साथ–साथ विश्व के इतिहास में महान शासक माना गया है। मुगल वंश के अन्तर्गत सबसे अधिक समय तक अकबर ने शासन किया था, जबकि ये पढ़े–लिखे व्यक्ति नहीं थे। इनके जीवन से संबंधित उपलब्धियों का वर्णन निम्नलिखित है–
- **प्रारंभिक जीवन**–अकबर का शाब्दिक अर्थ सबसे महान होता है। इनका जन्म 1542 में अमरकोट के दूर्ग में हुआ था। इनकी माँ का नाम हमीदा–बानु–बेगम था। **बैरम खाँ** को अकबर का **संरक्षज्ञक** बनाया गया जो राजनीतिक गुरू भी थे। अकबर को सर्वप्रथम गजनी का सूबेदार बनाया गया। इनके बचपन का नाम **जलालुद्दीन** था। पिता की मृत्यु के बाद बैरम खाँ ने कलानौर नामक स्थान पर अकबर का राज्याभिषेक कराया और अकबर जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर के नाम से मुगल बादशाह बने, लेकिन दिल्ली की राजनीतिक परिस्थिति इस समय बदल चुका था।
- **हेमू**–इसका मूल नाम **हेमचन्द्र विक्रमादित्य** था। यह हरियाणा के रेवाड़ी के बाजार मे नमक बेचने का कार्य करता था। आदिलशह सूर ने इसको अपनी सेना में शामिल कर लिया और यह कम समय में अपनी योग्यता के बल पर सेनापति बन गया और इतिहास में हेमू के नाम से प्रचलित हुआ।
- **आदिलशाह सूर ने हेमू को विक्रमादित्य की उपाधि दी थी।**
- **आदिलशाह सूर नृत्य और संगीत के बहुत बड़े जानकार थे।**
- **दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला अंतिम हिन्दू शासक हेमू था।**
- **पानीपत का द्वितीय युद्ध (5 नवम्बर, 1556)**–इस युद्ध में मुगल सेनापति बैरम खाँ ने हेमू को पराजित कर दिया और युद्ध भूमि में उनकी हत्या कर दी गयी तथा अकबर ने दिल्ली पर नियंत्रण कर लिया।
- **बैरम खाँ (1556–1560)**–यह अकबर के संरक्षक और राजनीतिक गुरू थे। अकबर ने इनको वजीर या वकील–ए–मुतलक का पद प्रदान किया था और **खान–ए–खाना** (यार–वफादार) की उपाधि से सम्मानित किया था। बैरम खाँ ने चार सालों तक प्रशासन पर नियंत्रण रखा। अकबर ने इनके सामने तीन प्रकार का शर्त रख दिया। जैसे–

  1 चन्देरी/काल्पी की सूबेदारी

  2 राजदरबार में सलाहाकार का पद

  3 हज की यात्रा

बैरम खाँ हज की यात्रा पर निकल पड़े और गुजरात में **पाटन** नामक स्थान पर **मुबारक खाँ** नामक अफगानी ने इनकी हत्या कर दिया।

- **अतका खेल–**इस समूह में महाम अनगा उनका पुत्र आधम खाँ उनकी पुत्री जिंजी अनगा उनका पुत्र आधम खाँ उनकी पुत्री जिंजी अनगा और हमीदाबनो शामिल थे। इसमें महिलाओं का बर्चस्व अधिक था।
- अतका खेल समूह के काल को **पर्दा शासन,** या **त्रिया शासन** या **पेटीकोट** शासन के नाम से संबंधित किया गया है।
- **सुधार एवं जनकल्याणकारी कार्य–**अकबर के द्वारा इस क्षेत्र में भी कार्य किया गया था, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है।
- **अकबर ने 1562 में दास प्रथा को समाप्त किया।**
- **1563 में इसने तीर्थयात्रा कर को समाप्त किया।**
- **1564 में इसने जजिया कर को समाप्त किया।**
- **1571 में इसने आगरा के समीप फतेहपुर सिकरी का निर्माण कराया और इसको अपनी राजधानी बना लिया।**
- 1575 में इसने फतेहपुर सिकरी में **इबादतखाना** का निर्माण कराया जिसमें पहले केवल इस्लाम धर्म के संतों को बुलाया गया।
- 1578 मे इसने इबादतखाना (पूजा घर) का द्वार सभी के लिए खोल दिया। अब सभी धर्म के लोग यहाँ आ सकते थे।
- 1579 ई. में इसने **मजहरनामा** (दैवीय अधिकार)/अमोघत्व का सिद्धांत को लागू किया।

  मजहरनामा का दस्तावेज अबुल फजल के पिता शेख मुबारक ने तैयार किया था, और इनके बड़े पुत्र फैजी मजहरनामा के सबसे बड़े समर्थक थे।
- 1580 में इसने सती प्रथा को प्रतिबंधित किया।
- **इसने 1582 में दीन–ए–ईलाही/तैहिद–ए–ईलाही की स्थापना की।**

  जिस प्रकार प्राचीन काल में मौर्य वंश के शासक अशोक ने अपने धर्म की स्थापना की उसी प्रकार अकबर ने इसको स्थापित किया, जो विश्व बंधुत्व पर आधारित सभी धर्मों का सार था, जिसको 18 व्यक्तियों ने अपनाया था।
- **दीन–ए–ईलाही को एकमात्र हिन्दू बीरबल ने अपनाया था।**
- इसने 1583 में ईलाही संवत् को जारी किया।

  अकबर ने अपने गुजरात अभियान के क्रम में पहली बार समुद्र का दर्शन किया और पुर्तगालियों से भी पहली बार मिला, जिसमें अकाबीवा और मान्सरेट नामक पुर्तगाली शामिल है। इसने ईसाई धर्म के बारे में अकबर को बताया।

  अकबर के व्यक्तित्व पर पारसी धर्म का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है, इसलिए इन्होंने दस्तुर मेहरजी राणा को आमंत्रित किया, जिसने पारसी धर्म के बारे में बतलाया।

  अकबर के व्यक्ति पर पारसी धर्म का इतना प्रभाव पड़ा कि इन्होंने अपने भवन में अग्निपूजा की और सूर्य पूजा की प्रथा को प्रारंभ कर दिया। अकबर जैन धर्म से भी प्रभावित थे और हरविजयसूरी को आमंत्रित किया, जिन्होंने जैन धर्म के बारे में बतलाया।
- **अकबर ने जैन धर्म के गुरू हरविजय सूरी की जगतगुरू की उपाधि प्रदान की थी।**

  अकबर के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव हिन्दू धर्म का था, इसलिए अकबर ने पुरूषोत्तम देवी को आमंत्रित किया था।
- **नौरत्न–**जिस प्रकार प्राचीन काल में गुप्तवंश के शासक चन्द्रगुप्त–II के दरबार में नौरत्न रहते थे। उसी प्रकार अकबर के दरबार में भी रहते थे, जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

1. **बीरबल–**इनके बचपन का नाम **महेशदास** था।

   यह अकबर के नौरत्न में शामिल थे और उनके मित्र के समान थे। अकबर ने इनको कविप्रिया और राजा की उपाधि से सम्मानित किया था। ब्लूचिस्तान अभियान में यह वीरगति को प्राप्त हुए।
2. **भगवान दास–**भगवानदास राजा भारमल के दत्तक पुत्र थे। अकबर ने इनको पाँच हजार का मनसब देकर सेवा में शामिल किया। जब अकबर राजधानी से बाहर होते थे तब राजघरानों की महिला की संपूर्ण जिम्मेदारी इनके ऊपर होता था। अकबर ने इनको आमिर–उल–उमरा से सम्मानित किया था।
3. **मानसिंह–**यह भगवान दास के पुत्र थे। अकबर ने इनको नौ हजार का मनसब दिया था। **इन्हीं के अनुरोध पर अकबर ने जजिया कर को समाप्त कर दिया था।**
4. **अबुल फजल–**यह शेख मुबारक का पुत्र था, जिसने अकबरनामा ग्रंथ की रचना की थी। सलीम के विद्रोह को दबाने के क्रम में बुंदेल **सरदार वीर सिंह ने 1602 ई. में इसकी हत्या कर दी।**
5. **टोडरमल–**टोडरमल भू–राजस्व के सबसे बड़े जानकर थे। अकबर के दरबार में रहने के पूर्व यह शेरशाह के दरबार में थे। अकबर ने इनको दीवान–ए–अशरफ की उपाधि से सम्मानित किया था।

- टोडरमल ने **जाब्ती** प्रणाली और **दहशाला प्रणाली** को जन्म दिया था।
- **फैजी–**यह अबुल फजल के बड़े भाई थे। इनको अकबर ने राजकवि के पद पर नियुक्त किया था। यह मजहरनामा और दीन–ए–ईलाही के कट्टर समर्थक थे।
- **अब्दुर–रहीम–खानेखाना–**यह बैरम खाँ का पुत्र था। इनको कबीरदास के समान मानवतावादी कवि भी माना जाता है, और कवि रहीम

के नाम से यह अधिक लोकप्रिय है। अकबर ने इनको खानेखाना की उपाधि प्रदान की थी।

- अकबर के आदेश पर इन्होंने **तुजुक–ए–बाबरी/बाबरनामा का फारसी भाषा में अनुवाद किया था।**
- **यह जहाँगीर के सरंक्षक और राजनीतिक गुरू भी थे।**

8. **तानसेन–यह सबसे बड़े संतीतज्ञ थे।** यह ग्वालियर के थे। इनका बचपन का नाम **रामतनु पांडे था।** यह अकबर के दरबार में आने से पूर्व रामचंद्र बघेल के दरबार में रहते थे। इनको ध्रुपद गायन का जनक माना जाता है।

नोट – बिहार में पंडित सियाराम तिवारी ध्रुपदगायन के सबसे बड़े विद्वान हैं।

तानसेन ने कई रागों को जन्म दिया था जैसे–मियाँ की टोड़ी मियाँ की मल्लहार, दरबारी कान्हाड़ा।

- अकबर ने इनको कविकण्ढाभरणवाणीविलास की उपाधि दी थी।

9. **मुल्ला–दो–प्याजा**–यह अरब के यात्री थे। इनको खाने में दो प्याज पंसद था, इसलिए दो–प्याजा नाम पड़ गया।

- **सैन्य अभियान**–अकबर के समय में अधिकांश राज्यों ने विद्रोह कर दिया परिणाम अभियान किया गया और विजयी हुआ। जैसे–

राज्य	काल	शासक
मालवा	1561	बाज बहादुर
आमेर	1562	भारमल/बिहारीमल
गोण्डवाना	1564	रानी दुर्गावती
मेवाड़	1568	राणा उदयसिंह
रणथम्भौर	1569	सुर्जन राय
कालिंजर	1569	रामचन्द्र
गुजरात	1572–73	मुजफ्फर खाँ–III
बिहार–बंगाल	1574–76	दाऊद खाँ
हल्दीघाटी का युद्ध	1576	महाराणा प्रताप
काबुल	1581	हकीम मिर्जा
कश्मीर	1586	याकूब खाँ
सिंध	1591	जानी बेग
खानदेश	1591	आमिर–अली
उड़ीसा	1592	निसार खाँ
ब्लूचिस्तान	1595	पन्नी अफगानी
कंधार	1595	मुजफ्फर हुसैन मिर्जा
अहमदनगर	1600	चाँद–बीबी
असीरगढ़	1601	मीरन

- **मालवा**–यहाँ के शासक ने आत्म समर्पण कर दिया, अकबर ने इनको दो हजार का मनसब देकर अपनी सेवा मे शामिल कर लिया।
- बाजबहादुर संगीत के क्षेत्र में बहुत बड़े जानकार थे।
- **आमेर**–यहाँ के शासक भारमाल ने अकबर के सामने आत्मसमर्पण किया और अपनी पुत्री हरखाबाई का विवाह अकबर के साथ कर दिया।
- इसी राज्य से अकबर की राजपूत नीति शुरूआत होता है।
- **गोण्डवाना**–यहाँ की शासिका रानी दुर्गावती युद्ध भूमि में अपने पुत्र के साथ वीरगति को प्राप्त हुई और गोण्डवाना को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- **मेवाड़**–यहाँ के शासक उदयसिंह राणा और राजपूत सरदार जयमल तथा फता/फतेहसिंह संघर्ष किया। मुगल सेना के वापस जाते ही राणा उदयसिंह ने पुनः अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। अकबर जयमल और फता की बहादुरी से खुश होकर आगरा किला के मुख्य द्वार पर इन दोनों की मूर्ति स्थापित करायी।
- **रणथम्भौर**–यहाँ के शासक सुर्जनराय पराजित हुए और रणथम्भौर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **कालिंजर**–कालिंजर को भी अभियान के बाद मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **गुजरात**–समुद्र तक अपनी पहुँच बनाने के लिए अकबर ने अभियान किया। यहाँ तक का शासक पराजित हुआ, लेकिन अकबर के वापस आने के बाद मुजफ्फर खाँ–III ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया, परिणामस्वरूप महीनों की यात्रा को अकबर ने मात्र 9 दिन में पूरा कर लिया और गुजरात को साम्राज्य में मिला लिया।
- **गुजरात अभियान पर स्मिथ का कथन–"यह विश्व का सबसे द्रुत्तगामी अभियान था।"**
- **अकबर सर्वप्रथम गुजरात में ही अक्काबीवा और मान्सरेट जैसे पुर्तगालियों से मिले थे।**
- **अकबर ने गुजरात में ही सर्वप्रथम समुद्र का दर्शन किया था।**
- **बिहार–बंगाल**–अकबर ने यहाँ के शासक को पराजित करते हुए बिहार और बंगाल को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

- **हल्दी घाटी का युद्ध**–यह युद्ध मेवाड़ के शासक और राणा उदय सिंह के पुत्र महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच हुआ था। महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच हुआ था। महाराणा प्रताप की तरफ से सेनापति हाकीम खान था, और मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह ने किया। महाराणा प्रताप पराजित हुए, लेकिन कुछ ही समय बाद इन्होंने संपूर्ण क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया।
- अकबर अपने काल में मेवाड़ की समस्या नहीं सुलझा पाया। जहाँगीर ने इस समस्या को सुलझा दिया।
- **काबुल**–यहाँ के शासक अकबर के रिश्तेदार थे। इनके विद्रोह को दबाकर उसकी बहन बख्तुनिशा को वहाँ का सूबेदार बना दिया।
- **कश्मीर**–यह अभियान भी सफल रहा और कश्मीर पर नियंत्रण कर लिया गया।
- **सिंध**–सिंध पर अभियान करते हुए मुगल सेना ने इसको भी साम्राज्य में मिला लिया।
- **खानदेश**–खानदेश को दक्षिण भारत पर प्रवेश द्वार कहा जाता है। इस पर भी मुगल सेना ने नियंत्रण कर लिया।
- **उड़ीसा**–बंगाल, बिहार, के साथ कालान्तर में उड़ीसा को भी मुगल साम्राज्य में शामिल किया गया।
- **ब्लुचिस्तान**–मकरान के तट पर इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को भी जीत लिया गया।
- **कंधार**–यह पश्चिमोत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था, जिसको मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **अहमदनगर**–यहाँ की शासिका चाँद–बीबी युद्ध में पराजित होने के बाद आत्महत्या कर ली।
- **असीरगढ़**–यह अकबर का अंतिम अभियान था। यहाँ के शासक मीरन ने अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और सोने की चाभी प्रदान की, जिससे अकबर ने असीरगढ़ दूर्ग के दरवाजा को खोलकर प्रवेश किया। इस प्रकार सैन्य अभियान पूरा हुआ।

  1605 ई. में अकबर की मृत्यु हो गई और इनको आगरा के समीप सिकन्दरा में दफनाया गया। इन्होंने सलीम को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
- **स्थापत्य कला**–अकबर के समय में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग सबसे अधिक किया गया। इसके समय में स्थापत्य कला के क्षेत्र में जो कार्य हुआ उसका वर्णन निम्नलिखित है–
- **हुमायूँ का मकबरा**–यह दिल्ली में स्थित हें इसका निर्माण अकबर के समय में अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम ने कराया था। इसका वास्तुकार ईरान का रहने वाला मीरक मिर्जा ग्यास था। इसलिए मकबरे पर ईरानी प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- **हुमायूँ के मकबरे को ताजमहल का अग्रगामी कहा गया है।**

  अकबर ने इलाहाबाद, आगरा और अटक के लाल किला का निर्माण कराया था। इसने फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा, पंचमहल, इबादतखाना, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा, अकबरी महल, जोधाबाई का महल, बीरबर का महल, मरियम उज्जमानी का महल आदि का निर्माण कराया।
- **फतेहपुर सीकरी में जोधाबाई का महल सबसे बड़ा है।**
- **पंचमहल बौद्ध धर्म से प्रभावित है।**
- **चित्रकला**–अकबर के समय में मुगलकाल की चित्रकला की पहली पांडुलिपि तैयार की गयी, जिसका नाम दस्तान–ए–आमीरहम्जा या हम्जनामा है। मीर सैय्यदअली और अब्दुस समद ने इसको तैयार किया था। अकबर के समय मरियम और शिशु का चित्र बनाया गया था। इस प्रकार यूरोपिय चित्रकारी का प्रवेश अकबर के दरबार में हुआ था।

  अबुल फजल की आईन–ए–अकबरी में 15 चित्रकारों का नाम दिया गया है, जिसमें दो प्रमुख थे, दसवंत और बसावन।
- दसवंत की सर्वश्रेष्ठ चित्रकला का नाम 'रज्मनामा' है, जिसमें महाभारत का चित्रांकन किया गया है।
- बसावन की सर्वोत्तम कृति है एक दुबले पतले घोड़े के साथ निर्जन स्थान में मजनूं का भटकता हुआ चित्र।

विविध तथ्य :

- अकबर संगीत में भी रूचि रखता था और नक्कारा नामक वाद्ययंत्र बजाता था।
- अकबर ने झरोखा दर्शन, तुलादान प्रथा, नौरोज प्रथा, दाग एवं हुलिया प्रथा की शुरूआत की थी।
- अकबर से प्रथम अंग्रेज यात्री रॉल्फ फिच मिला था। इसका प्रसिद्ध कथन–''आगरा और फतेहपुर सिकरी दोनों ही लंदन से बड़े है।''
- अकबर ने प्रयाग का नाम इलाहाबाद कर दिया था।

जहाँगीर (1605–1627)

- अकबर की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी सलीम मुगल बादशाह बने, जिनके बारे में संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **प्रारंभिक जीवन**–जहाँगीर का जन्म 1569 में शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से हुआ था। इसलिए सलीम नाम रख दिया गया था। जहाँगीर का शाब्दिक अर्थ विश्व को बाँधने वाला या विश्व का मालिक होता है। अकबर ने अब्दुररहीम खानेखाना को इनका संरक्षक और गुरू नियुक्त किया। सलीम के व्यक्ति पर सबसे अधिक प्रभाव अब्दुररहीम खानेखाना का था। अकबर सलीम को शेखो बाबा कहकर संबोधित करते थे। इनका विवाह भगवान दास की पुत्री मानबाई के साथ हुआ जिसके पुत्र खुसरो थे। इनका दूसरा विवाह उदय सिंह की पुत्री जगत गोसाई के साथ हुआ।, जिनका पुत्र खुर्रम था। मान बाई को शाह बेगम की उपाधि से सम्मालिन किया गया। इनका तीसरा विवाह साहिब–ए–जमाल से हुआ, जिनका पुत्र शहरयार था। चौथा पुत्र परवेज की मृत्यु मादक पदार्थ अफीमे सेवन करने से हो गया। पिता की

मृत्यु के बाद सलीम नुरूद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी के नाम से गद्दी पर आसीन हुए।

- **नूरजहाँ**–यह एतमादुद्दौला की पुत्री थी। माँ का नाम अस्मत बेगम और भाई का नाम आसफ खाँ था। नूरजहाँ का पहला विवाह अली–कुली बेग के साथ हुआ था।, जिसको जहाँगीर ने शेर–अफगन की उपाधि से सम्मानित किया था। शेर–अफगन और नूरजहाँ की पुत्री का नाम लाडली बेगम था, जिसका शाहरयार के साथ किया गया था।
- **नूरजहाँ का मूल नाम मेहयनिस्सा था।**

  यह सलीमा बेगम की देखभाल के लिए नियुक्त की गई थी। नवरोज प्रथा के दिन 1611 में मेहयनिस्सा से जहाँगीर ने विवाह किया और नूरजहाँ (विश्व की चाँदनी) या नूरमहल (महल की चाँदनी) की उपाधि से सम्मानित किया। नूरजहाँ ने 1611 से लेकर 1627 तक एक समूह का निर्माण कर प्रशासन पर नियंत्रण कर लिया था।
- **नूरजहाँ गुट**–नूरजहाँ ने प्रशासन पर नियंत्रण के लिए एक समूह का निर्माण किया था, जिसको **नूरजहाँ गुट/जुन्टागुट (भेड़ियों का समूह)** कहा गया है, जिसमें नूरजहाँ, इनकी माँ, पिता, भाई के साथ खुर्रम को शामिल किया गया था। बाद में खुर्रम को हटाकर शहरयार को शामिल कर लिया गया।
- **नूरजहाँ की माँ अस्मत बेगम ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि का आविष्कार किया था।**
- **सैन्य अभियान**–गद्दी पर आने के साथ अभियान किया गया, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **खुसरो का विद्रोह (1606)**–अपने मामा मान सिंह के बहकावे में आकर खुसरो ने स्वयं को मुगल बादशाह घोषित कर दिया। तब अभियान किया गया। यह भागकर सिक्खों के पाँचवें गुरू अर्जुनदेव के पास चला गया परिणामस्वरूप **जहाँगीर ने गुरू अर्जुनदेव की हत्या करा दिया।**
- **मेवाड़ (1607–1615)**–जहाँगीर ने मेवाड़ के शासक राणा अमरसिंह के साथ संधि कर लिया और उनके पुत्र राणा सिंह को 5000 का मनसब लेकर मित्रवत संबंध कायम कर लिया।
- **अहमदनगर (1608–1617)**–इस समय अहमदनगर पर यूथोपिया के निवासी मलिक अम्बर का नियंत्रण था। खुर्रम ने इसको पराजित कर दिया। खुश होकर जहाँगीर ने खुर्रम को इस अवसर पर शाहजहाँ की उपाधि से सम्मानित किया।
- **मलिक अम्बर गुरिल्ला युद्ध पद्धति/छापामार युद्ध पद्धति का जनक था।**
- **मलिक अम्बर पहला व्यक्ति था जिसने अपनी सेना में मराठों को शामिल किया, जिसे बरगीर कहा गया।**
- **मुगल बादशाह में जहाँगीर प्रथम बादशाह है, जिन्होंने अपनी सेना में मराठों को शामिल किया।**
- **मलिक अम्बर ने शेरशाह के समान अपने क्षेत्र में रैय्यतबाड़ी व्यवस्था को लागू किया।**
- **खुर्रम का विद्रोह (1622)**–कंधार जाने से इंकार करते हुए खुर्रम ने विद्रोह कर दिया तब महाबत खाँ ने अभियान किया। खुर्रम भागकर ग्वालियक चला गया। इस प्रकार कंधार हमेशा के लिए मुगलों के हाथ से निकल गया।
- **महाबत खाँ (1626)**–नूरजहाँ के षड्यंत्र से परेशान होकर इसने विद्रोह कर दिया और जहाँगीर को लाहौर के क्रम में गिरफ्तार कर लिया। तब नूरजहाँ ने अभियान किया, लेकिन उनको भी गिरफ्तार कर लिया गया। नूरजहाँ ने सभी को अपने तरफ मिलाते हुए स्वयं को कैदखाने से मुक्त कर लिया। परिणामस्वरूप महाबत खाँ भागकर ग्वालियर खुर्रम के पास चला गया।

  1627 में जहाँगीर की मृत्यु हुई और इनको लाहौर के समीप शहादरा में दफनाया गया।
- **चित्रकला**–सबसे अधिक चित्रकला का विकास जहाँगीर के समय में हुआ, इसलिए **जहाँगीर के काल को चित्रकला का स्वर्ण काल कहा गया है।** इनके दरबार में प्रमुख चित्रकार रहते थे। जैसे–
- **उस्ताद मंसूर**–यह सबसे बड़े चित्रकार थे। यह पशु–पक्षी और पुष्पों के चित्रकार थे। इनकी प्रसिद्ध कृति है बंगाल का पुष्प, बाज का चि, कमल के फूल का चित्र और साइबेरिया का बिरला सारस।
- जहाँगीर ने मंसूर को **नादीर–एल–अस** की उपाधि से सम्मानित किया था।
- **अबुल हसन**–इसने जहाँगीर के राज दरबार का चित्रण किया था। साथ ही तुजुक–ए–जहाँगीर के मुख्य पृष्ठ का भी चित्रकारी इसने किया था।
- **जहाँगीर ने इसको नादीर–उल–जमाँ की उपाधि से सम्मानित किया था।**
- **दौलत**–यह छवि चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध था। इसने अपने सभी साथियों की छवि चित्रकारी की थी।
- **बिशन दास–जहाँगीर ने इसको फारस (ईरान) भेजा था।**
- **स्थापत्य कला**–इस क्षेत्र में सर्वप्रथम **पीट्राडूरा** का प्रयोग किया गया अर्थात् इमारत को सजाने के लिए बहुमूल्य रत्नों से जड़ दिया जाता था, उसी को पीट्रडूरा कहा गया है।
- नूरजहाँ ने शहादरा में जहाँगीर के मकबरे का निर्माण कराया था।
- जहाँगीर ने लाहौर में अनारकली के मकबरे का निर्माण कराया था।
- **पीट्राडूरा का सर्वप्रथम प्रयोग एतमादुद्दौला के मकबरे में किया गया, जिसका निर्माण नूरजहाँ ने आगरा में कराया था।**
- **संगीतकला**–इस क्षेत्र में अधिक विकास नहीं हुआ। तानसेन के पुत्र विलास खाँ, छतर खाँ और हमजान आदि ने संगीत को जीवित रखा। गजल गायक शौकी को जहाँगीर ने आनंद खाँ की उपाधि से सम्मानित किया।

विविध तथ्यः

- जहाँगीर ने **दु–अस्पा और सिंह–अस्पा** को लागू किया ।
- **जहाँगीर ने 12 प्रकार के अध्यादेश** को लागू किया।
- जहाँगीर के समय में पुर्तगालियों ने भारत में तंबाकू की कृषि शुरू किया।
- **जहाँगीर ने तंबाकू सहीत सभी मादक पदार्थों पर प्रतिबंध लगा दिया।**
- जहाँगीर ने आगरा के किला में न्याय की जंजीर लगाया था, जिसको कोई भी व्यक्ति बजाकर न्याय मांग सकता था।
- जिस प्रकार अकबर के समय में तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना की, उसी प्रकार जहाँगीर के समयमें सूरदास ने सूरसागर की रचना कीं
- जहाँगीर ने गुरूवार और रविवार दो दिन पशु हत्या पर रोक लगा दी।
- जहाँगीर एक मात्र मुगल बादशाह है जो होली के त्यौहार में भाग लिये थे।
- जहाँगीर ने दीवाली के अवसर पर जुआ खेलने की प्रथा को शुरू किया था।
- **जहाँगीर** ने एक नया फैशन को शुरू किया। जैसे–कान छिदवाकर बाली पहनना अनिवार्य कर दिया।
- जहाँगीर के समय में ब्रिटेन के शासक **जेम्स–1** का पत्र लेकर **कैप्टन हॉकिन्स** इसके राज दरबार में आया था, जिसको 400 का मनसब और खान की उपाधि जहाँगीर ने दी। हॉकिन्स फारसी भाषा का बहुत बड़ा जानकार था। जहाँगीर ने हॉकिंस को ''इंग्लिश खान'' की उपाधि भी दी थी।
- जहाँगीर के राजदरबार में जेम्स–I के राजदूत **सर–टॉमस** रो आये थे।
- जहाँगीर ने अकबर के द्वारा प्रतिबंधित गौ हत्या को अपने काल में भी प्रतिबंधित किया था।

शाहजहाँ (1627 – 1658)

- शाहजहाँ का शाब्दिक अर्थ–संसार का स्वामी होता है। इनके काल को स्वर्णकाल कहा गया है। इनके समय में स्थापत्य कला का सबसे अधिक विकास हुआ। इसलिए स्थापत्य कला का स्वर्णकला भी शहजहाँ के कहा गया है। इनके उपलब्धियों को वर्णन निम्नलिखित है–
- **प्रांरभिक जीवन–**शाहजहाँ का जन्म 1592 ई. में लाहौर में हुआ था। इनकी माँ का नाम **जगत गोसाई था।** बचपन का नाम खुर्रम था, जिसका शाब्दिक अर्थ खुशी होता है। **अहमदनगर** अभियान के सफल होने पर जहाँगीर ने इनको 1617 ई. में **शाहजहाँ की उपाधि से सम्मानित किया। 1612 ई. में आसफ खाँ की पुत्री अरजुमन्द–बानो से इसका विवाह हुआ जो मुमताज महल के नाम से विख्यात हुई।** 1631 में मुमताजमहल की मृत्यु हुई और इनकी याद में ताजमहल बनवाया गया।

सैन्य अभियान :

- **बुदेलों का विद्रोह (1628–1636)–**जुझर सिंह ने विद्रोह करते हुए स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। इसके विद्रोह को दबाया गया। लेकिन इसके उत्तराधिकारी चम्पत राय और छत्रसाल ने विद्रोह को जारी रखा।
- **खानेजहाँ तेलंगानी का विद्रोह (1628–1631)–**यह मालवा का सुबेदार था। इसके विद्रोह को पूर्ण रूप से कुचल दिया गया।
- **पुर्तगाली (1632)–**इन लोगों ने हुगली पर नियंत्रण करते हुए विद्रोह किया परिणामस्वरूप अभियान किया तब पुर्तगाली लोग फुल्टा द्वीप में शरण लिये।
- शाहजहाँ ने हुगली जैसे औद्योगिक नगर पर नियंत्रण कर लिया।
- **अहमद नगर (1636)–**शिवाजी के पिताजी शाह जी भोसले ने मुर्तजा तृतीय नामक बालक को गद्दी पर बैठाकर स्वयं संरक्षक बन गये। मीरजुमला नामक व्यक्ति भी इस राज्य से संबंधित था। औरंगजेब ने अभियान किया और अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- शाहजहाँ के समय में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिलाया गया। इस विजय के उपलक्ष्य में दिल्ली के समीप शाहजहाँनाबाद नामक नये नगर का निर्माण कराकर इसको राजधानी बनाया गया।
- अहमदनगर विजय के अवसर पर मीरजुमला ने कोहीनूर हीरा शाहजहाँ को प्रदान किया।
- शाहजहाँ ने अपने बड़े पुत्र दाराशिकोह को जैसे ही उत्तराधिकारी घोषित किया उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो गया, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–

उत्तराधिकार का युद्ध :

1. बहादुरगढ़ का युद्ध (फरवरी 1658) – शाहशूजा और जय सिंह विजयी–जय सिंह
2. धरमत का युद्ध (अप्रैल 1658) – जसवंत सिंह और औरंगजेब विजयी–औरंगजेब
3. सामूगढ़ का युद्ध (जून 1658) – दराशिकोह और औरंगजेब विजयी–औरंगजेब
4. देवराई का युद्ध (1659) – दाराशिकोह और औरंगजेब विजयी–औरंगजेब।

- **स्थापत्य कला–**शाहजहाँ के शासन काल को स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहा गया है। इस समय मुख्य विशेषता सफेद संगमरमर का प्रयोग करना था।

- सफेद संगमरमर जोधपुर (राजस्थान) के **मकराना** से मंगाया जाता था।
- **दीवान–ए–आम** – यह दिल्ली में स्थित है। इसमें मयूर सिंहासन या तख्त–ए–ताऊस रखा गया था, जिसमें कोहीनूर हीरा लगा हुआ था। शाहजहाँ के आदेश पर बेबादल खाँ ने मयूर सिंहासन का निर्माण किया था।
- **दीवान–ए–खाश**–दिल्ली के इस इमारत के दीवार पर अमीर खुसरो का एक आयत अंकित है जैसे–**"गर फरदौस बर रूएँ जमी अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्तो"** अर्थात् पृथ्वी पर अगर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, और यहीं है।

  इसने दिल्ली में जामा मस्जिद और लाल किला का निर्माण कराया था। हामिद और अहमद इसके वास्तुकर थे।
- इसने आगरा में मोती मस्जिद का निर्माण भी कराया था।

  पर्सि ब्राउन के अनुसार मोती–मस्जिद मुगल वास्तुकला की सर्वश्रेष्ठ कृति है।
- **ताजमहल**–आगरा में मुमताज महल की याद में शाहजहाँ ने इसका निर्माण कराया। 1631 में कार्य प्रारंभी हुआ जो **1652 में** पूरा हुआ। **उस्ताद इसा खाँ इसका वास्तुकार था। हामिद लाहौरी ने इसका नक्शा तैयार था, जिसको नादिर–उल–असर** की उपाधि से सम्मानित किया गया। ताजमहल की मुख्य विशेषता इसकी लम्बाई और चौड़ाई का समान होता है।
- शाहजहाँ ने श्रीनगर में **शालीमार** बाग और **निशात बाग** का निर्माण कराया था।

  इसने आगरा में दीवाने आम, दीवाने खास, नगीना महल, मच्छीमहल और नहर–ए–बहिस्त का निर्माण कराया।
- मुगल बादशाह में शाहजहाँ के समय सबसे अधिक नहरों का निर्माण किया गया।
- **संगीत कला**–इस क्षेत्र में हमजान और गजल गायक लाल खाँ का नाम लिया जाता है। लाल खाँ को शाहजहाँ ने गुणसमंदर की उपाधि से सम्मानित किया।
- **चित्रकला**–चित्रकला के क्षेत्र में अनुपचित्र और मुहम्मद फकीर इसके दरबार में रहते थे।
- **शिक्षा एवं साहित्य**–इसके राज दरबार में पंडित जगनाथ रहते थे, जिन्होंने रसगंगाधर और गंगालहरी नामक पुस्तक लिखी थी। **केशवदास ने कवि प्रिया, रसिक प्रिया तथा अलंकार मंजरी नामक ग्रंथ लिखा था।**

  1666 में शाहजहाँ की मृत्यु हुई। कैदखाने में इसकी पुत्री जहाँआरा ने इसकी देखभल किया था। इनको ताजमहल में दफनाया गया और इनके बाद औरंगजेब शासक बने।

औरंगजेब (1658 – 1707)

- औरंगजेब मुगल बादशाह में अंतिम महत्वपूर्ण शासक थे। इनके बाद इस वंश का पतन होने लगा था। इनके उपलब्धियों के बारे में संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **प्रारंभिक जीवन**–औरंगजेब का जन्म 1618 में उज्जैन के समीप दोहद नामक स्थान पर हुआ था। इनकी माँ का नाम अर्जुमन्द बानो का बेगम था। दक्षिण भारत के क्षेत्र में शाहजहाँ के समय अपनी योग्यता साबित किया था और औरंगाबाद को राजधानी बनाकर प्रशासनिक व्यवस्था को कायम किया था। ईरान की राजकुमारी दिलराश बानो बेगम से इनका विवाह हुआ था, जिनको रबिया दोरानी भी कहा गया है। औरंगजेब ने 1658 में आगरा में राज्यभिषेक संपन्न कराया और आलमगीर की उपाधि धारण की, जिसका शाब्दिक अर्थ विश्व को बाँधने वाला होता है। इसने देवराई के युद्ध में विजयी होने के बाद दिल्ली में 1659 में अपना विधिवत राज्याभिषेक कराया।
- औरंगजेब एक मात्र मुगल बादशाह है, जिनका दो बार राज्यभिषेक हुआ।
- **सैन्य अभियान**–जब यह गद्दी पर आया सभी स्थानों पर विद्रोह शुरू हो गया, जिसको दबाने के लिए सैन्य अभियान किया गया जैसे–
- **असम (1661)**–यहाँ के शासक चक्रध्वज पराजित हुए।
- **मराठा (1665)**–1665 में जयसिंह और शिवाजी के बीच पुरंदर की संधि हुई और कुछ समय के लिए मराठा मुगल संघर्ष समाप्त हो गया।
- **सिक्ख (1665)**–औरंगजेब के समय सिक्खों के साथ संघर्ष पहले से चला आ रहा था, जो इनके समय में और तेज हो गया।
- **औरंगजेब ने सिक्खों के नौवें गुरू गुरू तेगबहादुर की हत्या करा दी।**
- **सतनामी विद्रोह (1667–1669)** – यह लोग धार्मिक सम्प्रदाय संबंधित थे। मथुरा के समीप नारनौल नामक स्थान पर रहते थे। इस विद्रोह को पूर्ण रूप से दबा दिया गया।
- **बुंदेल विद्रोह (1667–1669)** – इसके समय में बुंदेल नेता छत्रसाल और चम्पतराय ने स्वतंत्र बुंदेलखंड राज्य की स्थापना कर दी।
- **जाट विद्रोह (1669)** – जाट नेता गोकला ने सर्वप्रथम विद्रोह किया जिसकी हत्या कर दी गई, तब राजा राम ने अकबर के मकबरे से उसके बचे हुए अवशेष को निकालकर अग्नि के हवाले कर दिया।
- जाट नेता सूरजमल को जाट जाति का **प्लेटो/अफलातून** कहा गया है।

  कालांतर में बदन सिंह और चुरामन ने स्वतंत्र जाट राज्य की स्थापना कर दी।
- **पश्चिमोत्तर प्रांत (1667–1669)** – इस अभियान में औरंगजेब को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।
- इस अभियान में सबसे अधिक जन (सेना) और धन की क्षति उठाना पड़ा। इस क्षेत्र में अकमल खाँ और भागु खाँ ने विद्रोह किया था, जिसे कुछ समय के लिए ही दबाया जा सका।

- **अकबर का विद्रोह (1681) –** औरंगजेब के पुत्र अकबर ने दुर्गा सिंह राठौर के बहकावे में आकर अपने पिता के खिलाफ विद्रोह करते हुए स्वयं को मुगल बादशाह घोषित कर दिया। जब अभियान करते हुए स्वयं को मुगल बादशाह घोषित कर दिया। जब अभियान हुआ तब यह भागकर शम्भाजी के पास चला गया। परिणामस्वरूप औरंगजेब ने शम्भाजी की हत्या कर दी।
- **मेवाड़ (1681)**–औरंगजेब ने मेवाड़ के शासक राणा उदय सिंह को 5000 का मनसब देकर संधि कर लिया।
- **बीजापुर (1686)**–औरंगजेब ने बीजापुर को जीतकर मुगल साम्राज्य का 19वाँ प्रांत (सूबा) बना दिया।
- **गोलकुण्डा (1687)**–इसको विजित करके मुगल साम्राज्य का 20वां प्रांत बनाया गया।
- **मारवाड़ (1707)**–मारवाड़ की समस्या को औरंगजेब नहीं सुलझा सके, क्योंकि इनकी मृत्यु हो गई तब इनके पुत्र बहादुरशाह–I ने संधि करके सुलझा लिया।

औरंगजेब की मृत्यु अहमदनगर के समीप 1707 में हुआ और इनको औरंगाबाद में दफनाया गया।

- धर्म के मामले में अधिकांश इतिहासकारों ने इनको अकबर के विपरीत माना है, क्योंकि यह धर्म के मामले में कट्टर थे। कुछ महत्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित है–
- इसने 1679 में जजिया कर को पुनः लागू कर दिया।
- इसने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूल किया।
- इसने सोमनाथ के मंदिर, काशी के विश्वनाथ मंदिर और मथुरा के केशवराय मंदिर को तोड़ दिया।

  इसने अकबर द्वारा शुरू किया गया झरोखा दर्शन, तुलादान की प्रथा, नौरोज प्रथा और सिक्का पर कलमा को अंकित कराने की प्रथा को समाप्त कर दिया।
- इसने साबरमती के तट पर दाह संस्कार को भी प्रतिबंधित कर दिया।
- औरंगजेब ने उपर्युक्त सभी पर निगरानी रखने के लिए मुहतसिब नामक अधिकारी की नियुक्ति की अर्थात् मुहतसिब सार्वजनिक आचार–विचार का अधिकारी था।
- इसने अपनी धार्मिक नीति को लागू करने के लिए एक अध्यादेश जारी किया जिसको जबावित कहा गया।
- **स्थापत्य कला**–इस क्षेत्र में औरंगजेब को रूचि नहीं थी, फिर कुछ इमारत का निर्माण किया गया जैसे–
- इसने दिल्ली में मोती–मस्जिद का निर्माण कराया था।
- असने औरंगाबाद का निर्माण कराकर वहाँ पर अपनी पत्नी रबिया दोरानी का मकबरा भी बनवाया था, जिसको ताजमहल का फूहड़ नकल माना गया है।
- औरंगजेब का मकबरा भी औरंगाबाद में स्थित है।
- इसने लाहौर में बादशाही मस्जिद का निर्माण कराया था।

विविध तथ्य :

- औरंगजेब को जिंदा पीर या शाही दरवेश (संत) कहा गया है।
- औरंगजेब के दरबार में **सबसे अधिक हिंदू मनसबदार थे।**
- औरंगजेब संगीत के क्षेत्र में रूचि नहीं रखता था, लेकिन प्रसिद्ध वीणा वांदक था। इसकी के समय में सबसे अधिक संगीत की पुस्तक लिखा गयी।
- इसके समय में फ्रांस के यात्री ट्रेवनियर (जौहरी), और बर्नियर (चिकित्सक) ने भारत की यात्रा की थी
- इटली के प्रसिद्ध यात्री मनुची ने दाराशिकोह के सेना में तोपची के रूप में कार्य किया था।

मुगल वंश के पतन का कारण :

- 1526 में बाबर ने जिस मुगल वंश की स्थापना किया था वह 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद पतन की तरफ अग्रसर हो गया, जिसका मुख्य कारण निम्नलिखित है–

(i) अयोग्य उत्तराधिकारी
(ii) विघटन की प्रक्रिया
(iii) औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीति
(iv) आर्थिक कारण
(v) नादिरशाह का आक्रमण

मुगलकालीन प्रशासन

- **मुगल प्रशासन**–मुगल वंश के शासकों ने जिस प्रशासन की स्थापना की थी। वह पूर्ण रूप से केन्द्रीकृत प्रशासन था। क्योंकि सम्पूर्ण

शक्ति केन्द्र में आकर समाहित हो जाता थ्शा। अध्ययन की सुविधा के लिए इसको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। जैसे–

1. **केन्द्रीय प्रशासन :**

- **शासक–**किसी भी राजतंत्रात्मक व्यवस्था में शासक व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का सर्वोच्च और अंतिम रूप से निर्णय लेने वाला अधिकारी होता है, जो यहाँ भी था।
- **मंत्रिपरिषद्–**राजा की सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद् का गठन किया गया था, जिसमें वकील का पद सबसे बड़ा था, जो दीवान–ए–वजीरात–ए–कुल के अधीन होता था।
- अकबर ने सुलह–ए–कुल (सबके लिए शांति) की स्थापना की थी।

कालांतर में वकील के पद को चार भागों में विभाजित किया गया था, जैसे–

(1) मीर बख्शी (सेनापति)
(2) मीर समाँ (शाही भंडारी)
(3) वजीर/दीवान (प्रधानमंत्री/वित्तमंत्री)
(4) सद्र–उस–सुदूर (धार्मिक न्यायाधीश)

उपर्युक्त चारो अधिकारी केन्द्र स्तर पर प्रशासन के चार स्तंभ थे। इनकी सहायता के लिए अन्य अधिकारी थे, जैसे–

- काजी–उल–कजात > मुख्य न्यायाधीश
- बयूतात > मृत व्यक्ति के संपत्ति की रखवाली करने वाला अधिकारी।
- दरोगा–ए–डाकचौकी > गृह विभाग और गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी।
- दरोगा–ए–तोपखाना > तोपखाना का प्रधान अधिकारी।
- **सैन्य–प्रशासन –**मुगल साम्राज्य का विस्तार सैन्य प्रशासन के द्वारा किया गया था, जिसको निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है–
- **मनसबदारी व्यवस्था–**मनसब एक अरबी शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ पद/ओहदा होता है। जो व्यक्ति मनसब प्राप्त करता था उसे मनसबदार कहा जाता था। इसको वेतन के रूप में कर मुक्त जागीर भूमि दिया जाता था। तब यह जागीरदार कहलाता था। यह पद वंशानुगत नहीं था, बल्कि योग्यता के आधार पर मिलता था। यह तीन श्रेणी में विभाजित था, जैसे–

(i) 10 - 500
(ii) 500 - 2500
(iii) 2500 से ऊपर

- **मनसबदारी व्यवस्था को अकबर ने लागू किया था।**
- मनसबदारी व्यवस्था मंगोल नेता चंगेज खाँ की देन है, जो दशमलव प्रणाली पर आधारित था।
- मनसबदारी व्यवस्था मध्य–एशिया से लिया गया है।
- **जात–ओ–सवार–**मनसबदारी व्यवस्था के अन्तर्गत अकबर ने इसको लागू किया। जात का शाब्दि अर्थ व्यक्तिगत या प्रतिष्ठा और सवार का शाब्दिक अर्थ घुड़सवार होता है। यह भी तीन भागों में बँटा है–

जात	**–**	**सवार**
(i) 500	-	500
(ii) 500	-	300
(iii) 500	-	200

- **जहाँगीर ने दुअस्पा और सिंह–अस्पा को लागू किया।**
- शाहजहाँ ने मासिक वेतन के आधार पर मनसबदारी व्यवस्था को लागू किया था।

औरंगजेब के समय यह एक जटिल–प्रक्रिया बन गया। मनसबदारों की संख्या अधिक हो गई देने के लिए जागीर भूमि नहीं था परिणामस्वरूप इन लोगों ने विद्रोह कर दिया, जो मुगलों के पतन का कारण बना।

मुगल सैन्य प्रशासन का विभाजन निम्नलिखित रूपों में किया गया है।

- **अहदी सेना–**सामंतों की सेना।
- **दाखिली सेना–**मुगल बादशाह द्वारा नियुक्त की गयी सेना
- **पैदल सेना (पायक)–**इसे दो भागों में बाँटा गया था।

(i) **सेहबंदी–**कर वसूलने वाली सेना।
(ii) **अहसाम–**युद्ध में शामिल होने वाली सेना।

- **अश्वरोही सेना–**इसे दो भागों में बाँटा गया था।

(i) **बरगीर–**जिन सैनिकों को अश्व के साथ–साथ सभी आवश्यक वस्तु सरकार के द्वारा मिलता था, उसे बरगीर कहा गया।
(ii) **सिलहदार–**जो सैनिक अश्व के साथ–साथ सभी साजो सामान की व्यवस्था स्वयं करते थे, सिलहार कहलाते हैं।

- **तोपखाना–**इसे भी दो भागों में बाँटा गया था।

(i) **दस्ती–**हल्का तोप।

(ii) **जिंशी**–भारी तोप।—

- **गज सेना**–अकबर के पास गज सेना भी थी, जिसको खाश कहा गाय है।
- **नौ–सेना/जल सेना/जल बेड़ा**–मुगल नौ सेना को अमीर–उल–बहर कहा गया है।

राजस्व–प्रशासन

- यह आय का मुख्य स्रोत था, जिसमें भूमिकर सबसे प्रमुख था, जो 1/3 लिया जाता था। इस आधार पर भूमि का विभाजन तीन भागों में किया गया था। जैसे–

(i) खालमा भूमि–राजकीय भूमि।
(ii) जागीर भूमि–वेतन के बदले दी गई भूमि।
(iii) मदद–ए–माश/सयूरगल–धार्मिक कार्य के लिए दी गई कर मुक्त भूमि।

दहसाला प्रणाली :

- **इस प्रणाली के जनक टोडरमल थे।**

इस प्रणाली को टोडरमल प्रणाली या आदन–ए–दहसाला प्रणाली भी कहा गया है। इसको लागू किया था, जिसके अन्तर्गत भूमि का विभाजन चार भागों में किया गया था। जैसे–(i) पोलज (ii) परती (iii) दाचर (iv) बंजर।

- जिस भूमि पर प्रत्येक वर्ष कृषि कार्य किया जाता था, उसको **पोलज** कहा गया है।

किसानों का वर्गीकरण तीन भागों में किया गया है।

(i) **खुदकाश्त**–जो किसान अपने गाँव में रहकर अपनी भूमि पर कृषि कार्य करते थे उनको खुदकाश्त कहा गया है।
(ii) **पाहीकाश्त**–जो किसान गाँव में जाकर कृषि कार्य संपन्न करते हों उन्हें पाहीकाश्त कहा गया।
(iii) **मुजारियान**–बटाई पर भूमि लेकर कृषि कार्य करने वाले।

मुद्रा–व्यवस्था

- अकबर के समय में बहुत सारा सिक्का जारी किया गया। जैसे–शहंशाह, बिसात, इलाही, जलाली, शंसब, चुगल।
- सोने का सबसे बड़ा सिक्का शंसब था।
- सबसे लोकप्रिय सिक्का इलाही था।
- अकबर ने राम और सीता की आकृति वाला सिक्का जारी किया था।
- मुगल बादशाह जहाँगीर ने अपना नाम अपना चित्र और दूसरी तरफ नूरजहाँ के नाम से अंकित वाला सिक्का जारी किया था।

2. प्रांतीय–शासन :

- कुशल प्रशासनिक व्यवस्था के लिए साम्राज्य को विभिन्न प्रशासनिक ईकाइयों में बांट दिया गया था। अकबर के समय में 15 सूबा, शाहजहाँ के समय में 18 और औरंगजेब के समय में 20 सूबा था।

प्रशासनिक ईकाई	अधिकारी
साम्राज्य	बादशाह
सूबा (प्रांत)	सूबेदार
सरकार (जिला)	अमलगुजार, फौजदार
परगना (अनुमंडल)	आमिल
मवदा/डीह (गाँव)	खुत, मुकद्दम, चौधरी
नागला (मुहल्ला)	खुत, मुकद्दम, चौधरी

- शाहजहाँ ने सरकार और परगना के बीच चकला नामक नई प्रशासनिक ईकाई का गठन किया।

शिक्षा एवं साहित्य

- मुगलों की राजकीय भाषा फारसी था। बाबर ने सुहरत–ए–आजम नामक विभाग की स्थापना की और अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की।
- अब्दुल कादिर बनायूँनी ने महाभारत का फारसी भाषा में **रज्मनामा** नाम से अनुवाद किया।
- बदायूँनी ने रामायण का भी फारसी में अनुवाद इब्राहिम–सरहिन्दी ने किया।
- अथर्ववेद का फारसी में अनुवाद इब्राहिम–सरहिन्दी ने किया।
- टोडरमल ने भागवत पुराण का फारसी में अनुवाद किया।
- लीलावती और लनदयामंती का फारसी में अनुवाद किया।
- पंचतंत्र का फारसी में यार–ए–दानिश/कलीला–बा–दीमना के नाम से अनुवाद अबुल–फजल ने किया।
- दाराशिकोह मुगलों में सबसे ज्यादा शिक्षित थे, जिन्होंने 52 उपनिषद का अनुवाद सिर्र–ए–अकबर के नाम से कराया।

- बयाना से सबसे अधिक सिक्कों का ढेर मिला है।

- **पतन का कारण**–गुप्त वंश के पतन के लिए अनेक कारण उत्तरदायी हैं, जैसे–
  1. अयोग्य उत्तराधिकारी
  2. कमजोर आर्थिक स्थिति
  3. सामंतवादी प्रथा की भूमिका
  4. हूणों का आक्रमण।

संगम काल

संगम का शाब्दिक अर्थ यहाँ पर समारोह या सम्मेलन या गोष्ठी होता है अर्थात् तमिल साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान एक स्थान पर उपस्थित होकर अपने–अपने तमिल साहित्य प्रसिद्ध विद्वान एक स्थान पर उपस्थित होकर अपने–अपने ग्रंथ को प्रकाशित कराने का प्रयास करते थे, जिसको संगम कहा गया।

संगम काल के बारे में अशोक के अभिलेख, मेगास्थनीज की इंडिका, ऐतरेय ब्राह्मण और पाणिनी के अष्टाध्यायी से भी जानकारी मिलता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण जानकारी संगमकालीन ग्रंथों से मिलता है।

संगमकालीन गंथ के अनुसार पाण्डय वंश के शासकों के संरक्षण में तीन संगम का आयोजन किया गया था। इसमें 197 पाण्ड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया और 8598 तमिल कवि शामिल हुए, जो 9990 वर्षों तक चला था। लेकिन प्रोफेसर नीलकंठ शास्त्री के अनुसार संगम का काल 100 ई. 300 ई. के मध्य का माना जा सकता है। तीनों संगम के बारे में निम्नलिखित रूपों में हमलोग देख सकते हैं।

स्थान	अध्यक्ष	उपलब्ध ग्रंथ
(1) मदूरा (मदुरई)	अगतनियार (अगस्त ऋषि)	×
(2) कपाटपूरम (अलवै)	अगतनियार तोलकापियर	तोलकापियम
(3) उत्तरी मदूरा	नक्कीरर	शिल्पादिकारम् मणिमेखलै, जीवक चिन्तामणि, कुरल

- **शिल्पादिकारम्**–इसका शाब्दिक अर्थ नूनुर की कहानी होता है। इसके लेखक का नाम इलांगोआदिगल है। इसका नायक कोवलन और नायिका कन्नगी और गणिका माधवी के रूप में लिखा गया है। यह सामाजिक संदेश देने वाला ग्रंथ है।
- इसको तमिल साहित्य का इलियड कहा गया है।
- **मणिमेखलै**–कोवलन और माधवी की पुत्री का नाम मणिमेखलै था इसलिए यह नाम पड़ गया। जहाँ शिल्पादिकारम की कहानी समाप्त होती है वहीं से इसकी शुरूआत होती है। इसने बौद्ध धर्म को अपनाकर संसारिक मोह माया का त्याग कर दिया। इसके लेखक का नाम सीतलै संतनार है।
- इस ग्रंथ को तमिल साहित्य का ओडिसी कहा गया है।
- **जीवकचिंतामणि**–इसे जैन धर्म का ग्रंथ माना गया है। इसके लेखक तिरूक्कदेवर थे, जो जैन विद्वान थे। इस ग्रंथ में आठ प्रकार के विवाह का उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ को विवाह ग्रंथ, (मणनूल) कहा गया है।
- **कुरल**–इसे तमिल साहित्य का महाकाव्य या रामायण कहा गया है, जिसके लेखक तिरूवल्लूर है।
- **तोलकापियम्**–इस ग्रंथ के लेखक का नाम तोलकापियर है।
- यह दक्षिण भारत का या तमिल साहित्य का **पहला व्याकरण** ग्रंथ है।

संगमकालीन वंश :

- संगमकाल के अन्तर्गत तीन वंशों ने जैसे–**पाण्ड्य वंश, चोल वंश एवं चेर वंश** ने शासन किया। **अशोक के अभिलेख में इन तीनों वंशों** के साथ–साथ एक और वंश सतीयपुत्र का उल्लेख किया गया है। लेकिन इस वंश की पहचान अभी तक नहीं हुई है। तीनों वंश के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है–
- **पाण्ड्य वंश**–इस वंश के संरक्षण में तीनों संगम का आयोजन हुआ था। इन लोगों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी मेगास्थनीज की इंडिका से मिलता है। मेगास्थनीज के अनुसार पाण्ड्य राज्य का शासन व्यवस्था किसी महिला के हाथ में केंद्रित था अर्थात् मातृसत्तात्मक लक्षण था। इन लोगों का राजकीय चिन्ह मछली था।
- **नेडियोन**–यह पाण्ड्य वंश का संस्थापक था। इसने मदूरा को राजधानी बनाकर शासन किया। इसने समुद्र पूजा की प्रथा को शुरू किया था। इसने समुद्र पूजा की प्रथा को शुरू किया था। इस शासक ने सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान देते हुए पहरूली नदी पर एक बाँध का निर्माण कराया था।
- **पालशलै–मुडुकुड़मी**–पालशलै का शाब्दिक अर्थ एक से अधिक यज्ञ कराने वाला होता है। इस शासक को अधिक यज्ञ संपन्न कराने वाला कहा गया है।
- **नेडूनजेलियन**–यह पाण्ड्य वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने तलैयालंगानम् के युद्ध में चेर वंश के शासक शेय को पराजित कर

दिया जो इसके सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माना गया है। शेय को हाथी के आँख वाला शासक कहा गया है।

- इसी शासक ने निर्दोष कोवलन को फाँसी पर चढ़ा दिया था। सत्य की जानकारी के बाद इसने आत्महत्या कर लिया और इसी के समय में कोवलन की पत्नी कन्नगी ने पाण्ड्य राज्य का त्यागकर चेर राज्य में शरण ले लिया।
- **नलियकोड्डन**–यह पाण्ड्य वंश का अंतिम शासक था। इसके बाद पाण्ड्य वंश का काल कुछ समय के लिए अंधकार का काल माना जाता है। मध्यकाल में यह लोग पुर्नस्थापित हुए थे।

चोल वंश :

- इन लोगों का कार्यस्थली मुख्य रूप से तमिलनाडु का क्षेत्र था। तमिलनाडु में बेल्लार और पेन्नार नदियों के बीच के क्षेत्र को चोलमण्डलम् या तोण्डेण्डलम् कहा गया है। इसी क्षेत्र में इन लोगों ने शासन व्यवस्था को संचलित यिका था। इन लोगों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी अष्टाध्यायी से मिलता है। इनका राजकीय चिन्ह बाघ था। कुछ महत्वपूर्ण शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–
- **इलनजेतचेन्नी**–यह चोलवंश का संस्थापक था। इसने उरैयूर को अपनी राजधानी बनाया।
- उरैयूर सूतीवस्त्र के लिए विश्वविख्यात था।
- **करिकाल**–यह चोलवंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसे जले हुए पैर वाला शासक कहा गया है।
- यह सात सूरों का ज्ञाता भी था। इसने वेण्णी के युद्ध में चेर और पाण्ड्य वंश की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया जो इसी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माना गया है। इसने सिंचाई के लिए लिए कावेरी नदी के तट पर 160 किमी. लंबा बाँध का निर्माण कराया था और वेण्णी ये युद्ध में कैद किये गए सैनिकों को निर्माण कार्य में लगा दिया था।
- इसने कावेरी के तट पर पुहार नामक एक नगर का निर्माण कराया और उरैयूर के स्थान पर पुहार को राजधानी बना लिया।
- पुहार को कावेरीपट्टनम भी कहते हैं, जहाँ से सबसे अधिक जलमार्ग से व्यापार किया जाता था।
- **ऐलोरा**–इस शासक ने श्रीलंका को जीतकर लगभग 50 वर्षों तक वहाँ शासन किया। इसके बाद कुद समय के लिए चोलों का काल अंधकार का काल माना गया। कालांतर में वियालय के द्वारा पुनः चोल वंश की स्थापना की गयी।

चेर वंश :

- संगमकाल के अन्तर्गत चेर वंश एक महत्वपूर्ण वंश था, जिसको केरल पुत्र के नाम से भी हमलोग जानते हैं। इन लोगों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी एतरेय ब्राह्मण से मिलता है। इन लोगों का राजकीय चिन्ह धनुष था। इन लोगों ने वरूर, और वांजी को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया। करूर मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। कुछ प्रमुख शासक निम्नलिखित हैं–
- **उदयनजेरल**–यह चेर वंश का संस्थापक था। परम्परा के अनुसार यह माना गया है कि इसने महाभारत के युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों को भोजन कराया था।
- **कुट्टवन**–चेर वंश के इतिहास में इस शासक को अनेक हाथियों वाला शासक कहा गया है।
- **शेनगुट्टवन**–यह चेर वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसको लालचेर भी कहा गया हैं इसी समय में कन्नगी पाण्ड्य राज्य को छोड़कर चेर राज्य में आकर समाधी ले लिया था।
- कन्नगी के स्मृति में इसने कन्नगी पूजा या पत्नी पूजा की पूजा को प्रारंभ किाय।
- **इरम्पोरई**–यह चेर वंश का अंतिम शासक था। इसके समय में पड़ोसी राज्य तडगुर के शासक नडुमानअंजी ने स्वर्ग से गन्ने के पौधे को लाकर दक्षिण भारत में गन्ने की कृषि का कार्य प्रारंभ कराया।

विविध तथ्य :

- राजा प्रतिदिन अपनी सभा में बैठक करता था, जिसका नलवै कहा गया।
- सर्वोच्च न्यायालय को मनरम् और गुप्तचर अैर्रर या वै कहा गया।
- इस समय पुहार नामक बन्दरगाह से सबसे अधिक व्यापार किया जाता था।
- वाणिज्य व्यापार के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी 'पेरिप्लस–ऑफ–द–ऐरिथ्रियन–सी' नामक ग्रंथ से प्राप्त होता है।
- अरिकामेडु से रोम के साथ व्यापार करने का साक्ष्य भी मिला है।
- याल नामक वाद्य यंत्र से मनोरंजन किया जाता था। इस समय भू–राजस्व को कराई और सीमा शुल्क को उलगु कहा गया है।
- सबसे प्रमुख देवता मरूगन थे। इनका प्रतीक चिन्ह मुर्गा था।

पल्लव वंश

- दक्षिण भारत के इतिहास में चोल, चालुक्य और पल्लव तीन महत्वपूर्ण वंशों का नाम शामिल है। पल्लव वंश को द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा का वंशज माना गया है। समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार 350 ई.–575 ई. के बीच पल्लव वंश के 16 शासक हुए, जिसमें समुद्रगुप्त ने अपने अभियान के क्रम में विष्णुगोप को पराजित किया था। यह लोग स्वतंत्र शासन नहीं थे। इतिहासकारों के अनुसार यह लोग कुषाणों के

सामंत थे।

- दक्षिण भारत में द्रविड़ शैली के अन्तर्गत इन लोगों ने क्षेत्रीय शैली को जन्म दिया, जिसके लिये याद किया जाता है।

शासक	शैली	शासक	शैली
महेन्द्रवर्मन–I	महेन्द्र शैली	नरसिंहवर्मन–I	मामल्ल शैली
नरसिंहवर्मन–II	राजसिंह शैली	नंदीवर्मन	नंदीवर्मन शैली

- 350 ई. से लेकर 897 ई. के बीच पल्लव वंश के अन्तर्गत निम्नलिखित शासकों ने शासन किया था, जिसमें कुछ प्रमुख का वर्णण यहाँ किया जा सकता है–
- **वप्पदेव**–यह पल्लव वंश का संस्थापक था। यह सामंत के यप में शासन कर रहा था। इसको कुषाणों का सामंत माना गया हैं इसने एक छोटे से क्षेत्र में अपने राज्य को स्थापित किया था।
- **सिंहविष्णु (570–600)** यह पल्लव वंश के प्रथम स्वतंत्र शासक थे। इन्होंने चोलों का क्षेत्र तोण्डेमंडलम् को जीत लिया और इस उपलक्ष्य में अवनी सिंह की उपाधि धारण किया।
- इसको पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक कहा गया है।
- इसके समय में चालुक्यों के साथ संघर्ष प्रारंभ हुआ, जिसमें यह सफल हुए। इसने महाबलिपुरम् में आदिवराह मंदिर का निर्माण कराया, जिससे स्पष्ट होता है कि यह वैष्णव/भागवत धर्म का अनुयायी था।
- इसने **काँची** को अपनी राजधानी बनाया था।
- इसके राजदरबार में प्रसिद्ध विद्वान भारवि रहते थे, जिन्होंने किरतार्जुनीय नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- **महेन्द्रवर्मन–I (600-630) :** इसने महेन्द्रमर्वन शैली का जन्म दिया था। चालुक्यों के साथ संघर्ष में यह भी सफल रहा। इसने विचित्रचित, गुणभर, मातविलास, आदि की उपाधि धारण की थी।
- इसने मतविलास प्रहसन नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- शैव धर्म के प्रसिद्ध संत और संगीताचार्य भैरवाचार्य के दिशा निर्देशन में संगीत शास्त्र की पुस्तक कुडमिमालय की रचना की गयी थी, जिससे स्पष्ट होता है कि यह शासक संगीत में भी रूची रखता था।
- **नरसिंहवर्मम–I (630-668) :** यह पल्लव वंश के सबसे महत्वपूर्ण शासक थे। इनके बारे में कुर्रम दानपत्र अभिलेख और कशाकुट्टी अभिलेख से जानकारी मिलता है। यह शासक मामल्ल शैली का जनक था। इसने मामल्ल या महामल्ल की उपाधि किया था। इसने पल्लव राज्य का सबसे अधिक विस्तार किया।
- इसने मामल्लपुरम्/महाबलिपुरम् नामक नगर का निर्माण कराया।
- इसने महाबलिपुरम् में रथमंदिर का निर्माण कराया।
- रथमंदिर को सप्तपैगोडा भी कहा जाता है, जो रथ के आकार का है और पाँच पाण्डव, द्रोपदी और गणेश को समर्पित है।
- **इसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन–II को पराजित कर वतापीकोण्ड की उपाधि धारण की।**
- इसने पुलकेशिन–II को पराजित करने के बाद उसके पीठ पर विजय शब्द अंकित कर दिया। यह शुद्ध शूरमार और परमाण के युद्ध के नाम से विख्यात है।
- इसी शासक के समय में **व्हेनसांग ने काँची** की यात्रा की थी।
- **महेन्द्रवर्मन–II (668-670) :** इसे मध्यम लोकपाल कहा गया है। इसने ब्राह्मणों की संख्या घटिका को दान दिया था, जहाँ पर शिक्षा–दीक्षा का कार्य भी होता था।—
- **परमेश्वरवर्मन–I (670-695) :** शिक्षा के क्षेत्र में अधिक रूची रखने के कारण विधानविनीत की उपाधि दी गयी थी इसने महाबलिपुरम् में गणेश मंदिर का निर्माण कराया।
- **नरसिंहवर्मन–II (695-728) :** हय राजसिंह शैली का जनक था। इसने राजसिंह की उपाधि भी धारण किया था।
- इसने **काँची में कैलाशनाथ मंदिर** और महाबलिपुरम् में समुद्रतटीय मंदिर और एरावतेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।
- दसकुमारचरित के लेखक दण्डिन इसके समकालीन थे।
- **अपराजित (879–897)** : चोल वंश के आदित्य–I ने इसको गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत कर दिया।

चालुक्य वंश

- दक्षिण भारत के इतिहास में चालुक्य वंश का महत्वपूर्ण स्थान है। इन लोगों ने तीन शाखाओं में विभाजित होकर शासन किया था, जिसमें वतापी के चालुक्त सबसे महत्वपूर्ण थे। इन लोगों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **जयसिंह**–यह चालुक्य वंश का संस्थापक था। इसने सामंत के रूप में शासन किया, क्योंकि यह स्वतंत्र शासक नहीं था।

- इसने वतापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
- धार्मिक परम्पराओं के अनुसार चालूक्यों का जन्म भगवान ब्रह्मा के चुलूक से हुआ है, और इसी चुलुक शब्द से चालुक्य शब्द का जन्म हुआ था।
- पृथ्वीराजरासो के अनुसार चालुक्यों का जन्म अग्नि–कुण्ड से हुआ था।
- **रणराज (520–550)**–यह गदा युद्ध में माहिर थे, इसलिए इसे रणराज्ञ की उपाधि से सम्मानित किया गया था। इनकी तुलना भीम के साथ किया था।
- **पुलकेशिन–I (550-567) :** यह प्रथम स्वतंत्र शासक था। इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। इसने अश्वमेघ यज्ञ भी सम्पन्न कराया था, जिससे स्पष्ट होता है कि इसके समय में क्षेत्र का विस्तार हुआ होगा। इसको चालुक्य वंश का वास्तविक संस्थापक माना गया है।
- **पुलकेशिन–II (609-645) :** यह चालुक्य वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसके **बारे में एहोल अभिलेख** से जानकारी मिलती है, जिनके लेखक रविकृति थे।
- **एहोल को** मंदिरों का नगर भी कहा गया है।
- इसने हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के किनारे पराजित किया था, जिसका उल्लेख एहोल अभिलेख में है।
- इस विजय के उपलक्ष्य में इसने परमेश्वर, सत्याज्ञय, श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराज आदि की उपाधि की। लेकिन पल्लव वंश के शासक नरसिंहवर्मन–I ने इसको पराजित करके युद्ध भूमि में इसकी हत्या कर दी।
- इसी के समय में **व्हेनसांग ने वतापी** की यात्रा की थी।
- **विक्रमादित्य–II (735-745) :** यह अंतिम महत्वपूर्ण शासक था। इसने पल्लव वंश के शासक नंदीवर्मन को पराजित करके कांचिनकोण्ड की उपाधि धारण की।
- इसकी प्रथम पत्नी लोक महादेवी ने पडकल में विरूपाक्ष महादेव मंदिर और दूसरी पत्नी त्रिलोकी महादेवी ने त्रिलोकेश्वर मंदिर का निर्माण कराया, जो द्रविड़ शैली में बना हुआ है, लेकिन इसको चालुक्य शैली कहते हैं।
- **कीर्तिवर्मन–II (745-753) :** यह वतापी के चालूक्यों में अंतिम शासक था। राष्ट्रकूटों ने इसको गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत कर दिया।
- **वेंगी के चालुक्य**–यह आंध्रप्रदेश का क्षेत्र है। पुलकेशिन–II ने वेंगी को जीतकर अपने भाई विष्णुवर्धन को दे दिया जिसने यहाँ पर चालूक्य वंश को स्थापित किया जो वेंगी के चालुक्य कहलाए। कालांतर में यह वंश–चालुक्य वंश के नाम से विख्यात हुआ।
- **कल्याणी के चालुक्य**–यह महाराष्ट्र का क्षेत्र है। तैलप–II ने राष्ट्रकूओं की सत्ता को समाप्त करते हुए कल्याणी में चालुक्य वंश को स्थापित किया। इस वंश के महत्वपूर्ण शासक सोमेश्वर–III ने मानसोल्लास नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक विक्रमादित्य–VI था, जिसने 1076 ई. में चालुक्य संवत् को जारी किया था।
- विक्रमादित्य–VI के राज्य कवि **विल्हण थे, जिन्होंने विक्रमांकदेवचरित नामक** ग्रंथ की रचना की थी।
- इस शासक के समकालिन विज्ञानेश्वर थे, जिन्होंने मिताक्षरा नामक ग्रंथ की रचना की थी जो, हिन्दू उत्तराधिकार से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
- पम्पा, पोन्ना, रन्ना कन्नड़ के त्रिरत्न माने गए हैं।
- इस प्रकार चालुक्य वंश को समाप्त करने का श्रेय राष्ट्रकूटों को दिया जाता है, लेकिन अंततः चालूक्यों ने ही राष्ट्रकूटों की सत्ता को समाप्त कर दिया।

चोल वंश

- चोल वंश के बारे में प्राचीन भारत में दो भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जाता है। (i) संगमकाल के अंतर्गत (ii) नौवीं शताब्दी में विजयालय द्वारा स्थापित चोल वंश।
- उत्तरमेरूर (तमिलनाडु) अभिलेख से इन लोगों के उपलब्धियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। स्थानीय स्वशासन और नटराज की मूर्ति के लिए चोल वंश विख्यात है। इन लोगों ने जिन क्षेत्र में शासन व्यवस्था को संचालित किया, उसे चोलमंडम् या तोण्डेमंडलम् कहा गया है। कुछ प्रमुख शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–
- **विजयालय (850–875)** – यह चोलवंश का संस्थापक था।
- इसने तंजौर को जीतकर राजधानी बनाया और इस उपलक्ष्य में नरकेसरी की उपाधी धारण किया।
- इसने अपनी राजधानी तंजौर में चोलेश्वर मंदिर का निर्माण कराया, जो चोलों का प्रारभिक मंदिर है।
- **आदित्य–I (875-907) :** इसके समय में पल्लवों के साथ संघर्ष हुआ और इसने पल्लव वंश के शासक अपराजित को पराजित करके उस वंश का अंत कर दिया। इस उपलक्ष्य में कोदण्डराम की उपाधी धारण की।
- **परांतक–I (907-955) :** इसने उत्तरमेरूर अभिलेख को जारी किया था, जिससे इस शासक के साथ–साथ चोलों के उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है। इसने पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण करके राजधानी मदूरा को जीत लिया और इस उपलक्ष्य में मदूराकोण्ड की उपाधी धारण

की। तक्कोलन (949) का युद्ध चोल और राष्ट्रकूटों के बीच हुआ था। राष्ट्रकूट वंश के शासक कृष्ण–III ने इसको पराजित कर दिया।

- **परांतक–II (956-973) :** इसको इतिहास में सुंदर चोल के नाम से याद किया जाता है।
- **राजराज–I/अरिमोलीवर्मन (985–1014)–**यह सम्राज्यवादी प्रवृत्ति का शासक था। इसने श्रीलंका पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक महेन्द्रपंचम् को पराजित करके उनकी राजधानी अनुराधापुरम् पर अधिकार कर लिया। जीते हुए क्षेत्र का नाम मामुण्डलीचोलमण्डलम् रख दिया और इसकी राजधानी पोलोनरूवा को बनाया।
- इसके समय में शैलेन्द्र वंश के शासक (जावा–सुमात्रा क्षेत्र) श्रीमार–विजयोतुंग–वर्मन ने नागपट्टम में एक बौद्ध मठ का निर्माण कराया था।
- इस शासन ने सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया था साथ ही ऐतिहासिक तिथियों के साथ अभिलेख को भी जारी किया था।
- कला के क्षेत्र में इसने अपनी **राजधानी तंजौर में राजराजेश्वर मंदिर या वृहदेश्वर मंदिर (शैव धर्म) का निर्माण कराया,** जो द्रविड़ कला सर्वोत्तम कृति माना जाता है।
- **राजेन्द्र प्रथम (1014 – 1044)** यह चोल वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसी के समय में सबसे अधिक क्षेत्र का विस्तार हुआ। इसने भी श्रीलंका के विरूद्ध अभियान किया जो सफल रहा। इसने श्रीलंका के राजा, रानी, उनकी पुत्री, वाहन, राजमुकुट पर अधिकार कर लिया। राजमुकुट का अपमान करने के लिए इसकी आलोचना की गयी है। श्रीलंका के शासक महेन्द्र पंचम् तंजौर के कैदखाने में मृत्यु को प्राप्त हुए।
- इसने शैलेन्द्र वंशी शासक श्रीमार–विजयोतुंगवर्मन के साथ भी संघर्ष किया और उनके राज्य पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। इसके साथ ही मालदीव और पीगू के क्षेत्र पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- यह प्रथम शासक था, जिसमें साम्राज्य विस्तार के क्रम में बंगाल के क्षेत्र को भी अपने नियंत्रण में कर लिया।
- गंगा को पार करने एवं इस क्षेत्र में विजयय हासिल करने के उपलक्ष्य में **गंगइकोण्डचोल** की उपाधि धारण की।
- इसने कावेरी नदी के तट पर गंगइकोण्ड चोलपुरम् नामक नगर का निर्माण कराया और इसी स्थल पर वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।
- इसने सिंचाई व्यवस्था हेतु चोलगंगम् नामक नहर (तड़ाग) का निर्माण कराया।
- **राजाधिराज–I (1044-1052) :** इसके समय में कोप्पम का युद्ध सम्पन्न हुआ। इसी युद्ध में घायल होने के कारण युद्ध भूमि में ही वह वीर गति को प्राप्त हुआ।
- **अधिराजेन्द्र (1070) :** यह विजयालय द्वारा स्थापित चोल वंश का अंतिम शासक था। यह आमलोगों के बीच लोकप्रिय नहीं था। जनसमूह के द्वारा इसकी हत्या कर दी गयी।
- **कुलोतुंग–I (1070-1120) :** अधिराजेन्द्र की हत्या के बाद गद्दी का संकट सुलझाने के लिए कुलोतुंग प्रथम को शासक बनाया गया। यहाँ से चोल–चालुक्य वंश की शुरूआत हुई।
- यह प्रथम शासक था, जिसने चीन के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने का सफल प्रयास किया और 72 व्यापारियों का दल चीन भज दिया।
- अभिलेखों में इस शासक को शुंगमितवर्त (करो को हटाने वाला) कहा गया है।
- **राजेन्द्र–III (1250-1279)-**यह अंतिम शासक था, जिसको पाण्ड्य वंश के शासक कुलशेखक ने गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत किया और इन लोगों के क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया।

विविध तथ्य

- प्रशासन के अंतर्गत राजा सर्वोच्च व्यक्ति होता था, जो अपनी सभा (नलवै) में प्रतिदिन बैठक करता था।
- सम्राज्य को मण्डलम में मण्डलम् को कोट्टम में, कोट्टम को नाडू में, नाडू को कुर्रम और कुर्रम को उर में विभाजित किया गया था।
- उर सर्वसाधारण लोगों की सभा थी।
- चोल वंश को स्थानी स्वशासन के लिए याद किया जाता है। इसके अंतर्गत सभा की बैठक तालाब के किनारे, वृक्ष के नीचे सम्पन्न होता था। सभा के सदस्यों का चुनाव लौटरी पद्धति से किया जाता था।
- इस समय वलंगै (दायाँ पक्ष), इडंगै (बायाँ पक्ष) समाज के दो महत्वपूर्ण अंग थे। जिसमें वलंगै के पास विशष अधिकार होता था। इंडगै राजा का विरोध करता था।
- चोल वंश अपने नौसेना के लिए विख्यात थे।
- इस समय शैव धर्म का अधिक विकास हुआ था।
- कला के क्षेत्र में द्रविड़ कला का सबसे अधिक विकास दिखलाई पड़ता है
- चोल काल के समय धातु (कांस्य) द्वारा निर्मित नटराज की मूर्ति सर्वाधिक विख्यात है, जो चतुर्भूज है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि दक्षिण भारत के इतिहास में सातवाहनों और चोल वंश के शासकों ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

- कम्बन ने तमिल भाषा में रामायण लिखा था।